साहित्यकार उमाशंकर

सम्पादक

प्रो० सत्यधन मिश्र, एम० ए०

प्रधान मन्त्री

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा

वैद्यनाथ-देवघर (बिहार)

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा-प्रचारिणीसभा,

वैद्यनाथ-देवघर

(बिहार)

प्रकाशक

प्रो० सत्यधन मिश्र, एम ए०
प्रधान मन्त्री
अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा-प्रचारिणी सभा,
वैद्यनाथ-देवघर, बिहार

प्रथम संस्करण, १९६७ ई०
मूल्य-दो रुपये मात्र ।

मुद्रक
अलका प्रिन्टिंग वर्क्स, दुमका
(बिहार)

SAHITYAKAR UMASHANKAR—
EDITOR: PROF. SATYADHAN MISHRA

Price Rs. 2/—only

शुभ कामना

भारत-भारती की मौन साधंना करते हुए,

राष्ट्रभारती के चरणों में नित नवीन सृजन पुष्प से

अभ्यर्थना करने वाले साहित्य-निर्माता,

जिनकी भागीरथ -साधना ने राष्ट्रभाषा के कोष में

लगभग साठ ग्रंथ समर्पित करके तथा

हिन्दी-पत्र पत्रिकाओं में अबतक सहस्राधिक

निबन्ध लिखकर अपनी प्रतिभा एवं क्षमता से

हिन्दी-संसार को आश्चर्य में डाल दिया है,

उसी साहित्योपासक एवं तपस्वी

आचार्य श्री उमाशंकर जी

को

इनके सुदीर्घ एवं मंगलमय जीवन की पुण्य कामना करते हुए

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा-प्रचारिणी

सभा

भगवती भारती से प्रार्थना करती है कि

राष्ट्रभाषा हिन्दी की श्री वृद्धि करने की

दिशा में वे इन्हें प्रेरणा देती रहें ।

भूमिका

किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में विदेशी भाषा की स्वीकृति आत्म हत्या हुआ करती है। संपन्न एवं स्वाभिमानी राष्ट्र किसी भी स्थिति में विदेशी भाषा को सर पर लादना आत्मघात समझता है। भारत का कुण्ठा-ग्रस्त आंशिक शिक्षित समाज बड़े गौरव के साथ अंग्रेजी से चिपका हुआ है। वह शायद यह नहीं जानता कि अंग्रेजी के साथ उसकी अराष्ट्रीय श्लिष्टता वर्त्तमान एवं भावी सन्तति के लिए कितना बड़ा अभिशाप है!

हिन्दी के भाग्य-विधायक अहिन्दी-भाषी विद्वान रहे हैं। उन्होंने संकीर्णता की मनोवृत्ति न रखकर सतत राष्ट्रीयता एवं विश्व-बंधुत्व का स्वप्न देखा था। इसी उद्देश्य से सबने एक स्वर से हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया। भारत माता ने राष्ट्रीय एकता की कड़ी के रूप में हिन्दी को अंगीकार किया। दुर्भाग्यवश, कुछ स्वार्थ लोलुप तथाकथित नेताओं ने निश्छल एवं स्थिर जनमानस को सशंकित और आन्दोलित कर गलत रास्ते पर चलने को प्रेरित किया। फलत: सम्पूर्ण राष्ट्र में एक अशान्ति फैली। किन्तु, अब दक्षिण वाले भाई भी, भविष्य को अच्छी तरह से देख रहे हैं। उन्हें सामाजिक एवं सांस्कृतिक विनिमय के रूप में हिन्दी, एक सरल माध्यम, अनुभूत हो रही है अब वे राजनीतिक बहकावे तथा राष्ट्र विरोधी तत्त्वों से सावधान होते जा रहे हैं।

सम्प्रति राष्ट्रभाषा हिन्दी के अभ्युत्थान के लिए हमारे सामने अनेक प्रश्न हैं, अनेक समस्याएँ हैं। उनके समाधान के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा की स्थापना बाबा वैद्यनाथ की पावन नगरी देवघर स्थित श्री गाणेशकला मन्दिर में विगती विजयादशमी के पावन मुहूर्त्त में की गयी जिसका उद्घाटन सुप्रसिद्ध भारतीय विद्वान एवं केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सुयोग्य निदेशक प्रोफेसर श्री ए० चन्द्रहासन ने किया। समारोह की अध्यक्षता सुपरिचित हिन्दी-सेवी तथा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मन्त्री श्री भालचन्द्र आप्टे ने की। अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा की स्थापना के अवसर पर अहिन्दी भाषी विद्वानों द्वारा उद्घाटन एवं सभापतित्व किया जाना निश्चय ही एक गौरव की बात है। उक्त अवसर पर वर्त्तमान सत्र के लिए सर्व सम्मति से प्रो० ए० चन्द्रहासन संरक्षक, हिन्दी-आन्दोलन के भगीरथ डॉक्टर लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु' अध्यक्ष तथा इन पंक्तियों के लेखक प्रधान मन्त्री निर्वाचित हुए।

अस्तु, सभा अपनी स्थापना के अनन्तर इतनी सक्रिय रही है कि लोगों को थोड़ा आश्चर्य भी होता है। विद्वानों को सम्मान करना, शोध सम्बन्धी प्रकाशन करना, हिन्दी के विकास के लिए अपेक्षित योजनाओं को कार्यान्वित करना—सभा के प्रमुख उद्देश्य हैं। समग्र हिन्दी—जगत् में कलम के धनी एवं धुनी व्यक्ति के रूप में सुपरिचित श्री उमाशंकर जी राष्ट्र भारती के ऐसे सपूत हैं, जो सोते हैं तो अनवरत हिन्दी के सुनहले स्वप्न देखा करते हैं और जगते हैं तो सतत

हिन्दी सेवा में लगे रहते हैं। ऐसे जाग्रत साहित्यकार को पाकर हिन्दी कितनी गौरवान्वित है, उसी अनुभूति को आप इस संकलन में प्राप्त करेंगे राष्ट्रभाषा–आन्दोलन के एक सिपाही के रूप में उमाशंकर जी ने उत्तर प्रदेश में छात्र-जीवन–काल में भाग लिया —और तब से एक मौन सेवक के रूप में ये हिन्दी की सेवा कर रहे हैं हिन्दुस्तानी आन्दोलन-काल में आपकी जो सेवाएं वे चिरस्मरणीय रहेंगी।

श्री उमाशंकर जी कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा–सम्पन्न साहित्यकार है। शताधिक पत्र –पत्रिकाओं में प्रकाशित निबन्ध इनकी शोधवृत्ति का परिचय देते हैं। सर्वदा एवं सर्वथा उपेक्षित साहित्यकारों, राष्ट्रनिर्माताओं एवं ऐतिहासिक तथ्यों के उद्घाटन एवं अनुसन्धान इनकी मौलिक सूझबूझ के परिचायक हैं। विश्वविद्यालयों में पिटे–पिटाये मार्ग शोध की परीपाटी चल पड़ी है। अतः ऐसा देखा जाता है कि तथाकथित 'डाक्टर' (शोधकर्त्ता) दस पुस्तकें पढ़कर ग्यारहवीं पुस्तक तैयार कर लेते हैं और हमारे विश्वविद्यालय उदारता पूर्वक 'डाक्टरेट' की 'उपाधि' देकर से उन्हें विभूषित कर डालते है। श्री उमाशंकर जी इस बिषय में अपने दिवंगत मित्र एवं आलोचक आचार्य नलिन बिलोचन शर्मा के विचारों से सहमत रहकर मौलिक विषयों पर अनुसन्धान-कार्य करते रहे हैं! भारतीय विश्वविद्यालयों को भी ऐसी साहित्यिक विभूतियों से मार्ग–दर्शन प्राप्त करना चाहिए।

ऐसे साहित्य-मनीषी, साधक एवं सेवक से राष्ट्रभारती का भण्डार भरता जा रहा है। मैं तो ऐसा समझता हूँ कि सम्पूर्ण हिन्दी-संसार में नाना विषयक अधिकाधिक ग्रंथों की साधिकार रचना करने वाले

विद्वानों की पहली पंक्ति में उमाशंकर जी का नाम गौरव के साथ लिया जा सकता है। ऐसे व्यक्तित्वको भारत-सरकार पद्मभूषण' की उपाधि प्रदान कर स्वत: गौरवान्वित होगी। भारतीय विश्वविद्यालयों को भी ऐसे विद्वानों के सम्मान का गौरव प्राप्त करना चाहिए। अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा-प्रचारिणी सभा श्री उमाशंकर जी को 'तण्डुल-कण' के रूप में "आचार्य" की उपाधि देकर गौरव का अनुभव करती है।

हमें विश्वास है कि आचार्य श्री उमाशंकर जी के व्यक्तित्व का आलोक, अन्धकार में भटकने वाले हजारों साहित्य सेवियों एवं लेखकों का मार्ग-दर्शन करेगा। विधाता राष्ट्रभाषा के इस रत्न को चिरायु एवं स्वस्थ रखें-यही हमारी कामना है। इत्यलम्

सत्यधन्न मिश्र
प्रधानमंत्री
अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा
वैद्यनाथ देवघर (बिहार)
ए
प्राचार्य, हिन्दी महाविद्यालय, दुमका (बिहार)
मन्त्री, महेश नारायण-साहित्य-शोध संस्थान,
दुमका (बिहार)

संकेत

जयति उमाशंकर

—⟡—

कविवर रामगोपाल 'रुद्र'

जगी रहे हिन्दी बिहार में,
यती ! रहे तुम रत प्रचार में।
तिमिर मिटाते रहे सुलग कर;
उठे, हवन के सौरभ से भर।

मार–रूप हिन्दी के द्रोही ;
शंकर तुम, राष्ट्रियता-छोही।
कमल तुम्हारी कला न भूले;
रस–रुचि जन-गन-मन तूले।

—※—

साहित्यिकों के प्रेरणास्रोत: उमाशंकर

पं० जनार्दन मिश्र 'परमेश'

अध्यक्ष संताल परगना जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

चित्रकार चित्र की त्रुटियों का पता चित्र को दूर से देख कर लगता है; परन्तु मनुष्य के वास्तविक स्वरूप का परिचय निकट सम्पर्क में रह कर ही किया जा सकता है। पत्रों में लेखकों को पढ़ कर एक लेखक के रूप में मैं श्री उमाशंकर जी के केवल नाम से परिचित था। परन्तु निकट से इनके व्यक्तित्व को जानने का अवसर नहीं मिला था। यह अवसर मुझे इसबार तुलसी जयन्ती क्रम में दुमका आने पर प्राप्त हुआ। मैने पाया, श्री उमाशंकर जी अद्भूत जीव हैं। इनकी चमत्कृत प्रतिभा तथा कर्ममय व्यक्तित्व पर मैं मुग्ध-मौन हो जाता हूँ। इनके जीवन का कर्म-ममत्व साधन-सम्पन्न है। इसलिए इनके व्यक्तित्व को मानवीय तत्वों से निर्मित समझना चाहिए। सरल-सौम्य मुखाकृति, जिस पर कर्मठता, लगन शीलता तथा चिन्तन —रत की तेजोमयी चेष्टाएँ सतत प्रस्फुटित हुई रहती हैं। भारत और भारत-भारती को जल्दी से जल्दी आसमान पर चमकता हुआ देखने की आकुल आकांक्षा इनके अन्त: करण को जैसे सदैव उद्वेलित किये रहती है। भारत का बच्चा-बच्चा अप्रतिहत विकास को प्राप्त कर भविष्य में विश्व वन्द्य गुरु के रूप में प्रस्तुत हो सके, तरुणों की टोली में अदम्य उत्साह एवं कर्मण्यता की मादक भावनाएँ अविराम गति से लहराती रहें और महिला समाज की अन्तर्वृत्तियों में सीता सावित्री, दुर्गावती एवं लक्ष्मीवाई के जीवनादर्श पुञ्जी भूत अभिमान के रूप में सजीव

और मूर्त्त बने रहें, ऐसे ही विचार-तत्वों से श्रीउमाशंकर जी के आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है। इनके जीवन को जागरण तथा उत्थान का वह मानसर कहना चाहिए जिससे प्रेरणा के अजस्र स्रोत प्रवाहित होते रहते हैं। यद्यपि राजकीय-सेवा जीविका का मुख्य आधार होने के कारण इनकी व्यस्तता बढ़ी रहती; फिर भी आश्चर्य है कि ये इतने वैविध्यपूर्ण विषयों का अध्ययन, चिन्तन, कल्पना और लेखन कब और कैसे कर लेते हैं।

भारत और भारत से बाहर के भी प्रख्यात पत्रों में इनके हिन्दी-अंग्रेजी के लेख बराबर प्रकाशित होते रहते, साथ ही छोटी बड़ी पुस्तकों की रचना भी नियमतः चलती रहती है। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान वेदव्यास और द्रुत-लिपिक गणेश, दोनों संयुक्त आत्मा का प्रतिविम्ब इनकी प्राणशक्ति में उतर आया हो। इनकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में कार्य रत पाई जाती है। नाटक, निबन्ध आलोचना, जीवनी, कहानी और संस्मरण आदि, साहित्य की विविध दिशाओं में तो इनकी समर्थ लेखनी अबाध गति से चलती ही रहती, इसके सिवा, साहित्यिक ऐतिहासिक अनुसन्धान की कक्षा में भी इन्होंने राष्ट्र को कई नवीन उपलब्धियां अर्पित की हैं; जिनसे उन क्षेत्रों में एक क्रांतिकारी हलचल सी पैदा हो गई है। इनकी अनुसन्धायक प्रवृत्ति की पैनी दृष्टि इतिहास के अन्धेरे अतल में पड़ी साहित्य विभूतियों को ढूँढ ढूँढ-कर सामने लाती है; ऐसी अमर विभूतियों में इन्होंने बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री, श्री महेशनारायण, श्री राधालाल माथुर तथा हलधर दास आदि अनेक साहित्यिक प्रतिभाओं को विस्मृति के गर्त्त से उद्धार किया है। इस प्रकार इनके नवीन शोधों ने इतिहास के पृष्ठों में आमूल परिवर्तन लाकर उसकी अपूर्णता को दूर कर दिया है।

"शैली ही व्यक्तित्व है" यह लोकोक्ति श्री उमाशंकर जी के सम्बन्ध में जितना "फिट" उतरता है, वह प्राय: बहुत कम व्यक्तियों में पाया जा सकेगा। यह गुण न केवल किसी की कृति को समुज्ज्वल बनाता, वरन् कृति के व्यक्तित्व को भी उठा उठा कर महानता की दिशा में अग्रसारित करता है। मेरे इस विचार को मनीषी साहित्यकार पण्डित श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जी के इन शब्दों का समर्थन मिलता है कि "हम बहुधा भूल जाते हैं कि सादगी में सुन्दरता है और ओज भी है"। श्री उमाशंकर जी की शैली इसी सादगी का समृद्ध उदाहरण हैं, जिसमें सौंदर्य है और ओज़ भी। इनकी वाह्याकृति जैसी आडम्बर-शून्य, किन्तु प्रभावपूर्ण है, अन्तर्वृत्तियाँ भी वैसी ही, सरल, पवित्र किन्तु तेजोमय आशाओं की उद्भावना, एवं तदनुरूप ही इनकी लेखनी प्रवाहपूर्ण सरल किन्तु आकर्षक शैली को जन्म देती है। लगता है, उसके सामने विचारों का इतना बहुमूल्य आकार खड़ा हो जाता कि अभिव्यञ्जना को समलंकृत करने की उसे फुरसत ही नहीं मिलती।

यह एक रहस्य-पूर्ण आध्यात्मिक तथ्य है कि उसी कलाकर की कृति स्थायित्व की अधिकारिणी होती है जिसकी आत्मा को अभिव्यक्त और आचरण में साधनामय एकरूपता का संयोग प्राप्त हुआ रहता। श्री उमाशंकर जी की एक बड़ी अर्घ्य विशेषता है कि इनके जीवन में व्यक्तित्व तथा कृतित्व का वह मैत्रीपूर्ण समन्वय प्राप्त होता है जो एक अमर साहित्यकार के लिये अनिवार्यत: अपेक्षित होता है और जिसका अतीत तथा वर्तमान के बहुतेरे लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकारों में पाया जाना कठिन हुआ रहता।

राजकीय सेवान्तर्गत पदाधिकारी के पद पर, जहां स्थानान्तरण का योग इनके साथ लगा ही रहता है, प्रतिष्ठित रह कर भी, नए-नए स्थानों में साहित्यिक वातावरण प्रस्तुत करने में ये ऐसे सिद्धहस्त हैं कि इनकी सशक्त निर्माण-प्रवृत्ति अब तक सैंकड़ों साहित्यिक गोष्ठियाँ बना चुकी है। सिर्फ एक मास की अल्प अवधि में ही, सम्पर्क में आकर मैंने इनके अन्दर "निर्माण की ओर" अबाध गति लेती हुई जो आकांक्षाओं की उर्मियां उठती पाईं तो लगा कि ये मनुष्य नहीं; किन्तु दैवी शक्ति से से सम्पन्न अतिमानवी आत्मा हैं। दुमका जैसे नगण्य स्थान में भी, इन्होंने केवल एक-दो मास के भीतर वह जीवन और जागृति ला दी है कि यहां का वातावरण चैतन्य हो उठा हैं। मैंने प्रत्यक्ष देखा कि "तुलसी जयन्ती" के सिलसिले में पन्द्रह दिनों तक लगातार किसी-न-किसी महापुरुष की नित्य नई जयन्तियां मनाई जाती रहीं। कवि-सम्मेलन तथा साहित्य-समारोह का तांता बन्ध गया। बाहर से आए हुए बिशिष्ट विद्वानों के भाषण होते रहे, फलतः स्थानीय साहित्यिक, विभागीय पदाधिकारियों तथा सामान्य जन-वर्ग में नव-जीवन, जागरण तथा साहित्यिक प्रेयता के प्रति उत्साह-पूर्ण आकर्षण उद्‌बुद्ध हो उठा।

मैंने एक दिन इनकी आश्चर्य-जनक कार्य-क्षमता पर मुग्ध होकर आवेश में कह दिया कि "आप मनुष्य नहीं राक्षस हैं" इस पर श्री उमा-शंकर जी से बड़े ही कोमल स्वर में उत्तर मिला......"मुझे राक्षस न कहें, कृष्ण कहिए; जो जन्म से ही कर्मयोगी थे।" मैं संकोच में पड़ गया और तब से मैं इन्हें कर्मयोगी कृष्ण की कर्मण्यता का उत्तराधिकारी मानता हूँ।

श्री उमाशंकर जी के साथ कर्मयोगी, अनुसन्धायक, समाज-निर्माता, साहित्यकार और साहित्यिकों के प्रेरणास्रोत के रूप में हिन्दी-संसार को सौभाग्य से प्राप्त है। भारत और भारती के भूले हुए श्री महेशनारायण जैसे अनेक अमूल्य रत्नों को विस्मृति के गर्भ से निकाल कर सर्व-समक्ष करना श्री उमाशंकर जी की अमुपम राष्ट्र-सेवा का ज्वलन्त उदाहरण है। कदाचित सरकार राजकीय सेवा के वर्तमान विभाग से इन्हें मुक्त कर किसी साहित्यिक शोध-संस्थान में काम करने का अवसर दे, तो इस व्यवस्था से राष्ट्र का बहुत बड़ा उपकार सावित हो सकता है। श्री उमाशंकर जी के सत्प्रयास से दुमका में "श्रीमहेशनारायण साहित्य-शोध-संस्थान" की स्थापना भी हो चुकी है। मैं स्थानीय सभी वर्ग के सम्भ्रांत व्यक्तियों से विश्वास के साथ अनुरोध और आशा करूंगा कि इस नवजात संस्थान को सभी प्रकार की सहायता देकर सशक्त एवं कार्यक्षम बनाएँ तथा इसकी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को आदर दें।

मैं, श्री उमाशंकर जी की साहित्य-साधना के रूप में अन्यतम राष्ट्र-सेवा से अत्यन्त प्रभावित हूँ और परमात्मा से इनके दीर्घ जीवन की अभिकामना करता हूँ।

["मैं साहित्यकार नहीं, साहित्य मेरी जीविका का साधन नहीं। जो मेरी जीविका का साधन है, उसके प्रतिकूल साहित्य पड़ता है। फिर भी मैं एक साहित्य सेवी हूँ और साहित्यकारों का पुराना सेवक हूँ। लगभग २५-३० वर्षों से साहित्य सेवा करता रहा हूँ। भगवान मुझे इतना बल दें कि मैं अपने अन्तिम दिनों तक साहित्य-सेवा करता रहूँ, यही मेरी चाह है।]

--उमाशंकर

आचार्य शिवपूजन सहाय की परम्परा के उत्तराधिकारी : श्रीउमाशंकर

—*नन्दकिशोर तिवारी*

(भूतपूर्व सम्पादक 'चाँद', 'माधुरी', 'सुधा', भविष्य, 'महारथी', 'मतवाला', 'कर्मयोगी' बिहार)

बिहार साहित्य की दृष्टि से सदैव उवर रहा है और यहां साहित्यमनीषी, साधक और साहित्य अनुसंधायक पैदा होते रहे हैं। यहां वाणभट्ट जैसा अदम्य प्रतिभाशाली हुआ तो विद्यापति जैसा कोमलकान्त पदावली का रचयिता भी प्रादुर्भूत हुआ और स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय की तरह अथक साधक भी। यह क्रम अटूट रहा है और आज भी साहित्य-साधक राजनीतिक तूफानों के बीच, अपनी साधना में लगे हुए हैं। इन्हीं साधकों में श्री उमाशंकर जी का अन्यतम स्थान है।

विगत पच्चीस वर्षों से जो अनवरत साहित्य-सेवा में लगा हुआ हो, ऐसा व्यक्ति हिन्दी जगत में गिना-चुना ही है। श्रीउमाशंकर जी की साहित्य-सेवा का रूप-वैविध्य अध्ययन की वस्तु है। वे विगत बीस वर्षो से बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सदस्य रहे हैं और उसके विविध कार्य-क्रमों में उनका सक्रिय सहयोग रहा है। हिन्दी-हिन्दुस्तानी के द्वन्द्व के समय श्री उमाशंकर जी हिन्दी के पक्ष में एक अथक प्रचारक के रूप में दिखाई पड़ते थे। साहित्य-सम्मेलन के कार्यों में सहयोग देते रहने के अतिरिक्त उन्होंने कई साहित्यिक संस्थाओं की स्पापना की है और उन्हें अवतक शक्तिशाली बनाये रखा है जो अपने ढंग से हिन्दी की स्तुत्य सेवा करती रही है। प्रेमचन्द परिषद् की स्थापना करके उसे अबतक जीवित

रखना और उसके माध्यम से साहित्य-सेवा करते रहना, यह सिद्ध करता है कि उमाशंकर जी का साहित्यिक व्यक्तित्व गत्यात्मक है, गतिशील नदी की तरह जो किसी विन्दु पर रुकती नहीं। दूसरी साहित्यिक संस्था, जिसकी स्थापना श्री उमाशंकर जी ने की है, वह बिहार साहित्यकार संघ के नाम से अभिहित है। इसके दो विराट अधिवेशन जो झरिया और जमशेदपुर में हुए थे, इस तत्व को स्पष्ट कर देते हैं कि उमाशंकर जी के व्यक्तित्व में शक्ति है, अनन्त प्रेरणा है जो सीमाबन्दी नहीं मानता। स्वर्गीय श्री अयोध्या प्रसाद जी खत्री तथा स्वर्गीय श्रीमहेश नारायण की काल-कन्दरा में सोई स्मृतियों को जीवित करने और उनकी साहित्य-मर्यादा को साहित्य-जगत् के समक्ष उपस्थित करने का एकान्त श्रेय उमाशंकर जी को ही है। इस प्रकार हिन्दी की सेवा ये अनवरत करते आ रहे हैं।

मनुष्य-व्यक्तित्व का, सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन और विश्लेषण किया जाय, तो उसके कई अंग दिखाई पड़ेंगे एक अंग संघर्षपूर्ण दिखेगा, दूसरा साधनापूर्ण, और तीसरा आत्मचिन्तनापूर्ण जिनकी लहरों के स्पर्श से शक्ति, स्फूर्ति उसकी मनीषा कई प्रेरणा, नई स्थापनाओं को मूर्त कर अपनी साधना को साकार करती है। ऐसा लगता है कि उमाशंकर जी के व्यक्तित्व के कई अंग विकसित हैं।

सन् १९३३ से ही उमाशंकर जी ने लिखना आरम्भ किया और हिन्दी जगत के प्रमुख पत्रों में उनके साहित्यिक निबंध निकलते रहे। विशाल भारत, सरस्वती, माधुरी, सुधा, कर्मयोगी, आरती आदि विख्यात साहित्यिक पत्रों ने उनके निबंधों को आदरणीय स्थान दिया। उनकी यह साधना जो बीस वर्ष पूर्व आरम्भ हुई, आजतक नदी की अबाध धारा की

तरह चल रही है। इधर दो तीन वर्षों से शायद ही कोई ऐसा विख्यात और अविख्यात हिन्दी मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र हो, जिसमें लेख नही दिखाई पड़ते। उन्होंने अनुसंधायक साहित्य प्रवृत्ति पाई है। यही कारण है कि उनकी गहरी दृष्टि इतिहास के अन्धकार में पड़े साहित्यिक व्यक्तित्वों की खोज करती है और उनसे सम्बन्धित तथ्यों का निरूपण। अयोध्या प्रसाद खत्री, महेश नारायण, श्री राधालाल माथुर, हलधर दास आदि लगभग सौ साहित्यिकों को विस्मृति की परतों के नीचे से निकालकर साहित्यिक जगत् के समक्ष रखना, एक अमूल्य ऐतिहासिक कार्य है। इससे हिन्दी साहित्य के इतिहास को पूर्णता मिलती है।

उमाशंकर जी की शैली में उनके संघर्षशील व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट है। कार्य संकुल जीवन के आँधी भरे क्षणों में उन्हें इतना प्रर्याप्त अवकाश नहीं है कि गढ़-गढ़कर वाक्यविन्यास रचें और कवित्वमयी शैली का प्रदर्शन करें। उनके छोटे-छोटे वाक्य शैली को प्रवाह देते हैं और पाठक को अपनी ओर खींच लेते हैं तथ्य प्रतिपादन उनकी शैली का मुख्य ध्येय है, काव्यात्मक तत्व देना नहीं। उनके निबन्ध ठोस तथ्यों से भरे रहते हैं। साहित्यिक निबंध, संस्मरण लिखने की जो स्वस्थ परम्परा स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय ने चलाई, उस परम्परा के उचित उत्तराधिकारी श्री उमाशंकर हैं और आशा है, इनकी लेखनी विरामहीन चलती रहेगी।

व्यक्तित्व आते है, और चले जाते हैं, युग आता है, मिट जाता है, पर समय-पथ पर मनीषियों के जो चरण-चिन्ह पड़ते हैं वे रह जाते हैं, ताकि आनेवाली पीढ़ियाँ उनसे प्रेरणा ग्रहण कर सकें। मेरा

विश्वास है कि अपनी अखण्ड साधना के बल पर श्री उमाशंकर जी अब-तक के हिन्दी के उस अछूते अंग की पूर्त्ति कर सकेंगे, जिसकी ओर आजतक हिन्दी के मनीषियों का ध्यान आकर्षित नहीं हो सका है और उनकी यह साधना हिन्दी की आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेगी। भगवान इनकी इस अथक साधना को फलवती बनायें, मेरा उन्हें यही आशीर्वाद है।

[हमारे हिन्दी-साहित्य के जो इतिहास लिखे गये हैं, उसमें गौण साहित्यकारों के सम्बन्ध में उल्लेख बहुत कम ही मिलता है। मिश्र बन्धुओं तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का जो इतिहास लिखा वही बाद के इतिहासकारों का भी आधार रहा है। यही कारण है; जो साहित्यकार आचार्य शुक्ल और मिश्र बन्धुओं से छूट गये, वे अबतक छूटे ही हुए हैं।]

—*उमाशंकर*

भारतेन्दु की कोटि के साहित्यकार : उमाशंकर

श्री बुद्धिनाथ झा 'कैरव'
अध्यक्ष, हिन्दी महाविद्यालय, दुमका ।

पुरानी जनश्रुति है कि महर्षि व्यास ने पुराणों और महाभारत को जब अक्षरों में अङ्कित करना चाहा तो प्रश्न उपस्थित हो गया कि उस विशाल ज्ञानराशि को लिपिबद्ध करे तो कौन ? उस समय गणेशजी का आह्वान किया गया और उन्होंने व्यासदेव के सम्पूर्ण वाङ्मय को कलम पर उतार दिया । इसी के चलते गणेशजी सर्वप्रथम आशुलिपिक माने जाते हैं । व्यासदेव अपने से लिख सकने में असमर्थता प्रतीत कर रहे थे और गणेशजी केवल लिख सकते थे-उनकी अपनी ज्ञाननिधि नहीं थी । दोनों का सहयोग हुआ और दोनों के सम्मिलित प्रयास से संसार को ज्ञान का भण्डार प्राप्त हुआ । आज न व्यासदेव हैं और न गणेश, किन्तु दोनों की प्रतिभा और क्रियाशक्ति उमाशंकर जी में सिमट कर साथ-साथ खेल रही है । उमाशंकर जी जितना जानते हैं उससे अधिक वे लिखते हैं और जितना लिखते हैं उससे वे अधिक जानते हैं । विलक्षण प्रतिभा और क्रियाशक्ति का मूर्त्त रूप एक साधारण व्यक्तित्व में इस प्रकार दृष्टिगोचर हो रहा है कि उनके सामान्य और नित्यजीवन को देख-सुनकर किसी को विश्वास नहीं होता है । कि उमाशंकर जी यथार्थ में वही हैं, जो उनके कृतित्व में स्पष्ट होता है । व्यक्तित्व की एकरूपता अत्यधिक विरले होती है सुकरात और गांधी से लेकर विनोबा और नागर्जुन तक उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । रवीन्द्र और जवाहर अपवाद स्वरूप ही माने जायेंगे । उमाशंकर जी को देखने का

जिस किसी को अवसर प्राप्त हुआ है वह यही देखता है कि औघड़-साधु-सा अटपट और बेडौलवेश, अस्पष्ट और लटपटी बोली, किसान और मजदूर जैसी पोशाक, पद और प्रतिष्ठा के विपरीत रहन-सहन, मस्तिष्क और हाथ की विसंगति, आकाश और जीवन को जुटाने वाले, कल्पना के धागे को खोलने और लपेटने में व्यस्त कार्यव्यापार उमाशंकरजी के नित्यजीवन का सामान्य रूप है जो लोकदृष्टि से परे अपने अभीष्ट से सान्निध्य प्राप्त कर रहा है। एक साधक को जैसा होना चाहिए। साधना के पथ पर वह आगे जा रहा है— न थकावट है न परिक्लांति, न निराशा है न निरुद्यम, न बिलकुल सन्तोष है न अत्यधिक असन्तोष, न स्पृहा है न घृणा, और न प्रतिस्पर्धा, न प्रतियोगिता। वह जा रहा है; जा रहा है; कहाँ अन्त होगा पता नहीं। एक पागल जैसा राख और मिट्टी के ढूह से खोद-खोद कर कुछ न कुछ निकालते रहता है और लोग देखकर आश्चर्यित होते हैं। जब उसके वैसे व्यापार में रह-रह कर ऐसे रत्न निकल आते हैं जिनकी सत्यता पर विश्वास से अधिक विस्मय होता है। उमाशंकर जी की साधना की यही विशेषता है कि वह विस्मृत मृतों को ही जीवित नहीं कर देता बल्कि जीवित मृतों को भी जीवित कर देता है। बाबू महेशनारायण, मुन्शी राधालाल माथुर, बाबू गोविन्द चरण, बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री तथा अनेक अन्य साहित्यिक महापुरुषों को साहित्य के इतिहास में यथास्थान बिठाकर एक चकोचौंध उन्होंने उपस्थित कर दिया है।

केवल छयालीस वर्ष की आयु में उमाशंकर जी ने लगभग साठ ग्रन्थ लिखे हैं। साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति तथा अन्य विषयों पर इतने कम समय में इतना अधिक लिखना केवल भारतेन्दु के लिए ही सम्भव कहा जाता था। आज उमाशंकर जी उसी कोटी में आ गये हैं। मैं यह नहीं कहूँगा कि जितने ग्रन्थ उन्होंने लिखे हैं वे सब के सब

उच्चकोटि के हैं और साहित्यिक मान्यता में वे अग्रगण्य हैं, फिर भी इतना तो निस्संकोच कहा जायगा कि जिन विषयों और व्यक्तियों को इन्होंने प्रकाश में लाया है उनको लोग भूले हुए थे और उनके जीवन का मूल्यांकन हुआ ही नहीं था। आजतक कौन जानता था और कौन मानता था कि खड़ी बोली में कविता करना बाबू महेशनारायण ने उस समय शुरू किया था जब भारतेन्दु ने हार मानकर लिख दिया था कि खड़ी बोलो में कविता लिखी नहीं जा सकती है। यह भी बहुत कम लोग जानते थे कि बाबू-महेशनारायण संताल परगना (राजमहल-बभनगामा) के रहने वाले थे और संताल परगना के उस महापुरुष ने ही बिहार को बिहार बनाने का सर्वाधिक और सर्व प्रथम प्रयास किया था। संताल परगना के मुख्य नगर दुमका में महेशनारायण शोध संस्थान की स्थापना उमाशंकर जी के जीवन का एक ऐतिहासिक कार्य है।

एक सरकारी पदाधिकारी रहकर साहित्यिक कार्य करने की जो प्रवृत्ति उमाशंकर जी में देखी जाती है उसका एक अंश भी साहित्य साधकों में आ जाय तो साहित्य का उद्धार हो जाए। मैं श्रमाशंकर जी के दीर्घजीवन की कामना करता हूँ। ईश्वर उन्हें शतायु करें।

[मैं मानता हूँ, साहित्य बहुतों का सहारा पाकर पनपता है, विकसित होता है। साहित्य के इतिहास में प्रमुख व्यक्तियों से गौण व्यक्तियों का स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं होता है पर खेद की बात यह है कि हमने उन साहित्यकारों के प्रति अबतक उपेक्षा की ही नीति बरती है। इस नीति के फलस्वरूप हमारे बहुत से साहित्यकार, समय के प्रवाह में, आज विस्मृत हो गये हैं।]

—उमाशंकर

साहित्यकार उद्धारक : श्री उमाशंकर

श्री शम्भुनाथ वलियासे 'मुकुल'

"मुझे इन प्रेतात्माओं से बचाओ, वर्षों से वे मेरा पीछा करती आ रही हैं—परेशान करती रही हैं, क्योंकि न इन्हें पिंडदान दिया गया है। और न पितरमिलौनी ही की गई। ये तड़प रही हैं, बिलख रही हैं और बार-बार मुझसे कह रही हैं कि तुम कर्त्तव्यच्युत क्यों हो रहे हो? लोक-परलोक के सभी हँस रहे हैं तुम सबकी नादानी और मदांधता को देखकर अब भी तो चेतो और कर्त्तव्य का पालन करो क्योंकि "पुत्र पिंड-प्रयोजनम्"। पर आश्चर्य है, इन प्रेतात्माओं की तड़पन भरी पुकार सुनकर भी सभी अद्यावधि अनसुनी करते रहे और अब वे पीछा करने लगीं मेरा। लगता है अब या तो पूजा देकर उन्हें कहीं किसी वेदी पर प्रतिष्ठित करना पड़ेगा नहीं तो ये इतना अधिक परेशान करने लगेंगी कि मैं ही ज्ञानहारा या पागल हो जाउँगा। क्योकि अब ये छाया से भी अधिक साथ-साथ चलने लगी है अपनी मांगें जोर-जोर से दुहराने लगी है, कान की झिल्लियाँ फट जाने की स्थिति में आ गयी हैं।"

ये उद्‌गार बिहार के उस मूक किंतु अमर साधक के हैं जिन्हें संसार कहानीकार, नाटकार, निबंधकार, आलोचक, शब्दचित्रकार और जीवन-चरित्र चित्रकार श्री उमाशंकर के नाम से जानता-पहचानता रहा है। किन्तु आज हिन्दी संसार उमाशंकर का जो रूप देखने लगा है उसकी कभी कल्पना भी नहीं थी; और यही कारण है कि आज यह नाम प्रेत पूजक, साहित्यकार उद्धारक, रहस्य उद्‌घाटक, भूल संशोधक आदि अनेक

विशेषणों के साथ हिन्दी संसार में अभिहित, चर्चित एवं अभिनन्दित होने लगा है। अभी-अभी इन्होंने अयोध्या प्रसाद खत्री, बाबू महेशनारायण, कीर्ति नारायण, अवध बिहारी सिंह 'बेदिल' आदि कई अश्रुत एवं अज्ञात ऐसे प्रेतों की पूजा श्रद्धा सहित विधिवत सम्पन्न की है, जिन्हें अपना पुरखा मानकर वर्तमान साहित्यकार जगत गौरव का अनुभव करने लगा है। भक्ति-युग के मंगनीराम और हलधर दास जैसे संत कवियों की तड़पती प्रेतात्माओं को वेदी पर बिठा कर उमाशंकर जी ने भक्तिभाव से जब पिंडदान दिया और पितरमिलौनी के लिये मंत्रोच्चारण करना आरम्भ किया तब आज और कल के सभी साहित्यकार एक साथ चौक पड़े। सबने ऐसा अनुभव किया कि जो काम आज उमाशंकर जी बड़ी तन्मयता के साथ कर रहे हैं इसे वर्षों पूर्व हमारे बाप-दादों द्वारा ही किया जाना चाहिए था।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि हिन्दी संसार का हर साहित्यकार ऐसे व्यक्तित्व के सम्बन्ध में निकट की जानकारी प्राप्त करना चाह रहा है। अस्तु, आज उनके सम्बन्ध में कुछ खास बातें साधिकार सबके सामने रख रहा हूँ, जिनसे सम्भव है आपको चाहनेवालों को कुछ तुष्टि मिल सके।

आज से छियालीस वर्ष पूर्व १५ सितम्बर, १६२० को शाहाबाद जिले के शुक्रपुरा ग्राम में इस अद्वितीय प्रतिभा ने एक संभ्रान्त कायस्थ-कुल में जन्म ग्रहण किया था। तब उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी छिटक कर शहर की ओर निकल तेजी से दूर तक जाने की इच्छा रखनेवाली आँखें देखकर कोई इसका अनुमान तक नहीं कर सका था कि यह श्याम वर्ण का

छौना कभी सफल साधक और कुशल साहित्यकार के रूप में सारे राष्ट्र के बीच ख्याति प्राप्त कर सकेगा। किन्तु आज जो कुछ हम-आप देख रहे हैं उससे यह कहना पड़ेगा कि शुक्लपुरा गाँव की वह पवित्र मिट्टी धन्य है जिसने साहित्य-संसार को उमाशंकर जैसा तेजस्वी और प्रतिभासम्पन्न पुत्र दिया जिस पर साहित्य-संसार को गर्व है।

स्वस्थ साँवला लंबा कद; बड़ी-बड़ी चमकती-सी, आँखें, बराबर हिलते हुए अधरोष्ठ और चौड़ा उन्नत ललाट, यही है विख्यात साहित्कार उमाशंकर का रेखाचित्र। तेज भागने की प्रवृत्ति जैसे जन्मजात हो इनमें। ये आपको जहाँ कहीं भी मिलेंगे, रास्ते में, रेस्तोराँ में या सरकारी कार्यालय में बराबर तेज़ी से यानी जल्दी-जल्नी सामने के काम को पूर्ण करने के लिये व्यग्र दिखलाई पड़ेंगे। गोया ये जो कर रहे हैं इतने से ही संतोष करनेवाले नहीं हैं बल्कि बहुत सारे काम और करने हैं जिनके लिये जल्दीबाजी आवश्यक है।

यों लिखने की रुचि विद्यार्थी जीवन में ही इनकी थी, किन्तु कॉलेज शिक्षा समाप्त करने के बाद जब जीविकोपार्जन के लिये सरकारी कर्यालय में कर्मचारी के रूप में दाखिल हुए तब से इनकी लेखनी अवाध गति से चलने लगी और क्रमशः उसकी गति तीव्र से तीव्रतर, तीव्रतम होती गयी। गत १६३४ ई० से अद्यावधि अबाध गति से लिखनेवाला साहित्य-कार खोजने पर भी कम ही मिलेगा।

उमाशंकर जी पेयेवर नहीं सौकिया साहित्यकार है। सरकारी फाइलों के बीच जीनेबाले इस सौकिये साहित्यकार ने जीवन की इस छोटी अवधि में साहित्य साधना का जो परिचय दिया है उसे देखते हुए कहना

पड़ेगा कि तेज भागने में कोई पेशेवर साहित्यकार भी इनका मुकाबला नहीं कर सकता। आश्चर्य है कि इतनी व्यस्तता के बावजूद इतने कम समय में इनसे साठ ग्रन्थों का निर्माण कैसे सम्भव हो सका? इसके साथ ही यदि यह कहा जाय कि हिन्दी की जितनी छोटी-बड़ी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती रहीं सब में उमाशंकर जी जैसे छाये रहे।

वर्तमान मान्यता के आधार पर 'मूड' आये बिना साधारणतया साहित्यकार से कुछ भी लिखना संभव नहीं हो पाता, किन्तु यह किस धातुका बना साहित्यकार है कि इतनी सारी चीजें इतने कम समय में इनसे लिखना सम्भव हो सका! लगता है पेशे के लिये इनका शरीर या अंग-प्रत्यंग सरकारी फाइलों के साथ खेलता नजर आये या ट्रेजरी के डबललौक में बन्द रहे—चाहे बन्दूकधारी चेहरे के बीच रहे किन्तु इनका मस्तिष्क अलग साहित्य सृजन करते रहता है। ये हमेशा अपने को सरकारी अफसर से अधिक साहित्य का सेवक समझते रहे हैं। मजेदार बात तो यह है कि साहित्य से इन्हें जितना प्रेम है उससे कई गुणा अधिक अपनत्व साहित्यकारों से है। ये हमेशा कहते रहते हैं कि साहित्य की अर्चना का उपक्रम कर यदि हम साहित्यकार को भुला देते हैं, तो हमें साहित्यकार कहलाने का कोई अधिकार नहीं। साहित्यकार छोटा हो या बड़ा, वह इनके स्नेह, आदर और अपनत्व पाने का अधिकारी है। ये जीविकोपार्जन के क्रम है जब जहाँ रहे वहां की साहित्यिक संस्थाओं को संजीवनी सुधा का पान कराते रहे। उपेक्षित और अनादृत साहित्यकारों की पीठ ठोंकने के लिये ये जगह-जगह नई साहित्यिक संस्थाओं का निर्माण करते रहे। पटने में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ये कर्मठ कार्यकर्त्ता

तो रहे ही बिखरे अनेक साहित्यकारों को समेटने या योजनाबद्ध प्रगति के काम के लिये इन्होंने प्रेमचन्द साहित्य परिषद् और बिहार साहित्यकार-संघ की स्थापना की। मैं स्वर्गीय भवानी दयाल सन्यासी के इन शब्दों के साथ पूर्णतः सहमत हूँ कि "उमाशंकर जी व्यक्ति नहीं एक संस्था हैं।"

मुजफ्फरपुर स्थानान्तरण के काल में कई साहित्त्यि संस्थओं के रहते हुए भी वहाँ इन्होंने अयोध्या प्रसाद खत्री-स्मृति समिति का निर्माण किया, जिसके तत्वावधान में उपेक्षित साहित्यकार खत्री जी के सम्बन्ध में शोध किया गया। संताल परगना आगमन के सिर्फ दो महीने बाद ही इन्होंने दुमका में दो साहित्यिक संस्थाओं के रहते हुए भी "महेश नारायण शोध संस्थान" की स्थापना कर दी।

उमाशंकर जी स्वभावतः लल्लू-चप्पू में पड़नेवाले नहीं हैं और न वाजिब हक से किसी को वंचित करनेवाले हैं। पिछले दिनों देवघर में आयोजित महेशनारायण स्मृति दिवस के अवसर पर अपने भाषण के क्रम में उमाशंकर जी ने कहा कि "पटनेवालों ने मुझे भेजा है आपके बीच एक खास काम के लिये। खास काम यह है कि आपके जिले की अमूल्य साहित्यिक निधि श्री महेश नारायण जी को पटनेवाले बिल्कुल अपना बना चुके थे। मैं वह अमूल्य निधि आज आपके जिम्मे लगा देने आया हूँ। अब आप इनकी हिफाजत करें।"

उस दिन उसने उक्त उद्गार ने लोगों को काफी प्रभावित किया। संतल परगना का साहित्यिक और पत्रकारिता का इतिहास जहाँ से आरम्भ हुआ लोग मानते रहे, उससे लगभग सौ वर्षों का पुराना बन गया। यह किसी सफल जादूगर का ही काम हो सकता है।

आज इसे सभी सत्य मानने लगे हैं कि उमाशंकर जी इतिहासके खंडहरों से पुरानी हड्डियों को चुन-चुनकर इकठ्ठा करते हैं और अपनी साधना से प्राण प्रतिष्ठा कर जीवन्त बना डालते हैं। स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय जी ने उमाशकर की "कलम-शिल्पी" नामक पुस्तक के

सम्बन्ध में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए कहा है कि "श्री उमाशंकर जी की साहित्यिक पुस्तक 'कलम-शिल्पी' में हिन्दी के पुराने लेखकों की शोधपूर्ण और प्रामाणिक जीवनियाँ हैं, जिनसे मुझे बिहार के साहित्यिक इतिहास लिखने में बड़ी सहायता मिली। इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्व बराबर बना रहेगा साथ ही इससे साहित्यिक शोधकर्त्ता विद्वानों को प्रकाश भी मिलेगा।"

उमाशंकर जी की बहुमुखी प्रतिभा सर्वविदित है। ये जहाँ मंचोपयोगी अभिनय नाटक, कहानियाँ आलोचनाएँ आदि लिखते रहे हैं वहां फासिष्टवाद से लेकर गांधीबाद तथा सर्वोदयवाद की सरल व्याख्या, महिलोपयोगी और बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी करते हैं। इनका "अशोक का न्याय" नामक नाटक लगातार तीन महीने तक पटने के मंच पर खेला गया। बाद दिल्ली, कलकत्ता, राजस्थान, काठमांडू और वीरगंज के रंगमंचों पर भी खेला गया।

नागरिक अधिकारों, राष्ट्रीय नेताओं के जीवम चरित्रों एवं नये पुराने साहित्यकारों की जीवनियों को बराबर स्मरण कराने में इन्हें कमाल हासिल है। हिन्दी संसार के सभी सम्मान्य साहित्यकारों की जीवनियां इन्हें जैसे कंठाग्र हों कब किस साहित्यकार की जयन्ती पड़ेगी इसकी सूची यदि किसी प्रांतीय स्तर की साहित्यिक संस्था में भी न मिले तो उमाशंकर जी पास चले जाइये। उमाशंकर जी इस विषय के लिये विश्वकोष के समान हैं।

किसी साहित्यकार के साथ यदि कोई प्रकाशक बुरा व्यवहार करता पाया गया, किसी साहिरियक संस्था के हिसाब-किताब के सम्बन्ध में कोई साहित्यकार गोल-माल करता पाया गया तो वह इन्हें कभी बर्दाश्त नहीं हुआ। मुझे स्मरण है, एक बार जब बिहार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

के हिसाब में कुछ गोलमाल पाया गया था, तो ये आगबबूला हो उठे थे और सम्मेलन के अधिकारियों से अनुरोध किया था कि संस्था सरकार को सुपूर्द कर दी जाय। इसके चलते सम्मेलन के तात्कालिक अधिकारी से जो इनका पत्राचार हुआ था वह अब एक स्मृति-ग्रन्थ बन गया है। उक्त ग्रन्थ का प्रकाशन समय पर किया जायगा।

श्री उमाशंकर जी नई पीढ़ी के प्रतिनिधि साहिकार हैं इसमें तनिक भी संदेह नहीं, बल्कि बिहार के वर्तमान साहित्यिक पीढ़ी के गौरव है। साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन्हें ऐसी प्रेरणा दें जिससे हिन्दी साहित्य का निष्पक्ष और प्रोमाणिक इतिहस लिखा जा सके।

[साहित्यकार देव, सुलभ गुण लेकर धरती पर आता है और समाज के सभी अंगो के लिए समाज के विष को उसे पीना ही पड़ता है। साहित्यकार को अपने गर्म आँसू अभाव की ज्वाला मैं सुखाते रहने से काम नहीं चल सकता है। इच्छा और अनिच्छा से भी समाज के लिए उसकी प्रबृत्ति स्वत: गतिशील हो जाती है। इसी पर साहित्यकार को एक साथ एक जगह अपना आसन बिछाने के लिए युग संकेत दे रहा है। युग-धर्म की उपेक्षा और सत्य का अनादर दोनो हमारे लिए क्षतिपूर्ण है। आखिर हमारा भी अपना अधिकार है और उसकी भी कीमत है। लेकिन, समाज में किसी को अपने से अधिकार नहीं मिला है। अधिकार तो लेने की वस्तु है। समाज की रोटी में हमारा भी उतना ही अधिकार है जितना अन्यान्य वर्ग विशेष का समाज से अपना हिस्सा लेकर ही हम अपनी भूख मिटा सकते हैं।

—उमाशंकर

उमाशंकर : एक व्यक्तित्व

शुद्धदेव झा 'उत्पल'
अध्यक्ष, साहित्यकार संघ, दुमका ।

क्या कहा आपने ? सरकारी ऑफिसर फाइलों से जूझना भर जाने; साहित्यिकरुचि रखकर भी वह साहित्य की सेवा क्या कर सकेगा खाक ! भला बिनजाने, बिनबूझे आपने आखिर यह फतवा कैसे दे डाला ? क्या आप "पंत" को नहीं पहचानते ? "बच्चन" को नहीं जानते ? "दिनकर" को नहीं देखते ? "प्रभात" को नही परखते ? आप कहेंगे कि इन "बड़ों" की बड़ी बात है । अच्छा तो छोड़िये इन बड़ों को । आइये, मैं अपने जिले के एक ऐसे सरकारी ऑफिसर से आप को परिचित कराता हूँ जो साहित्य खाता है, साहित्य पीता है । साहित्य ही उसकी सांस है, साहित्य ही उसका जीवन । वह साहित्य के लिए जीता है, साहित्य के लिए मरता है ।

···वह देखिये , टेबुल के सामने, कुर्सी पर उकड़ू बैठा हुआ फाइलों से जूझ रहा है, खुरदरी खादी लिबासमें एक अधेड़ व्यक्ति । देख-रहे हैं न ! "एस्थेटिक्स" के बिचार से आप उसे सुन्दर नहीं मानेंगे । मैं भी आपसे सहमत हूँ । लेकिन, आपने नारिकेल तो अवश्य देखा होगा । ऊपर से कठोर, खुरदरा और भीतर से सरस, सुमधुर हृदय छिपाये । ठीक वैसा ही, बिलकुल वैसा ही, बह आदमी है । नाम है "उमाशंकर" वह ट्रेजरी आफिसर है । एक ऊँचे तबके का सरकारी आफ़िसर । वह न तो देवता है, न राक्षस (!), न वेदव्यास है; न गणेश न कर्मयोगी कृष्ण हैं; न योगीराज शंकर । वह एक आदमी है—फक़त एक आदमी । खूबियाँ—

जो आदमी को देवता बनाती है, उन्हें पूज्य और महार्घ बनाती है। खूबियाँ—जो साधारण को असाधारण साबित करती हैं, और एक बारगी व्यक्ति को सबका बना देती हैं उन्हें अजातशत्रु कर देती है। वह खाता-पीता है, हँसता-बोलता है। दुःख से दुखी होता है और सुख से सुखो। उमाशंकर आदमी है—एक आदमी—मेरी और आपकी तरह आदमी। और खुशी की बात है कि उमाशंकर के ऐसे आदमी से हमारे सभी जरते हैं आज का देवता भी पूरा असामाजिक हो गया हैं न !

···आज के "महेशनारायण-जयन्ती-उत्सब" में किसे आप गौर से देख रहे है ? क्या पूछा ? मंच पर बैठा, खादी के सूट में वह कौन है, जो रह रह कर बेचैन हो उठता है ? भावावेश में आ जाता है; जो सारी व्यवस्थाएँ कर रहा है। अच्छा ! तो इतनी जल्दी भूल बैठे आप इनको ! उसी दिन तो आपको दिखाया था न ! आफिसमें टेबुल के सामने कुर्सी पर उकड़ू बैठा वह फाइलों से जूझ रहा था। क्या कहा ? विश्वास नहीं होता ! सभी लोग उनके बारे में ऐसा ही कहते हैं। सचमुच. किसी को विश्वास नहीं होता कि यही उमाशंकर ट्रेजरी आफिसर है, यह साहित्यिक हैं, यही समाज सेवी है। यही पत्रकार है, यही "महेशनारायण शोध-संस्थान" का संचालक है और यही जयन्तियों और गोष्ठियों की व्यवस्था पक भी है। 'सूट' पहनता है और यही धोती। जी हां, यही वह आदमी है जो नया जीवन के हर क्षेत्र में—साहित्य के क्षेत्र में भी। क्या पूछा आपने ? साहित्य की इसने क्या सेवायें की है ? मैं कहूँगा कि उसने साहित्य के लिए क्या नहीं किया है ? साहित्य की हर विद्यापर उसने कलम चलाई उसने गद्य लिखा है, उसने पद्य लिखा। उसने उपन्यास

लिखे हैं, उसने कहानियां लिखी हैं। उसने निबंध लिखे हैं; उसने 'राजनीति" लिखी है। उसने इतिहास लिखे हैं, उसने जीवनियां लिखी है और सर्वोपरि उसने विस्मृति के गहवर में पड़े, उपेक्षित साहित्यस्रष्टाओं का उद्धार किया है। और ये कार्य वह विगत तीन दशकों से करता आ रहा है। दर्जन पुस्तकों से अधिक का वह रचयिता है। बहुमुखि प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति हैं वह। ऐसा अक्खड़ लिख्खाड़ आज सूबे बिहार में कम मिलता है। देश की शायद ही ऐसी कोई पत्र पत्रिक हो जो उमाशंकर की लेखनी से अछूती रही हो; जिसके कालम इसकी लेखनी से रंगे हों। इसीलिए तो पत्रपत्रिकाओं का हरजिज्ञा सुपाठक आज उमाशंकर से पूर्ण परिचित है। साहित्य जगत में वह नया हस्ताक्षर नहीं है।

…वह एक ऐसा हस्ताक्षर है जिसने बिहार के स्वल्प चर्चित साहित्य सेवियों को प्रकाशित कर साहित्य के इतिहास को अभिनव रूप प्रदान किया है। अयोध्या प्रसाद खत्री महेशनारायण, राधालाल माथुर, रामदीन सिंह, चन्द्रशेखरधर मिश्र, भवानी दयाल सन्यासी, काशी प्रसाद-जायसवाल, कीर्तिनारायण, अवध बिहारी सिंह 'बेदिल' जैसे अश्रुत एवं अज्ञात साहित्यकारों की अछूती जीवनी और अचर्चित साहित्य सेवा का उद्‌घाटन उमाशंकर जी ने हिन्दी शोध के क्षेत्र में स्पृहणीय योग दिया है।

…वह एक ऐसा हस्ताक्षर है जिसने आधुनिक काव्यरूपों के बीज को महेशनारायण आदि कवियों में दिखाकर समस्त 'नयेपन' के आन्दोलन के उत्स को खोजने की नई दृष्टि प्रदान की है। इतना ही नहीं, व्यतीत भक्तियुग के मगनीराम हलधर दास जैसे संत कवियों का पहली वार उद्धार कर उमाशंकर ने संतसम कार्य किया है और इस बात को

स्वीकारने को लाचार कर दिया है कि हिन्दी-साहित्य का इतिहास-लेखन अभी भी पूर्ण वैज्ञानिक एवं प्रमाणिक नहीं हो सका है ।

वह एक ऐसा हस्ताक्षर है जो पुराने और नये खेये के लेखकों के सन्धिस्थल पर खड़ा है और माता हिन्दी के मन्दिर का एक अनन्य पूजारी है। हिन्दी में जीवनी साहित्य का चिन्त्य अभाव रहा है । इसकी पूर्त्ति में भी अभूतपूर्व योग दिया है । साहित्यिक व्यक्तित्व हों या राष्ट्रिय; नेता सवों के जीवनबृत्त के अङ्कन में उन्हें अपूर्व सफलता मिली है । इस तरह वे एक आर्षऋण से मुक्त साहित्यकार है ।

और उसका व्यक्तित्व ? वह धर्म से डरता है । भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्रति अनन्य निष्ठा रखता है । उसको प्रकृति से सरलता प्रतिभाषित होती है । वह सरल है, निरमिमान हैं मधुर है, मिलनसार । व्यवहार में सहानुभूतिपूर्ण एवं सर्वदा औचित्य का निर्वाह करने वाला है । शायद ही कोई हो जो पहली वार इससे मिलकर प्रभावित नहीं हुआ हो । कार्य कुसल जीवन बिताकर भी राष्ट्रवाणी हिन्दी की जो स्तुत्य सेवा वह कर रहा है, वह भूलने, भूलाने की बात नहीं है । निश्चय ही ऐसे वर-पुत्रों से माँ भारती का गौरव है ।

और आज दुमका में साहित्यिक गोष्ठियाँ होतीं हैं, साहित्य देवताओं की जयन्ती मनायी जाती है । यहाँ के साहित्यिक वातावरण में एक जाग्रति की लहर दौड़ गयी है और सब के मूल में उमाशंकर है - एक एक उमाशंकर । यह नाम क्रियाबाचक है ।

और वह एक ट्रेजरी ऑफिसर है—ग्रति कार्यब्यस्त, उलझा ।
वह एक साहित्यकार है—कर्मठ तथा तेजस्वी साहित्यकार ।
वह एक आदमी है—एस धरती का आदमी, सो पैसे आदमी ।

और सब से ऊपर वह मेरा मित्र है—परम मित्र। उसके सम्बन्ध में अधिक कहने में संकोच होता है, भय भी लगता है, क्योंकि आज की दुनियाँ बड़ी विचित्र है—संकीर्ण हृदय—अनुदार।

और आज ऐसे औफिसर मित्र, साहित्यकार मित्र, आदमी मित्र हिन्दी की विमल विभूति के इस जन्म दिवस पर अपनी ब्रह्मण्य भावना के वशीभूत हो हम ईश्वर से इसके स्वरूप, प्रसन्न और दीर्घजीवी होने की हार्दिक कामना करते हैं।

'बाबू श्यामसुन्दर दास, मिश्र बन्धु एवं पं० रामचन्द्र शुक्ल ने जब हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखना आरम्भ किया, तब लोगों को आशा हुई कि अंग्रेज लेखकों से जो भूलें रह गयी हैं, इनका उनके द्वारा सुधार हो जायेगा। पर आशा पूरी नहीं हुई। इन लोगों ने भी बहुत से ऐसे साहित्यारों को स्थान नहीं दिया, जिन्हें इन्हें देना था। इन लोगों से बड़ी-बड़ी भूलें रह गयी हैं, जो लज्जाजनक है, खेदजनक भी है। भारतेन्दु और द्विवेदी-युग के अधिकांश साहित्यकारों को इन इतिहासकारों ने देखा था, कई से व्यक्तिगत सम्बन्ध भी था। ऐसे साहित्यकारों का उल्लेख करना इनके लिए परम आवश्यक था, पर इन्होंने उन्हें भुला दिया। स्पष्टवादिता को अगर दोष नहीं माना जाय तो हम यह कह सकते हैं कि जानकर ही अनेक साहित्यकारों की इन लोगों ने उपेक्षा की है। यही कारण है, हमें यह कहना पड़ता है कि हिन्दी साहित्य इतिहास अधूरा है, अपूर्ण है और वह असंगतियों से भरा हुआ है।"

—उमाशंकर

कर्मठ साहित्यकार : श्री उमाशंकर

श्री नरेश 'विशारद'

कौन जानता था कि इस नवयुग में साहित्यिक होड़ के समय साहित्य-सेवा का व्रत लिये एक ऐसा नक्षत्र साहित्याकाश में चमक उठेगा, जिसकी ज्योति से साहित्य-सेवियों की आँखें चकाचौंध में पड़ जायगीं और सभी उसकी ओर टकटकी लगाये रहेंगे कि देखें इस नक्षत्र की ज्योति किस विषय को छूकर अमर कर देगी। और साहित्य महारथियों ने जाना-सुना ही नहीं वरन् देखा कि श्री उमाशंकर ही ऐसे नक्षत्र हैं जो न केवल किसी एक विषय वरन् कई विषयों को एक साथ लेकर चलते हुए साहित्य, इतिहास, राजनीति, काव्य, और संस्मरण के द्वारा साहित्य-बाटिका के सुमनों को प्रस्फुटित कर रहें हैं जो किसी एक साहित्यिक से होना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। भारत के साहित्यिकों को दृष्टि रख यदि विचार किया जाय तो जिस श्रेणी में श्यामसुन्दर दास, श्री महाबीर-प्रसाद द्विवेदी एवं श्री शिवपूजन सहाय प्रभृति मर्मज्ञ विद्वान आते हैं, उसी श्रेणी के रचनाकारों में श्री उमाशंकर का नाम साहित्य के इतिहास में अमर माना जायगा, हसमें कोई अत्युक्ति नहीं।

श्री उमाशकर जी का साहित्यिक जीवन १९३३ ई० से प्रारम्भ हुआ और आज तीस वर्षों की अवधि में उनकी जितनी कृतियां प्रकाश में आई हैं, उनके अध्ययन-मनन से पता चलता है कि इस दिशा में ठोस कार्य करते हुए बढ़ते ही जा रहे हैं। आपकी रचनायें विशाल भारत माधुरी, सरस्वती, सुधा एवं कर्मयोगी प्रभृति पत्र पत्रिकाओं में आदर के साथ प्रकाशित होती रही हैं। मैं उमाशंकर जी को एक अरसे से जानता

हूँ। ये धुन के पक्के और कलम के धनी हैं। इन्होंने अपना जीवन स्वयं अपने अनुरूप गढ़ा है और इन्हें जो कुछ कहना है, उसे ये सहज ढंग से विभिन्न शैलियों के माध्यम से कह देते हैं। इधर तीन वर्षों से इसके विषय में बिहार के साहित्यकारों में एक विशिष्ट चर्चा व्याप्त है। इसके पूर्व ये अविज्ञापित साहित्यकार थे ऐसा मैं जानता रहा हूँ।

उमाशंकर जी के विषय में 'कर्मी' दिनांक ३१ मार्च १९६३ में श्री राम तिवारी ने लिखा था कि "उमाशंकर जी को इन विन्दुओं में देखना आसान नहीं है। १—शोध के अछूते स्थलों को जोड़ने वाली सूत्र-दृष्टि में। २—एक निश्चित प्रभाव से बनी इतिहास चेतना में। ३—व्यवहारिक समीक्षा की प्रदीप्त मान्यताओं में और ४—सही, वास्तविक जन-साहित्य के निर्माण में इन विन्दुओं से जो छोटी और धुरीबद्ध एक प्यारी रेखा बनती है, वही उमाशंकर जी का साहित्यिक अवदान है, वही साहित्यकार उमाशंकर हैं, अपनी प्रतिज्ञाओं में बन्धे अकेले साहित्यकार, जो मरण तक बन्धे रहेंगे।" सच ही में उमाशंकर जी जन-जीवन के निकट रह कर, संघर्षों के बीच पलकर जो कुछ देते जा रहे हैं उससे जनता का लाभ ही नहीं वरन् इतिहास की सामग्री बनती जा रही है। ऐसे साहित्यकार को कौन नहीं पूजेगा? इनकी अप्रतिम लिखाड़ क्षमता के कायल सभी साहित्यकार हैं और यही कारण है कि इनकी कृति के तत्व के प्रति सबों की आस्था है और ये प्रशंसा के अधिकारी हैं। जो इनके श्रेय को जानने पहचानने को आतुर हों वे देखें कि किस कौशल से इन्होंने हिन्दी के इतिहासज्ञों की क्षमता के अभाव को, ऐतिहासिक संग्रहों की खोज के द्वारा अयोध्या प्रसाद खत्री, महेशनारायण कीर्तिनारायण और अवधबिहारी

सिंह 'वेदिल' जैसे अनेक अज्ञात साहित्यकारों को हिन्दी जगत के सामने लाकर पूरा किया है। इस शोध कार्य के ये एक ऐसे जादूगर हैं जिसकी कला इन्हें ही ज्ञात है। ये सामान्य रूप से अपने पद के दायित्व को निवाहते हुए भी इस कार्य को करते आ रहे हैं। और करते जायँगे क्योंकि इसके बिना ये जीवित रह ही नहीं सकते। इस धुन को देख कर और इनकी भावना को आंकते ही तो साहित्य महारथी शिवपूजन सहाय ने कहा था कि "श्री उमाशंकर जो की गवेषणा बृत्ति सर्वथा श्लाघ्य है। मैं उनको ऐसी प्रबृति को हिन्दी के लिये बड़ा लाभप्रद समझता हूँ।"

इनकी रचनाओं में शक्ति, स्फूर्ति, नयी प्रेरणा एवं नयी स्थापनाओं का त्रिवेणी सङ्गम रूप मिलता है। स्पष्ट है कि संघर्ष, साधना आत्मचिंतन का संमिश्रण इनके कर्मठ जीवन में घुल मिल कर एक ऐसा चमत्कार पैदा कर रहा है जिसे हम सभी व्यक्तित्व की संज्ञा से अभिहत करते हैं। इनका लक्ष्य भाव कुछ लिख कर साहित्यिक इतिहास की सूची में अनेक लेखन जो किसी एक विषय को लक्ष्य बनाकर अपने को अमर करने की चेष्टा हैं. रत रहते हैं, वरन् इनका लक्ष्य कि आज के तरुण साहित्य सेवी जिसमें प्रतिभा के बीज अंकुरित है और प्रौत्साहन के अभाव में असमय उड़गन की भांति चमकते हुए नष्ट हो रहे हैं, उनके प्रेरणा स्रोत को साहित्य के विभिन्न अंगों की ओर अजस्नधारा में प्रवाहित करना जो आज के लिए नहीं तो भविष्य के लिए भारतीय सभ्यता संस्कृति के विकास के स्तम्भ हो सकें। अपने आपके लिए इनका लक्ष्य है कि साहित्य संसार के सामने उन सभी साहित्यिक मनीषियों को जो अभी तक तिमिर के गह्नगर्त

में पड़े हैं, धरातल पर लाकर साहित्यिक इतिहासकारों को बताना कि ये आपकी कब से प्रतीक्षा कर रहे थे, इन्हें पहचानिये और सम्मान सहित इतिहास के उन पृष्ठों में अंकित कर अमर करें जिसके वे पूर्ण अधिकारी हैं। ऐसे महान लक्ष्यमान उमाशंकर जी के विषय में उनके कर्म के अनुरूप मुझ जैसे लेखक के लिए उनके विषय में लिखना एक गुरुतर कार्य है क्योंकि उनकी प्रतिभा, उनकी लगनशीलता और उनकी कर्मठता अपराजेय है जिसकी प्रशंसा आज चारो ओर हो रही है।

संसार में ममुष्य को जीने के लिए रोटी का प्रश्न महत्तर माना जाता है और इस महत्तर प्रश्न का समाधान वे सरकारी नौकरी कर निबाह तो रहे हैं पर वे जानते हैं कि तन की भूख से बढ़कर मनकी भूख है जिससे मनुष्य का सब कुछ जीते जी मर जाता है। इनके मन की भूख इतनी तीव्र है कि वे आपादमस्तक साहित्य-सेवा का कार्य अपने रीते समय में अवाधगति से करते जा रहे हैं। अपने परिवार की चिन्ता इन्हें उतनी नहीं जितनी अपने बचे हुए समय को साहित्यसर्जन में लगाये रखने की है। इसका फल है (उमाशंकर जी क्षमा करें, जैसा देखा सुना, वह लिख गया।) सार्वजनिक एवं सामाजिक जीवन में रत रहना और साहित्य सेवा में तल्लीन रहना ही इनकी सर्वोपरि विशेषता है। जहाँ जहाँ ये स्थानांतरण होकर गये वहां ही इन्होंने अनुपम साहित्यिक कार्य सम्पन्न कर, साहित्यकारों का ध्यान अपनी कृति की ओर आकृष्ट कर लिया। यह कोई साधारण सी बात नहीं है। जब ये पटने में थे प्रेमचन्द परिषद् और बिहार साहित्यकार संघ की स्थापना की जो अभी भी चालू है और साहित्य कला का प्रेरणात्मक कार्य सम्पन्न कर रहा है।

इन दिनों ये सरकारी नौकरी में ट्रेजरी ऑफिसर के रूप में दुमका रह कर अपने इस गुरुतर कार्य को करते हुए साहित्यिक संस्थाओं में एक ऐसी लहर ले आये हैं जिससे तरुण साहित्यकारों का प्रेरणा स्रोत विभिन्न धाराओं में प्रवाहित हो उठा है। यहां रह कर भी अपने गवेषणा-पूर्ण निबन्धों से प्रमुख पत्र पत्रिकाओं को उपकृत करते जा रहे हैं। दुमका में "श्री महेशनारायण साहित्य शोध संस्थान" की स्थापना भी आपके सत्प्रयासों से हुई है जिसके द्वारा शोध कार्य किया जा रहा हैं। इसके साथ बिचारकों तथा मर्मज्ञों का सहयोग है किन्तु पता चला है कि कतिपय ऐसा साहित्यकार जो हिन्दी के इतिहास में अपना नाम अपने कृतित्व के बल पर नहीं; वरन् अपनी प्रमुखता के दावे पर दर्ज कराने को आकुल है बाधाओं की शिला बन कर अड़े से हैं। शुभकार्यों में आधाओं का स्वागत कर और उसे, अपनी प्रतिभा अपने तेज एवं अपनी योग्यता से पार कर लेना भी एक कला है। इस कला के मर्मज्ञ भी उमाशंकर जी बिहार के साहित्यिकों में जाने माने जा रहे हैं। वे अवश्य ही अपनी सादगी, अपने विनम्र व्यवहार से इसे भी झेल लेंगे. ऐसा विश्वास है। और उन साहित्यकारों को भी एक स्वस्थ दिशा देंगे जिससे वे अपने कृतित्व के बल पर एक दिन चमक उठेंगे। मुझे यह करते हर्ष होता है कि उमाशंकर जी संस्थाओं के निर्माता होते होते अब स्वय एक सशक्त संस्था बन गये हैं जिससे होड़ लेने न जाने कितनी संस्थायें आती रही हैं और टकरा कर इनकी कर्मठता के सामने टूक-टूक होती रही हैं।

इनका चिन्तक अपने सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं पर चिन्तन करने लगा है। राष्ट्रीय चेतना के प्रति अत्यन्त जागरूक है।

"बापू का स्वप्न साकार हो उठा" निबन्ध में इन्होंने ग्राम इकाई को आधार मान कर पञ्चायत के माध्यम से शासन को सफल बनाने हेतु खेत-खलिहानों की ओर संकेत किया है जो वर्त्तमान समय की राजनीति, आर्थिक सामाज नीति और सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र बनने को है। उमाशंकर जी ने अभी तक लगभग ६० पुस्तकें लिखी हैं जो सभी उपादेय मानी गई हैं। विभिन्न विषय की इन पुस्तकों में आप गवेषणाशक्ति; प्रेरणाशक्ति तथा ज्ञानशक्ति को प्रकाश की एक रूपता पायेंगे जो इनके जीवनमें घुलमिल कर एकाकार हो गई है !

इनका जन्म दिन सम्भतः दुमका में साहित्यिकों की ओर से सफलतापूर्वक मनाया गया है। इनका सम्मान तो इससे बड़े कर होना चाहिए उनके कृतित्व को लेकर किन्तु श्री रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में—"............जहां दलमत राजनोति स्वार्थ लिप्सा एवं संकीर्ण मनोबृति रग-रग में पनप रही हो वहां किसी कलाकार अथवा साहित्यकार का सम्मान क्या होगा बल्कि लोग ऐसे शुभ कार्य में हाथ बँटाने के बदले ऐसे असुष्ठानों में निष्ठ-नेह दिखलाने के बदले बिरोधी वातातरण ही बनाने के उपाय सोचेंगे।"—यह कहना अत्युक्ति नहीं कि अभी स्वस्थ विचारधारा को ऐसा युग नहीं आया है। हां दलगत बिचारों के एकीकरण से ऐसा-कुछ हो रहा है, शायद वह भविष्य में उदात्त बिचार-धारा का प्रतीक बन जाये।

उमाशंकर जी ने हिन्दी साहित्य के लिए क्या कुछ किया, क्या दिया और उसका कितना महत्व है, इसका मूल्यॉकन करना सरल नहीं है और न इस लेख के लिए सम्भव ही, और न कोई एक व्यक्ति इसे निर्धारित

भी कर सकता है। इनके निकट सम्पर्क में रहने का सुअवसर तो मुझे विशेष नहीं मिला है किन्तु यदा-कदा साहित्य-सेवी के नाते इनसे २५ वर्षों से आलाप सलाप होने का सौभाग्य मिलता रहा है। सार-संक्षेप में मैंने इन्हें इतना जाना-माना है इनका बुद्धि कौशल विख्यात है, हृदय तरल और रहन-सहन अति सरल। तन स्वस्थ्य है मन अन्वेषक। विचार-धारा सम्पुष्ट लेखनी में बल और इनका सपना है साहित्य संस्कृति के सौरभ से साहित्य को भरपूर करना इनकी सतत आकांक्षा-तरुणों में साहित्यिक मन की भूख जगाना। श्यामलीला की प्रेरणा भरना और भविष्य के लिये साहित्य सेवियों की पंक्तियों की लम्बी कड़ी बताते जाना है ! ऐसे सुयोग, कर्मठ और अनवरत साहित्य साधना के तपस्वी कला मर्मज्ञ उमाशंकर जी का मैं अभिनन्दन करता हूँ जिनकी कृति दीप के प्रज्ज्वल प्रकाश से भारती का मन्दिर जगमगा रहा है।

श्री उमाशंकर— मेरी नजरों में

श्री राम नन्दन प्रसाद वर्मा 'जयेन्द्र'
कार्यकारी अध्यक्ष, नई चेतना, दुमका।

किसी भी साहित्यिक के साथ चाहे वह वयः–वृद्ध या वयःसद्य हो आप उसके साथ अपनत्व की भावना से बात–चीत करते पायें मित्रवत व्यवहार करते पायें तो बिना किसी हिचक और झिझक के आप मान लें कि वह जरुर उमाशंकर जी हैं— वही उमाशंकर साहित्यकार हैं - कोषागार पदाधिकारी- ट्रेजरी अफसर हैं। अफसर तो अपने स्थान पर हैं वे सबसे पहले साहित्यकार हैं। भला साहित्यिक का सुकुमार हृदय पद के अहं में अंधा बनकर कैसे जन-जीवन और जन-कोलाहल से दूर रहसकता है। वह या तो सबका अपना बनकर रहेगा या प्रेस्टिज के पोज में सबों से अलग रहेगा। यदि वह सबसे अलग रहेगा तो जिन्दा कब्र में ही रहेगा न! उमाशंकर उस अहमन्यता- प्रेस्टिज के पोज से लाखों कोश दूर हैं। इतना ही नहीं वह लोगों को — कलाकारों को— साहित्यकारों को ढूंड-ढूंड कर मित्र बनाना जानते हैं। उनका यह गुण सराहनीय ही नहीं स्पर्धा-शील है और उनकी सहृदयता का परिचायक भी है।

उमाशंकर भाई को यदि जन्मजात साहित्यकार कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। यही वजह है जो हम आज अपने बीच इनकी लिखी ६० रचनाओं को पा रहे हैं। विभिन्न विषयों की ये रचनायें अपना एक विशिष्ठ स्थान रखती हैं। बहुमुखी प्रतिभा का यह कलम-शिल्पी, आलोचना, नाटक, कविता, उपन्यास, निबन्ध, राजनीति, जीवनी साहित्य शब्द चित्र तथा महिलोपयोगी एवं बालोपयोगी साहित्य की अकेले

रचना की है वह बहुतों के लिए मिलकर लिखना भी असम्भव है। लिखते हैं- लिख जाते हैं— स्वान्तः सुखाय बहुजन हिताय ! नहीं सबजन सुखाय। हिन्दी जगत उमाशंकर जी का सदा कृतज्ञ रहेगा और है ऐसा हमारा विश्वास है।

न साहित्यकारों को लोगों ने भुला दिया, खो दिया, हिंदी साहित्य का इतिहास उनके बारे में कुछ कहने में मौन है — वैसे सा।।हत्यकारों को - गड़े मुर्दों को कब्र से– समाधि से बाहर ले आना— उन्हें जिन्दा करना और हिंदी-साहित्य संसार के आगे उन्हें ला खड़ा करना उसमें उन्हें स्थान दिलाना-खेल नहीं, मामूली काम नहीं, धीरज का काम है। आज हिन्दी साहित्य का इतिहास उन विद्वानो की कृतियों की अप्राप्ति से अधूरा रह गया है- शृंखला की कड़ियां टूट गई हैं-- टूटी हुई हैं, उन्ह जोड़ने और पूरा करने का बीड़ा उठाना शौर्य का काम नहीं तो और क्या कहा जायगा? बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री, श्री महेश नारायण जैसे खोए पुष्ट और उन्नत कलाकार को हिन्दी जगत में ला खड़ा किया। खड़ी बोली के गद्य-पद्य की कड़ी को और पिछे वे ले गए। कहा उन्होंने

नहीं—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नहीं वल्कि भारतेन्दु के समकालीन श्री महेश नारायण ने इस खड़ी बोली में कविता लिख कर हिंदी की सेवा की है उसकी बेल को लगाया है और सींचा है। आज इतिहास के उस मौनावस्था को महेशनारायण और खत्री जी खड़ाकर उमाशंकर जी ने चैलेंज दिया है—उसे तोड़ा है और शृँखला की कड़ियों की इन्होंने बृद्धि की है। धुन का धनी, लगनशील, लिखते रहने का मर्ज घर के द्वन्द्वो में उलझा रहने पर भी लिखना और संतुलित रहना मामूली

बात नहीं । इसके लिए उमाशंकर जी के धैर्य, हिम्मत, और साहस ही की सराहना की जाएगी ।

उमाशंकर जी साहित्यिक परिवार के धरोहर हैं— उन्होंने जब से लिखना शुरू किया तब से देखा जाता है कि उनके परमादरणीय अग्रज अखौरी शिवनन्दन सहाय जी की उनपर बड़ी छाप है । उनके बड़े भाई विहार सरकार की अंग्रेजो सल्तनत में जिला विद्यालय निरीक्षक के पद पर काम करते हुए भी अनेक ऐतिहासिक पुस्तकें लिखी हैं । आप इतिहास के नामी और माने हुए विद्वान थे । अखौरी जी ने अपनी अंतिम सेवा मुगेंर में बितायी और वहीं से सेवा निवृत हुए । उन्होंने लिखा है– (१) फ्रांस की राज्य क्रांति (२) अमेरिका की क्रांति (३) इंगलैण्ड की औद्योगिक क्रांति तथा (४) ग्रीस का इतिहास आदि । तो हमारे उमाशंकर को गौरव है उस परिवार में जन्म लेने का । शाहाबाद जिले का शुक्लपुरा ग्राम सौभाग्यशाली है, इन्हे पाकर और सौभाग्यशाली थे वहाँ के मध्यवित्तीय संपन्न परिवार के मुखिया श्री कमल नारायण सहाय । श्री कमल नारायण का विवाह एक सती-साध्वी और धर्म प्राण महिला श्रीमती सकला देवी से हुआ था । श्रीमती सकला देवी के गर्भ से ही इन दोनो साहित्यिक रत्नों का प्रादुर्भाव हुआ है ।

आज से ४६ वर्ष पूर्व दिनांक १५ सितम्बर १९२० ई० को उमाशंकर ने जन्म ग्रहण किया था । जिस कोख से इन्होंने जन्म लिया वह सचमुच बड़ी ही सोभाग्यशालिनी थी । क्योंकि उन्होंने अपनी कोख से हिन्दी जगत को दो साहित्यिक के सुपुत्रों का जन्म दिया । उमाशंकर जी के पिता अंग्रेजी सरकार के पुलिस विभाग में पुलिस इन्सपेक्टर के

पद पर काम करते थे। उमाशंकरजी का बड़े लाड़-प्यार से लालन पालन हुआ ।

गाँधी जी की राजनीति ने उमाशंकर के दिल और दिमाग में घर कर लिया। पढ़ाई के साथ साथ राजनीतिक वातावरण ने उनके दिमाग को उत्प्रेरित किया। देश की गुलामी के प्रति घृणा और अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ क्रांति की, बगावत की उदात्त भावनाएं इनके पथ को उत्तेजित करती रही। आज़ादी की अन्तिमलड़ाई में यह व्यक्ति उसमें दिलोजान से कूद पड़ा—मशाल लेकर आगे बढ़ चला ! परिबार के प्रति न मोह न माया। सबसे पहले देश की आज़ादी तब और कुछ। इसका प्रभाव उनके अध्ययन पर बहुत पड़ा। बिहार बिभूति डा० अनुग्रह नारायण सिंह जी के वरद हस्त — सोने में सुहागे का जो काम किया। बाबू साहेब के ऊपर आप प्रमाणिक रूप में जितना लिख सकते हैं— संभवतः दूसरा नहीं। बहुत दिनों तक उनके सम्पर्क में रहने का उन्हें सौभाग्य जो मिला है। सरकारी चाकरी में तो बाद -बहुत- बाद आए हैं वे। इतना ही नहीं बाबू साहेब पर भाई उमाशंकर दो प्रमाणिक ग्रन्थ भी लिखे हैं— एक है ' बाबू साहब" (जीवनी) और दूसरा है " बाबू साहब की देन" जो पाँच भागों में है ।

उमाशंकर ने सबसे पहले सन् १९३३ ई० में अपनी रचना आरा से प्रकाशित होनेवाले साताहिक 'हितैषी' में सन् १९३३ में प्रकाशित करायी ।

उसके प्रकाशन से उनके हृदय में काफी उमंग बढ़ा-'लिखो और खूब लिखो' का उन्होंने संकल्प लिया। आज उसी का परिणाम है जो वह अवाद्य गति से

अपनी लेखनी चलाए जा रहे हैं–उनकी लेखनी थकती नहीं, उनका मन थकता नहीं। पर, उसकी संगत के लोग उसके उस मर्ज को देखकर थक जाते हैं; परेशान हो जाते हैं। वह कटु नहीं, तिक्त नहीं स्नेहिल मानव! बातें करने में ऊबने वाला नहीं- भले ही आप ऊब जाँय। ये ही बातें हैं जो उसे जिलाए रख रही है। नहीं तो साहित्यकार उमाशंकर कब का मर गया होता।

इनके समकालीन में मुझे भी होने का गर्व है और है इनके समकालीन लेखक मित्र कविवर श्री हरेन्द्र नारायण, श्री राम दयाल पांडे श्री आरसी प्रसाद सिंह, श्री प्रफुल्ल चन्द्र पट्टनायक, आचार्य कुमुद विद्यालंकार, प्रोफेसर केसरी कुमार आदि। इन्हें आज सभी अपने साथियों का सहयोग प्राप्त है। यह कम सौभाग्य की बात नहीं।

ऐसा कहा जाता है कि कोई भी लेखक साहित्यकार होने से पूर्व कवि बनता है-कविता के आश्रय में जाताऔर बाद में लेखक! भाई उमाशंकर भी पहले कवि बने और तब लेखक- यानि इन्होंने भी अपना ककहरा कविता से ही प्रारम्भ किया।

लिखने की धुन कभी-कभी लेखक को गुमनामी भी बना देता है। उमाशंकर ने भी गुमनामी बनकर बहुत कुछ लिखा है। क्योंकि लिखना है - दुनियां के सामने हमें अपने आज़ाद विचार रखने हैं— पर परिस्थितियों के भय से हमें छद्म नामों का सहारा लेना पड़ता है। उमाशंकर ने भी ऐसे अनेक छद्म नामों का सहारा लिया— यह दोष, नहीं है यह अपराध नहीं। आप एक "बिहारीआत्मा" है—"प्रेम नारायण श्रीवास्तव" हैं और हैं 'क्रांति- पुत्र' भी। सन् १९४२ की महा

क्रान्ति ने उन्हें क्रान्ति—पुत्र भी बना दिया उस समय इसी नाम से वे लिखा करते थे।

मेरे एक अंतरंग मित्र ने एकबार जोश में मुझसे कहा "जिसने जेल की चहार दिवारी का भीतरी भाग नहीं देखा, जिसने जेल नहीं भुगती, जिसने अपने सिर पर कांटों का किरिट नहीं धारण किया वह देश भक्त नहीं हो सकता।' मेरे मित्र बयालिस की क्रांति में ३५ बर्षों की सजा यापता है । तो क्या चोर, लूटेरे, डाकू, बटमार, खूनी, शराबी और पागल सभी देश भक्त ही हैं ? मुझसे नहीं रहा गया। मैंने तपाक में अपने उस प्रिय साथी को उत्तर दिया — "जेल जाना ही यदि देश भक्ति की निशानी है तो वैसे देश भक्तों की जरुरत नहीं । जो क्रांति से दिल चुराकर, कष्ट और मार के डर से दुबककर जेल में जाकर छूप बैठे। देश भक्त तो वह है जो बाहर रहकर जन-जन में क्रांति का शंख नाद करता रहे— उसकी आजादी की आग को जिला रखे । मैं जेल नहीं गया हूँ —बापू का रचनात्मक कार्यकर्ता रहा हूं उस सिल-सिले में गली—गली की खाक छानता रहा हूं— जेल के बाहर रहकर उसी जोश व खरोश के साथ काम करता रह हुं जिस जोश से हमारे नये देशभक्त मित्र। अफसोस ! मुझे गोरी सरकार ने गिरफ्तार नहीं किया। मौका तो काफी मिला उसे। भाई उमाशंकर ने क्रांति-पुत्र वनकर वही काम किया है जो देश नेता और देश भक्तों ने किया है। उसके दिल की अन्तर्ज्वाला जो अब !क्रांति की देवी को दिल में संजोए रखे हैं क्या कोई उस रूप को पहचान सकता है —देख सकता है ? उस रूप को देखने के लिए ज्ञान- चक्षु की जरुरत है। उमाशंकर को पहचनना

चाहो तो अन्तर्नेत्र को उधार लो।

एकबार मित्रों के बीच साहित्यिक चर्चा चल रही थी। प्रश्नों की झड़ियाँ लगी थी। सभी अपने-अपने विचार प्रगट कर रहे थे। हँसी हँसी में ही मैंने भी कुछ प्रश्न कर दिया— मैंने पूछा; भला आप करना क्या चाहते हैं ?

उन्होंने गर्व के साथ कहा— "मैं क्या करना चाहता हूँ' मैं उस काम को जिन्दा रहकर पूरा करना चाहता हूँ जिस काम को नामी गरामी साहित्यकार ने तुच्छ समझकर छोड़ दिया है– भूला दिया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास अब तक जो लिखे गए हैं, अधूरे हैं, उसे पूरा करना है और वे इसके लिए दृढ़ संकल्प है। इतना ही नहीं उस अधूरे अध्याय के ४००पृष्ठ लिखे भी जा चूके हैं। जिसके अंश भारत, के प्रायः सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। छोड़ी हुई कड़ी को दुरुस्तकर उसे जोड़ना चाहते है। यह बड़े ही साहस और धीरज का काम है।

मैंने पुनः छेड़ा– लोगो का विचार है कि सर्ब प्रथम पं० महाबोर प्रसाद द्विवेदी जी ने खड़ी बोली की कविता लिखने की ओर लोगों को प्रबृत एवं प्रोत्साहित किया।

उनका उत्तर था– बात तो सच ही कहते हैं क्योंकि वे ऐसा ही जानते हैं। यह सत्य है श्री महाबीर प्रसाद द्विवेदी जी ने स्वयं कविता लिखकर खड़ी बोली कविता का पथ प्रदर्शन किया है पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने कहा था कि खड़ी बोली कविता के लिए नहीं है, उसमें गद्य ही लिखा जा सकता है। उस समय बिहार के संथाल परगना के

निवासी— राज्य के निर्माता स्वर्गीय बाबू महेश नारायण जी ने स्वस्थ एवं प्राँजल भाषा में जिस गहन–गम्भीर बिचार को खड़ी बोली कविता में प्रगट किया है वह स्पृहनीत है। आज महाकवि निराला को मुक्तक छन्द का जन्म दाता कहा और माना जाता है। पर उनके बहुत पहले ही उन्होंने उस मुक्तक छन्द में स्वस्थ कविताएँ की थी। उस बाबू महेश नारायण जी को हिन्दी जगत के समक्ष लाने का श्रेय उमाशंकर को ही तो है।

किसी भी स्वस्थ बिषय पर कलम उठाने के बाद उसे स्वस्थ रूप में ले जाना आसान नहीं— पर उमाशंकर जी के लिए वह काम आसान है। अभी वह संथाल परगना में रहकर यहाँ की प्रसिद्ध आदि-बासी जाति "संथाल" पर एक पुस्तक— सन्ताल सरकार की रुपरेखा लिख रहे हैं। जैसा कि मैंने उसे देखा है प्रकाशित होते वह हिन्दी संसार के लिए अमूल्य वस्तु सिद्ध हुई।

सिलसिला तो टुटा नहीं था और मैंने फिर एक चुटकी ली हिन्दी साहित्य और भाषा में आप क्या परिष्कार -परिवर्द्धन और परि-वर्तन चाहते हैं? छेड़ना था और उनका जवाब हाजिर था!

"राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने के बाद हिन्दी के लेखकों के ऊपर कई उत्तरदायित्व आ गए हैं। हिन्दी में साहित्येता- साहित्य का यथेष्ट अभाव है उसकी पूर्ति होनी आवश्यक है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी में गौरव—ग्रन्थों का प्रकाशन होना चाहिए— जरूरी जो है- वह नहीं हो रहा हैं। प्रेमचन्द, प्रसाद, हरिऔध और मैथिली शरण गुप्त जैसे साहित्यकारीं का जन्म आज नहीं हो पा रहा है। यह एक

गम्भीर चिंता का विषय है । इसपर विचार होना चाहिए ।"

"हम साहित्य का विकास चाहते हैं—पर साहित्य-कारों की उपेक्षा कर देते हैं । बहुतेरे साहित्यकार जिनकी अर्चना होनी चाहिए उनकी चर्चा तक हम नहीं करते । क्यायह खेद की बात नहीं ?"

"हिन्दी के आलोचना- क्षेत्र में हिटलरी- मनोवृत्ति आ गई है । हिटलरी मनोवृत्ति से मेरा तात्पर्य है— हिटलर की दो धारणाओं से—असत्य को सत्य के रूप में प्रमाणित करना और सत्य को कभी स्वीकार नहीं करना और न उसके अस्तित्व को स्वीकारना । इनके लिए वह सबल प्रचार करता था । उसका कहना था कि एक असत्य को अगर सौवार दुहराया जाए तो वह सत्य की पूर्णतः परिधि में आ जाएगा । सत्य की उपेक्षा करो । आज हिन्दी की आलोचना में यही प्रवृत्ति आ गई है यही गुटवाजी है । एक गुट है जो अपने लोगों को ही उठाना चाहता है, चाहे वह कितना ही रद्दी और फिजूल की चीज ही क्यों न लिखता हो, फिर भी उसी की ही चर्चा वे करते हैं पर महाकवि पंत ऐसे विश्रुत कवियों की आज उपेक्षा होती है । पंत की 'युगान्त' के बाद दर्जनों पुस्तकें सामने आई हैं लेकिन उनकी किसी पुस्तक की चर्चा नहीं हुई — यह हिटलरी प्रवृत्ति का द्योतक है

हिन्दी भाषा में भी परिवर्द्धन की आवश्यकता है । भाषा के नामपर अनेक रूपता आ गई है । एक रूपता की आवश्य-कता है । दूसरी बात यह है कि भाषा को सरल और बोधगम्य बनाने की जरूरत है ।"

उमाशंकर जी के उल्लिखित विचारों से कोई भी सच्चा

साहित्यकार कतरा नहीं सकता। आज राजनीतिक गुटबाजी- साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कर उसे पंगु बना रही है और हिन्दी के विकास में रोड़े अटका रही है। जबतक हिन्दी के समर्थ लेखक आयेगें नहीं तबतक यह गुटबाजी बनी रहेगी और टुट पुंजिए साहित्यकार महासाहित्यकार बनकर जनता को बगलाया करेंगे। इस गंभीर समस्याओं पर हमें विचार करना लाज़िमी है।

श्री उमाशंकर ने पत्र-पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया है। एटा जिला से निकलनेवाला साप्ताहिक 'सुदर्शन' १९४०-४१ में अवैतनिक सम्पादक के रूप में संपादन किया है। उसके संपादकीय एवं संपादकीय टिप्पणियां काफी स्वस्थ मानी जाती थीं। दानापुर (पटना) से निकलने वाले पाक्षिक–पत्र 'साथी' का भी इन्होंने सम्पादन किया है। साथी निर्भीक एवं स्वस्थ बिचार-धारा का पत्र था। इतना ही नहीं स्कूल की छात्रावस्था में 'राम–मोहन राय सेमिनरी, पटना से निकलने वाला हस्त लिखिन मासिक—"साहित्यकार सखा" का प्रो० 'केसरी' के साथ सम्पादन किया है।

हिन्दीजगत के विभिन्न समर्थ, हिन्दी साहित्य की संस्थाओं के वे सदस्य हैं जिनमें प्रमुख है अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन और बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन। इनकी स्थायी समिति के वे पचीसों वर्ष से सदस्य हैं। इतना ही नहीं विभिन्न प्रकार की साहित्यिक एवं कला केन्द्रों के भी वे संस्थापकों में हैं जिनमें मुख्य हैं— प्रेमचन्द साहित्यि परिषद पटना, बिहार साहित्यकार संघ, पटना अयोप्रसाद खत्री अध्ययन मंडल, मुजफ्फर पुर तथा श्री महेश नारायण

शोध- संस्थान, दुमका । बिहार साहित्यकार संघ, पटना का स्थापना का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। यानि किसी न किसी रूप में आप बिहार की साहित्यिक एवं साँस्कृतिक संस्थाओं से संबंद्ध हैं— यह एक जिन्दा रहने की मार्मिक कला है।

लगभग ३० वर्षों से उमाशंकर जी बिना बिराम के साहित्य की खासकर हिन्दी साहित्य की सेवा आराधना कर रहें हैं। कितना धीरज है इनमें—उबना जानते ही नहीं। लिखना है इसलिए लिखते है और इसलिए भी लिखते रहना चाहते हैं कि उनकी मार्मिक व्यथा इसमें उलझी रहे। लिखने का यह व्यथा मोह सब में अगर हो, तो आज भारत का हिन्दी जगत कितना स्वस्थ एवं प्रांजल हो उठे !

जिस ससय गाँधी जी ने हिन्दी — हिन्दुस्तानी का झंडा उठाया और उसके पक्ष में अपनी आवाज बुलन्द की तो उस समय यह व्यक्ति निर्भिकता पूर्वक हिन्दी का सुनहरा झंडा अपने हाथों में उठाया और अविराम गति से हिन्दी के समर्थन में काम किया। इस हिन्दी—हिन्दुस्तानी के आन्दोलन में जमकर लोहा लिया और हिन्दी का प्रबल प्रचारक बनकर अपनी आवाज नहीं, राष्ट्र भारती की आवाज बुलन्द करते रहे। कोई इन्हें इससे डिगा नहीं सका और आज सौभाग्य की बात है कि भारत की राष्ट्र भाषा सगर्व हिन्दी है, न कि हिन्दुस्तानी !

अनुसंधानिक प्रवृत्ति कुछ ऐसी है कि मानो इसने उनके दिल-दिमाग में घर बना लिया है । सरकारी सेवा में रत रहकर भी अंग्रेज या यूरोपीय पदाधिकारियों की तरह अपना अनुसंधान कार्य जारी रखते हैं-- इस प्रवृत्ति को वे छोड़ नहीं सकते । जहाँ भी रहते हैं उसे बनाए रखते हैं, जिन्दा रखते हैं । गहन-गह्वर में पड़े उन हिन्दी साहित्यकारों को हिन्दी जगत के समक्ष ला बिठाने का श्रेय किसे दिया जाय--उन्हीं को न ! श्री राधालाल माथुर, श्री हलधर दास, अयोध्या प्रसाद खत्री, बाबू महेश नारायण, संत लक्ष्मी सखी आदि को आज हिन्दी जगत अपने सामने पा रहा है किसकी बदौलत ? यही है गड़े मुर्दे को कब्र से उखाड़ कर बाहर ला बिठाना !

मेरी कामना होगी कि भाई उमाशंकर जी जिस लगन से राष्ट्र भारती की सेवा कर रहे हैं--जिन मौलिक ग्रन्थों को हिन्दी जगत के समक्ष रख रहे हैं या रखेंगे, उस श्रोत को सदा बनाए रखें--श्रोत सूखने न पाए-- सरकारी चाकरी के चलते या घरेलू मसलों के चलते । यह कहावत सच है कि "पहले आत्मा तब परमात्मा"--तो परमात्मा की याद तो आवश्यक है ही और पेट भरना भी । चाकरी से पेट भर रहा है और साहित्य की सृजना ही तो परमात्मा को भजना है । इहलोक में इससे बढ़कर और कौन सा कर्म हो सकता है । गीता के इस वाक्य :—

" कर्मण्ये वाधिकारेषु मा फलेसु कदाचन् "

को सामने रखकर उमाशंकर भाई उपनिषद् के मंत्र चैरवेति, चैरवेति की तरह सदा आगे बढ़ते रहें।

———

मार्ग-प्रदर्शक साहित्यकार : श्री उमाशंकर

आचार्य श्री कुमुद विद्यालंकार

अध्यक्ष, बिहार साहित्यकार संघ, पटना।

श्री उमाशंकर जी उन साहित्यकारों में एक हैं, जिन्होंने सदा सदा ही राष्ट्र निर्माण को महत्व दिया है, जिन्होंने अपनी साधना से युगीन आवश्यकताओं की पूर्ति की है। कहना तो यह चाहिये, श्री उमाशंकर जी ने आदि से साहित्य के क्षेत्र में अपने कामों के सहारे अन्य साहित्यिकों के लिए मार्ग प्रदर्शन किया है। राष्ट्र और साहित्य की अर्चना के साथ साहित्यकारों की अर्चना का समन्वय इन्होंने स्थापित किया। हम तो उमाशंकर जी को उन साहित्यकारों में मानते हैं, जिन के द्वारा युग में नवीन मोड़ आता है। उन्होंने साहित्य संसार में अपने को प्रतिष्ठापित करने के साथ उन साहित्यकारों की प्रतिष्ठापना की है—जिन्हें लोग विस्मृति के गह्वर में डाल चुके थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास का रूप ही श्री उमाशंकर जी ने बदल दिया है। युग-युग के उपेक्षित, विस्मृत किन्तु नींव की ईटों का महत्व रखने वाले साहित्यकार—स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री को हिन्दी संसार का अभिनन्दन तब प्राप्त हुआ, जब उन्हें श्री उमाशंकर जी जैसे साधक की प्रणति प्राप्त हुई। स्वर्गीय महेशनारायण जी को खड़ी बोली और मुक्त छन्द के आदि कवि के रूपमें पेश करने वाले श्रीउमाशकर जी हैं। 'हिन्दी शब्द-कोष' के प्रथम प्रणेता मुन्शी राधालाल माथुर थे इस तत्व के उद्घाटन के साथ एक बार ही जैसे साहित्येतिहासकार आश्चर्य चकित रह गये। हमें कहना चाहिए कि श्री उमाशंकर जी हिन्दी

गगन के ज्योतिपुञ्ज हैं, जिसके प्रकाश में हमने अपना विस्मृत रूप देखा है। एक बार साहित्य-जगत की चर्चा करते हुए, स्वनामधन्य आचार्य श्री शिवजी ने कहा था— 'आज साहित्य लिखने वाले बहुत हैं, किन्तु ऐसे कितने हैं, जो साहित्यकारों को अपनी लेखनी का विषय बनावें। इस प्रसंग में आचार्य प्रवर ने श्री शिवनन्दन सहाय जी का स्मरण भाव-विह्वल होकर किया था। श्री शिवनन्दन सहाय जी प्रथम बिहारी साहित्यकार थे, जिन्होंने अपने समय में इस नई दिशा का संकेत किया था। आचार्य प्रवर को, उस परम्परा के अक्षुण्ण नहीं रहने का क्लेश था, किन्तु उस क्लेश की स्थिति में उन्होंने उमाशंकर जी का नाम सन्तोष के साथ लिया।

ऐसी कितनी ही स्मृतियों का सम्बन्ध अपनाया जा सकता है, किन्तु आचार्य प्रवर की भावना ही श्री उमाशंकर जी का मूल्यांकन करने के लिये यथेष्ट है।

तो, मैं साहित्य-साधना से लेकर श्री उमाशंकर जी के मधुर व्यक्तित्व और कर्मठ जीवन तक एक सीधी लकीर खींच सकता हूँ। कहानी, नाटक, समीक्षा तथा जीवन वृत्त हो नहीं, राजनीति एवं साहित्यिक निबन्धों की पर्याप्त सर्जना इनके द्वारा हुई है। इनकी लेखनी का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत रहा है। इन्होंने महिलाओं के लिए लिखा है, तो बच्चों के लिए भी, किसानों के लिए लिखा तो मजदूरों के लिए भी, विद्वानों के लिए लिखा, तो अर्द्ध साक्षरों के लिए भी। सर्वतोमुखी प्रतिभा का वरदान उन्हें प्राप्त है, इसमें संदेह नहीं। और तो और, महासचिव के रूप में बिहार साहित्यकार संघ का संचालन करते हुए, इन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि साधनहीन और सुविधा-विहीन वातावरण में भी किसी संस्था को

कितना कार्यशील बनाया जा सकता है। श्री उमाशंकर जी ने स्वीय ओज, चारित्रिक दृढ़ता और अविच्छिन्न साधना के बल पर ही साहित्यकार संघ को अन्तर प्रान्तीय ख्याति की संस्था बना दिया है।

"साहित्य की अर्चना का उपक्रम कर, यदि हम साहित्यकार को भुला देते हैं, तो हमें साहित्यकार कहलाने का कोई अधिकार नहीं है,' प्रथमवार श्री उमाशंकर जी ने अपना यह उद्घोष हिन्दी संसार के सम्मुख रखा। यदि हमारी आत्मा का सान्निध्य साहित्यकार से नहीं हो सका, तो हम न साहित्य का श्रृंगार कर सकेंगे, न राष्ट्र का ही ! कहना न होगा, वाणी के विलासी साहित्याकार एक बार इस प्रबुद्ध उद्घोष पर किंचित कुपित भी हुए किन्तु उन्हें सत्य को, प्रेय का और श्रेय का लोहा मानना पड़ा। जिन्हें लोग भूल चुके थे, जिन्हें लोग भूलते जा रहे थे—ऐसे महाप्राणों की अर्चना के लिए चारों ओर खलबली मची। श्री उमाशंकर जी का वर्तमान जितना यशपूर्ण है, भविष्य उससे कम महान नहीं सिद्ध होगा, यह निश्चित है।

"साहित्य के इतिहासकारों ने इतिहास लिखते समय बिहार के साथ न्याय नहीं किया है, यह कहना असंगत नहीं होगा। बहुत से साहित्यकारों को जिनका उल्लेख करना उन के लिए आवश्यक था, उन्होंने भुला दिया है। अधिकांश साहित्यकार उनके समकालीन थे, बहुतों को इन इतिहासकारों ने स्वयं देखा था, फिर यह कैसे माना जा सकता है कि उक्त इतिहासकारों को उनके सम्बन्ध में ज्ञान नहीं था ? यह बिहार का दुर्भाग्य था कि बिहार के किसी विद्वान ने हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं लिखा।"

—उमाशंकर

साहित्यकारों के प्रकाश स्तम्भ : श्री उमाशंकर

कविवर श्री हरेन्द्र देव नारायण

आज के इस युग में लोगों में यह सहज धारणा फैल गई है कि साहित्य के क्षेत्र में उतरना और यश-अर्जित करना बहुत ही सहज है। पर विज्ञ पुरुष ही यह जानते हैं कि साहित्य का पथ प्रलम्ब, कंटकाकीर्ण और दुर्गम है जिस पर जीवन भर चलते रहने पर भी यह कह सकना कठिन है कि लक्ष्य की प्राप्ति होगी या नहीं। साहित्यकार न केवल अपने युग के लिए लिखता है; वरन् वह अनागत मनुष्य-कुल के लिए भी प्रकाश- जाता है। प्रत्येक देश-काल में ऐसे साधक साहित्यिक हुए हैं जो ना यश-लिप्सा के अकथ परिश्रम करते जाते हैं और अबाध रूप से साहित्यिक रचनाएँ करते जाते हैं। ऐसे ही इने-गिने साहित्यकारों में श्री उमाशंकर का स्थान है जो विगत तीस वर्षों से आज तक नहीं थकनेवाले राही की तरह साहित्य के पथ पर चल रहे हैं।

आज से तीस वर्ष पहले जब उमाशंकर जी ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया तो उनमें साहित्यिक शक्ति के अतिरिक्त संगठनात्मक शक्ति भी देखी गई। उन्होंने प्रेमचन्द-परिषद् की स्थापना की और वे बिहार प्रांतीय साहित्य सम्मेलन के कार्य-संचालन में सक्रिय भाग लेते रहे। उमाशंकर जी द्वारा स्थापित प्रेमचन्द-परिषद् उदीयमान तरुण साहित्यकारों में जाग्रति लाने में समर्थ हुई और उन्हें हिन्दी प्रचार और साहित्यिक रचनाओं की ओर झुकाया! बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के आज वे सदस्य हैं और सम्मेलन-कार्य की सभी दिशाओं में सक्रिय

दिखाई पड़ते हैं। एक सरकारी पदादिकारी होते हुए भी साहित्य के लिए जैसे समर्पित जीवन हैं। उन्हें जिन लोगों ने साहित्य की चर्चा करते सुना और देखा है, वे साक्ष्य करेंगे कि किसी साहित्य विषय की चर्चा वे किस उत्साह से करते हैं। यों विहार की पुण्यभूमि में बड़े-बड़े साधक हुए और आज भी हैं। फिर भी उमाशंकर जी का अपना अलग व्यक्तिस्व है। उनके तथा कथिक अभिमानी व्यक्तित्व के नीचे एक निरभिमानी आत्मा है जहाँ करुणा, संवेदना की छटा है। जिस प्रकार राख के ढेर में आग छिपी होती उसी तरह उनके शांत व्यक्तित्व में साहित्य का अनुराग परिव्याप्त है।

उमाशंकर जी की साहित्यिक रचनाएँ तीन श्रेणियों में सहज ही बाँटी जा सकती है—पहली श्रेणी में उनके चिन्तन प्रधान निबन्ध हैं, जो जबतब साहित्यिक पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। दूसरी श्रेणी में ऐतिहासिक व्यक्तियों के संस्मरणात्मक शब्दचित्र हैं। तीसरी श्रेणी के निबन्धों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उमाशंकर जी एक अध्येता तथा साहित्य के विविध विषयों पर गम्भीरता से सोचते और लिखते हैं। उनका लिपि पर लिखा एक लेख इस बात का समर्थन करता है कि नागरी लिपि ही विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है। प्रेमचन्द पर अपनी लिखी पुस्तक में उन्होंने उनके व्यक्तित्व और साहित्य का गहरा अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनकी अन्तरदृष्टि प्रेमचन्द की शक्ति का विश्लेषण करती है और उसी की प्रतिच्छाया उनके उपन्यासों के पात्रों में वेखरती है। इस प्रकार के उनके साहित्य विचारोत्तेजक हैं जो कभी-कभी नई दिशाओं की ओर अनायास संकेत कर देते हैं।

दूसरी श्रेणी में उनके सैंकड़ों निबन्ध हैं। इतिहास के परिप्रेक्ष्य, अतीत के खंडहर में खड़े, व्यक्तियों का शव्दचित्र बहुत ही सफल हुऐ हैं। इन शब्दचित्रों की विशेषता यह है कि जहाँ व्यक्ति को हम सम्पूर्ण जान पाते हैं, वहाँ हम इतिहास की छटपटाहत और करवटें भी स्पष्ट देख पाते हैं। 'कलम-शिल्पी' के संस्मरण केवल व्यक्तित्व-दर्शन और जीवन-वृत्त नहीं हैं वरन् इतिहास के तथ्य हैं। किसी काल का इतिहास जब जगकर बोलने लगता है तो उस समय का सारा जीवन मुखर हो उठता है। पत्थर के टुकड़े को काट-तराश कर शिव की मूर्ति बनाना कलाकार का काम होता है। उमाशंकर जी ने वही काम इन संस्मरणों में किया है। उनके सभी संस्मरण युग ध्वनि पूरित हैं।

उमाशंकर जी में अनुसन्धान की प्रबल प्रवृत्ति है। वह जागरुक होकर उन तथ्यों को अथक खोजते रहते हैं जो कभी तक अप्रत्यक्ष हैं और विस्मृति की गुहा में सोये पड़े हैं। वैशाली का गणराज्य आज से २५०० वर्ष पहले यहाँ फलता-फूलता था। इस गणराज्य के पतन के लगभग तीन सौ वर्ष बाद ग्रीस में गण-राज्य (City states) और प्रजातंत्र की स्थापना हुई थी। ग्रीस के नगर-राज्यों की विकास-ह्रास कथा उस समय के समर्थ इतिहासकारों ने लिखी है। पर भारत में इतिहास लिखने की ऐसी परम्परा ही नहीं रही, ऐसा लगता है। वैशाली गणराज्य के तथ्यों के उपर विस्मृति का अन्धकार फैला है। इतिहासकार अब उनकी खोज कर रहे हैं। वैशाली के कुछ विस्मृत तथ्यों पर प्रकाश डालने की चेष्टा उमाशंकर जी ने की है और शीघ्र ही वैशाली पर आपकी शोध-पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है। साहित्य के क्षेत्र में भी जो तथ्य विस्मृति के

अन्धकार में छिपते जा रहे हैं, उनको प्रकाश में लाना वे अपना धर्म समझते हैं। विगत वर्षों में स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री की जन्म शती मनाई गई और उनसे सम्बन्धित अनेक निबन्ध यथ-अवसर आपके प्रकासित हुए। इन निबन्धों में खत्री जी के व्यक्तित्व और युग-प्रवर्त्तक कर्तृत्व के ऊपर पूरा प्रकाश पड़ता है। 'कलम के धनी' साहित्यिकों के संस्मरणों का संग्रह निकलने जा रहा है। यह पुस्तक प्रेस में हैं। इसमें साधक साहित्यिकों की कृतियों और उनका मनोवैज्ञानिक जीवन अध्ययन है।

साहित्य; राजनीति और समाज पर आपके और अनेक पुस्तकें है। जो गत तीस साल में लेखनी को कभी विराम नहीं देता रहा हो, उस साहित्य-साधक मनुष्य की सेवाओं को समझने की कोशिश होनी चाहिए।

साँवला लम्बा कद का मनुष्य, आँखें चमकती-सी, होंठ बराबर हिलते हुए-से, चौड़ा ललाट — ये हैं साहित्यकार उमाशंकर जी। ये रास्ते पर चलते हैं तो तेज, जब बोलते हैं तो तेज। जैसे गतिशीलता आपके जीवन उस प्रवाह जैसा हैं जो विराम नहीं जानता। आप का जन्म शाहाबाद में हुआ और आज आप सरकारी उच्च-पदाधिकारी हैं। मनुष्य आयेंगे और जायेंगे, पर प्रेरणा की लौ जलती रही हैं—जलती रहेगी। उमाशंकर जी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जा रहे हैं—बढ़ते जाएँगे—ऐसा बिश्वास है!

साहित्य-साधक : श्री उमाशंकर जी

श्री शारदा प्रसाद भण्डारी

कुछ वर्षों की बात है। रात हो चली थी, मैं आफिस में बैठा कुछ लिख-पढ़ रहा था।

इसी बीच में, मेरे सम्बन्धी श्री प्रजापति खन्ना, ऐम० ए० के साथ एक सौम्य-मूर्ति ओजपूर्ण आँखें लिए, जिज्ञासु-मुद्रा में कमरे में आयी।

उसने आकर पूछा, "क्या आप ही भण्डारी जी हैं।"

मैंने उनका अभिवादन कर कहा, "जी, हाँ।" उनकी मुखाकृति से मुझे यह मालूम हुआ कि मुझ से मिल उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

श्री खन्ना जी ने 'उमाशंकर जी' का मुझ से परिचय कराया और उनकी साहित्य-साधना का भी उल्लेख किया।

उमाशंकर जी ने कहा, मैं खड़ी बोली के प्रवर्त्तक स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री जी के सम्बन्ध में जानने आया हूँ।

मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं एक साहित्य-साधक से मिल रहा हूँ। मैंने उमाशंकर जी को फिर देखा। पाया साँवला शरीर, ओजपूर्ण जिज्ञासु आँखें, अस्तव्यत्त कपड़े, पावों में पुरानी चप्पल, हाथ में चश्मा तथा मन में अतीत की स्मृति लिए, बिहार के 'भूले-बिसरे' साहित्य-सेवियों को अन्धकार के गर्त्त से ढूँढ़ निकालने की लगन से ओतप्रोत। खत्री जी का नाम आते ही मेरी आँखों के सामने पुरानी बातें आने लगीं। मुझे खत्री जी के सम्बन्ध में जितनी बातें मालूम थीं, मैंने उमाशंकर जी से कहना आरम्भ जिया।

वे ध्यानपूर्वक सुनते रहे–सुनते रहे। वे अत्यन्त विह्वल दीख पड़े मानों उन्हें कोई निधि मिल गयी हो। किसी दूसरे दिन इस प्रसंग में फिर बातें करने का वादा कर वे चले गए। मैंने देखा, उनकी आँखों में आनन्दाश्रु बह रहे थे।

कुछ दिनों के बाद वे मुझ से फिर मिले। मालूम हुआ हम दोनों वर्षों के मित्र हैं। आत्मीयता पराकाष्ठा पर थी।

मुझे उनकी आँखों में, मानो विस्मृति के गर्भ में सोये साहित्य-कारों एवं कलाकारों की सजीव मूर्तियाँ देखने को मिलीं। मैं स्वयं भाव-विभोर हो उठा।

खत्री जी के सम्बन्ध में मेरी सारी बातों को वे ध्यानपूर्वक सुनते रहे, कुछ लिखते रहे, और अन्त में उन्होंने मुझ से यह आग्रह किया कि मैं खत्री जी का एक शब्दचित्र अंकित करूँ। उमाशंकर जी का प्रेम और आग्रह इतना जबर्दस्त था कि मुझे 'शब्द-चित्र' लिखना पड़ा जिसे देखकर वे फूले नहीं समाए।

उमाशंकर जी की वाणी में ओज है, लेखनी में बल है और है उनकी सौम्य-मूर्त्ति में इतना आकर्षक है कि उनकी नजर जिन-जिन साहित्य-प्रेमियों पर पड़ी वे सभी उनके रंग में रंग गये।

उमाशंकर जी में वह शक्ति है कि वे अतीत के गर्भ में विलीन साहित्यकारों की स्मृति को सजीव कर, उन से, लोगों का अपनी सरल-भाषा में परिचय कराते हैं।

अयोध्या प्रसाद खत्री मुजफ्फरपुर नगर के निवासी थे पर वर्त्तमान पीढ़ी के लोग उन से सर्वथा अनभिज्ञ - अपरिचित रहे हैं।

उमाशंकर जी श्रेय है कि उन्होंने विस्मृत खत्री जी को पुनः 'जीवित' कर हिन्दी-संसार के समक्ष खड़ा किया।

उमाशंकर जी एक महान साहित्य साधक हैं। उनमें साहित्यि-कता कूट-कूट कर भरी है। उनमें पढ़ने-लिखने का काफी शौक है जिसे व्यसन कहूँ तो अत्युक्ति न होगी।

साहित्यिक-प्रसंगों को छेड़कर, लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सिद्धहस्त और सरकारी नौकरी करते हुए साहित्य-साधना में तल्लीन रहना यह उमाशंकर जी जैसे व्यक्ति के लिए ही सम्भव है।

बच्चों जैसा स्वभाव तथा अज्ञात को जानने की बलवती इच्छा लिए उमाशंकर जी का व्यक्तित्व इतना सहृदयतापूर्ण है जो सभी को अपनी ओर बरबस खींच लेता है।

जिस बात के पीछे पड़े उसे पूरा कर के ही छोड़ना उमाशंकर जी का धर्म रहा है जैसे।

श्री उमाशंकर जी को लिखने का क्रम यह है कि वे जिसके सम्बन्ध में लिखते हैं या लिखेंगे उसके सम्बन्ध पूरा छान-बीन कर के जानने योग्य बातों को पता लगाकर ही आगे बढ़ेंगे।

इस लिए उनकी कर्मठ लेखनी में प्रचुर प्रमाणिकता है। वे रोशनी ले कर अंधेरे में पड़े हुए साहित्य-सेवियों को ढूँढ़ निकालने की लगन लिए लोगों से मिलना चाहते हैं—यह है उनका उद्देश्य।

आज उमाशंकर जी के सद्प्रयत्नों से 'बिहार के संत साहित्यकार' जिन्हें हिन्दी-संसार भूल गया था, पुनः हिन्दी-संसार के समझने आए हैं।

खड़ीबोली के प्रवर्त्तक अयोध्या प्रसाद खत्री, खड़ीबोली के प्रथम कवि महेशनारायण, तथा मुन्शी राधालाल माथुर, कीर्ति नारायण आदि अन्य साहित्यकार जिन्हें लोग भूल गये थे, पुनः उमाशंकर जी के प्रयत्न एवं उत्साह से लोगों से वे परिचत हुए हैं। बिहार की उन बिसरी विभूतियों से परिचय प्राप्त कर सभी कृतार्थ हुए।

भगवान 'उमाशंकर' को लम्बी उम्र दें कि वे भारती की सेवा करते हुए, साहित्य सेवियों की समाधि पर श्राध्य के दो-फूल चढ़ाने की प्रेरणा सभी को देते रहें।

"इतिहास आज तक यही माना जाता है कि वह राजनीतिक घटनाओं की कहानी है। मानवी क्रियाओं में उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं था। पर आज इतिहास का मूल्य बदल गया है। उसका दृष्टिकोण बदल गया है। इतिहास की नवीन स्थापनाएँ है। उसका आज का मानवी क्रियाओं से प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो गया है। आज तो ऐसी स्थिति है कि उससे अलग होकर इतिहास लिखा ही नहीं जा सकता। मिट्टी आज इतिहास का आधार है, धरती के लाल उसकी प्राणशक्ति है। उन्ही को लेकर आज इतिहास उजागर हो रहा है।"

—*उमाशंकर*

श्री उमाशंकर : एक साहित्यिक व्यक्तित्व

डॉ० महेशनारायण

भाई उमाशंकर जी से 'कब और किन' परिस्थितियों में मेरा परिचय हुआ यह अब ठीक-ठिक याद तो नहीं पड़ता पर ऐसा लगता है हम प्रथम बार सन् १९३७-३८ के मध्य ही मिले थे। १९३८ में राहुल जी की अध्यक्षता में हुए बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के राँची अधिवेशन में वे साथ जा तो नहीं सके। मेरे लौटने पर मुझ ही से वहाँ का हालचाल उन्होंने सुना था।

मेरे पास डॉक्टर पट्टाभिसीतारमैया लिखित कांग्रेस का इतिहास था। यह चाहता था कि इसे लेकर कोई विद्यापति की पदावली मुझे दे देता, क्योंकि उस समय वह पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। भाई उमाशंकर जी ने यह सहृदयता दिखलाई। आज मेरे पास विद्यापति की पदावली की जो प्रति है वह उन्हीं की दी हुई है।

तब सप्ताहिक 'योगी' का सम्पादन करने हेतु नेपाली जी पटने ही रहा करते। हम दोनों साथ-साथ उनके पास जाते। उमाशंकर जी उन दिनों आई० ए० में पढ़ रहे थे। 'योगी' में अन्तर्राष्ट्रीय शासन पद्धति पर उनके लेख धारावाहिक रूप से प्रकशित होते थे। मेरे घर के पास महेन्द्रू महल्ले में अपने बड़े भाई के साथ वे रहा करते थे जो उन दिनों वहीं शिक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे।

हम दोनों ने मिलकर महेन्द्रू में विद्यापति साहित्य परिषद् की नींव डाली जिसके अध्यक्ष कविवर नेपाली जी थे। उन्ही दिनों राहुल जी छपरा में बकाश्त जमीन के सत्याग्रह के सिलसिले में जमींदार की लाठियों

से आहत हो जेल में दाखिल हुए। हम लोगों ने नेपाली जी की अध्यक्षता राहुल दिवस मनाया था जिसमें प्रमुख वक्ता जयप्रकाश जी थे। वे सभा में टमटम से ही आये थे जिसका तब पटने में बहुत ही प्रचलन था जो अब कम हो गया है। और भी कई सभाएँ परिषद् द्वारा की गईं। हम दोनों भाई ही संयुक्त मंत्री थे।

उमाशकर जी की एक विशेषता मैंने यह देखी कि साधारण पठित जनसाधारण में से ही वे कार्यकर्त्ता चुन लेते हैं जो बड़ी मुस्तैदी से काम करते और उनके प्रति बहुत आदर भाव रखते हैं। लक्ष्मी जी एक ऐसे ही कार्यकर्त्ता थे। मिठाई की उनकी दूकान थी। खादी पहनते थे। मिटिंग इत्यादि जब हम करते तो दरी कालीन चादर चौकी मसनद-माला का प्रबंध उन्हीं पर रहता और हम लोग निश्चित रहते। उनके दूसरे सहयोगी थे। रामकृष्ण जी जो पीछे सेक्रेटेरियट में चले गये।

पटना सब्जीबाग मुहल्ले में एक देवीजी का मंदिर हैं, जिसके ऊपर एक साईनबोर्ड टंगा है 'उदयकला मंदिर'। उसका और प्रेमचन्द-परिषद् का कार्यालय उसी भवन में हैं। दोनों संस्था के निर्माण में उमाशंकर जी उसके मंत्री बैजनाथ जी थे जिनका तम्बाकू के पत्तों का कारबार होता था। उमाशंकर जी जब वहाँ शाम को कचहरी से आये तब-तक मिटिंग का कोई प्रबंध नहीं हुआ था। इन्होंने आते ही निर्देश देना शुरू किया। सामान और श्रोता जुटने लगे। निश्चित समय पर सभा आरम्भ हुई जिसमें अच्छे साहित्यिक और कविगण पधारे। रविवार का दिन था। सभा १० बजे रात को हम लोग शास्त्री जी को अग्नि संस्कार कर घर वापस आये। दूसरे दिन सुबह को नवराष्ट्र साढ़े नौ बजे समाप्त

हुई। उमाशंकर जी के आदेश से सभा की रिपोर्ट लेकर मैं ही 'इण्डियण नेशन' और आर्यावर्त्त कार्यालय गया मैंने देखा, साहित्यिक गतिविधियों की यथा समय समाचार पत्रों में सूचना दी जाय इस ओर से वे और लोगों की भाँति उदासीन नहीं रहते। पीछे यह भी मालूम हुआ कि वे उदयकला मंदिर के कलाकारों के साथ दिल्ली गये थे। प्रमाणस्वरूप राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के साथ लिया गया एक ग्रुप फोटो भी मुझे दिखाया गया।

हमेशा हड़बड़ी में ही आप को पाया। कपड़े अस्तव्यस्त खूब धुले भी नहीं, बढ़ी हुई दाढ़ी, पालिश-विहीन जूते या चप्पल, सूखे बिखरे से केश। नजर मिली न कि पुकारा। साथ लिया। अगर जाने की स्थिति में नहीं रहा तो खुद ठहर गये। बिना भर जी बतियाये रहते नहीं। कौन कहां है, क्या कर रहा है, क्या लिख रहा है, किस मकान में रह रहा है; वहां किस गली से होकर जाया जा सकता है—इसकी आद्यतन जानकारी। उठते-बैठते सोते जागते हिन्दी की ही चिन्ता। चौथे साल देवव्रत जी की जीप-दुर्घटना में मृत्यु हुई हम दोनों उनकी अर्थी में साथ-साथ श्मशान घाट, बासघाट गये। उठाया तो उनपर सात कलथों का लेख उमाशंकर जी का एवं सूचनाओं से परिपूर्ण देखा। मैं अक्सर उनसे कहता हूँ, साहित्यिक सूचनाओं की यह झोली पहले भारतेन्दु बाबू-हरिश्चन्द्र और संत तुलसीदास की प्रथम प्रामाणिक जीवनी लेखक श्री-शिवनन्दन सहाय के पास रही। उनसे आचार्य शिवपूजन सहाय जी ने प्राप्त किया। अब इस जीवित विश्वकोश पर आपका ही पूर्ण अधिकार है।

आप प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकारों पर शोध कार्य के निमित्त सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। खड़ीबोली कविता के उन्नायक अयोध्या प्रसाद खत्री, भारतेन्दु-सखा पटना निवासी श्री राधालाल माथुर एवं बिहार निर्माता स्वर्गीय महेश नारायण पर जो आपके कार्य हुए हैं उसे भावी पीढ़ी चकित होकर देखेगी कि एक ऐसा धुन का पक्का साहित्य-कार हमारे बीच पैदा हुआ था जो गड़े मुरदे से भी काम का मसाला निकाल कर इतिहास का निर्माण करता था।

पटने से बदलकर जब आपके दुमका जाने की बात पक्की हुई तो मैंने उन्हें सलाह दी बदली रुकवाने की, क्योंकि मेरा ऐसा विश्वास था कि वहां पर साहित्यिक वातावरण का सर्वथा अभाव होगा, हमलोगों से भी ये बहुत दूर हो जायँगे अतः इनकी साहित्य-सेवा का काम ठप पड़ जायेगा। पर अब ऐसा सोचता हूँ कि अगर आप दुमका नहीं गये होते तो महेश नारायण शोध संस्था की नींव नहीं पड़ती, संथाल और संथालपरगने के छिपे इतिहास पर कौन प्रकाश डालता ?

भगवान ने आपको विलक्षण प्रतिभा और बुद्धि दी है। धुन का ऐसा पक्का साधक देखने में नहीं आता। आधुनिक साहित्य के इतिहास में जिन प्रमुख साहित्यकारों नाम छूट गए हैं इन्हें प्रकाश में लाने का ध्येय आपके। हिन्दी—साहित्य का बहुत सा इतिहास विस्मृति के गर्भ में पड़ा है। ऐसे बहुत से साहित्यकार हैं जिन पर अभी तक कोई कार्य ही नहीं हुआ है, तथा उनकी बची-खुची सामग्री नष्ट-प्राय: होने की अवस्था में पड़ी है। अनुसंधान और शोध-सबन्धी कार्य करने की जो क्षमता भाई उमाशंकर जी में वर्तमान है, वह बेमिसाल है। बिहार

सरकार यदि उन्हें ट्रेजरी ऑफिसर के झंझटमय कार्य से हटा कर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के अनुसंधान विभाग में कार्य करने की सुविधा प्रदान करे तो हिन्दी-साहित्य का बहुत बड़ा उपकार हो। ४६ की अवस्था होने पर भी कार्य क्षमता आपकी पच्चीस के नवयुवक को चुनौती दे सकती है। भगवान से प्रार्थना है, हमारा यह तपस्वी साहित्यकार लम्बी आयु और स्वस्थ शरीर पाये तथा जब आपकी शताब्दी जयन्ती मनाई जाय उस समय भी उसके संयोजक मुझे उसमें भाग लेने का निमंत्रण देना न भूलें।

" बिहार हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश है। इसी प्रदेश में संताल परगना जिला स्थित है। अत: यह जिला भी हिन्दी भाषा भाषी है। पर इस जिले में भाषा और लिपि के लिए जैसा संघर्ष हुआ है वैसा किसी अन्य जिला में में नहीं हुआ है। बिहार में राष्ट्रभाषा के लिए जो अन्तिम आन्दोलन हुआ है, उसमें मेरा सम्बन्ध रहा है। हम लोगों के सामने संताल परगना का कई बार आया था। संताल परगने में लिपि के प्रश्न को लेकर कई बार हम लोगों को संघर्ष करना पड़ा था। सन् १९३९ में रोमन लिपि का प्रश्न उठा था। निरक्षरता-निवारण समिति ने यह निर्णय किया था कि संतालों में पढ़ाने के लिए जो आरम्भिक पुस्तकें तैयार करायी जायँ, वे सब रोमन लिपि में छापी जायँ। सरकार के इस निर्णय का विरोध प्रादेशिक हिन्दी साहित्य-सम्मेलन में हमलोगों ने किया। सरकार के सामने हमलोगों ने एक संकट उपस्थित किया था "

—उमाशंकर

सहज साहित्यकार : श्री उमाशंकर

लेखक:—धर्म्मपाल 'हिमांशु'

कविगुरु रविन्द्र नाथ ने एक गीता लिखा था वर्षों पहले :—

'केनो रे तोरऽ दु हात पाता, दान तो ना चाइ, चाई जे दाता !

सहजे तुइ दिबि जखन, सहजे तुइ सकल लबि ओरे मन सहज हऽबि !!

अरे ओ मेरे मन ! क्यों तूने दोनों हाथ फैला रखे हैं ? हमें दान नहीं, दाता चाहिए। जब तू सहज ही दे सकेगा, तभी सहज ले भी सकेगा।'

अपने को सहज भाव से दे देने की योग्यता, कठोर तप और संयम से प्राप्त होती है। कबीरदास को तुलसीदास को, हरिश्चन्द्र को और प्रेमचंद को यह योग्यता प्राप्त थी क्योंकि उनलोगों ने यह समझ लिया था कि जो जितना ही निःशेष भाव से दे सकता है, वह उतना ही सहज होता है।

प्रेमचंद के बाद निश्चयरूप से सहज भाव से रीता हो जानेवाला यदि कोई साहित्यकार हुआ है तो वह हैं उमाशंकर ! इतना बड़ा दाता किसी ने देखा है ! साहित्य की कौन-सी विद्या है जिसपर आपकी लेखनी न उठी हो।

सावन के घटाटोप काले बादलों से भरे आसमान की कल्पना कीजिए। जल के भार बोझिल बादल बरस ही उठते हैं। उसी तरह श्री उमाशंकर जी के दिमाग में कहने लायक इतनी सारी बातें हैं कि वे किसी न किसी तरह प्रकार में बंधकर धक्का-मुक्की करके निकलना चाहती हैं कि उन्हें बिना प्रकट हुए वे रह ही नहीं सकते ! यही उनकी अपारसीम

विवशता कि बस उन्हें लिखते ही रहना पड़ता है अनवरत, चाहे वे स्वस्थ्य हो या अस्वस्थ्य, लेखनी निर्बाध, अप्रतिहत भाव से चलती ही रहती हैं और रहेगी—'चरैवेति, चरैवेति'।

इस सहज साहित्यकार का जन्म १९२० में हुआ और लेखन कार्य शुरू हुआ १९३३ में। जन्म और सहज भाव से रीते होने की प्रक्रिया में सिर्फ तेरह वर्षों का ही अन्तराल है यह वह यात्रा थी जिसे राम ने बचपन में ही शुरू की थी जिनके चरणस्पर्श से शिलीभूत अहल्या मानवी हो उठी थी। श्री उमाशंकर की इस यात्रा में अयोध्या प्रसाद खत्री, बाबू महेशनारायण, कीर्ति नारायण, अवध बिहारी सिंह 'बेदिल' जाने कितने शापग्रस्त, शिलीभूत 'अहल्याएं' मानव हो उठे हैं। मैं तो कहना चाहूँगा कि जिस तरह चरित्रवान् व्यक्ति को ढूँढ़ने के लिए ही आदिकाव्य रामायण का जन्म हुआ था, उसी तरह साहित्य में 'गौण चरित्रों' अथवा शापग्रस्त अध्याय, उपेक्षित व्यक्तियों की मुक्ति या अनुसंधान के लिए ही श्री उमा-शंकर जी का जन्म हुआ है।

सासाराम हाई स्कूल का एक छात्र इतना बड़ा लेखक कैसे बन गया इसकी भी कहानी विचित्र है। उक्त स्कूल में 'तुलसी जयन्ती' के अवसर पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था जिसमें उनका निबन्ध प्रथम आया और जीवन की पहली साहित्यिक सफलता ने उनमें साहित्य के तरफ अभिरुचि पैदा कर दी। उनका वह प्रथम सफल लेख आरा के 'हितैषी' पत्र में प्रकाशित हुआ था।

इतिहास के प्रति इनके मन में जो एक अविजानित पुलक भरा आकर्षण है उसका सारा श्रेय इनके अग्रज को है जो स्वयं इतिहास के बड़े मर्मज्ञ थे। यह इतिहास-प्रेम उन्हीं का जगाया हुआ है।

शायद बहुत कम ही लोगों को यह बात मालूम हो कि श्री उमाशंकर जी की धार्मिक या सामाजिक मान्यताएं 'आर्यसमाज' के बहुत ही निकट हैं। 'आर्यसमाज' की मुख्य मान्यताएं 'ॐ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' या सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामय, यो भद्राणि पश्यन्तुमाकश्चित् दुःखमाग्भवेत्—या ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्नसुव।'— से बहुत ही मेल खाती है जो जीवन में भद्र है, आर्य है, संस्कृत है, जिससे सभी दुःखमुक्त हों जिससे शोषण का अन्त हो, वही जीवन की दार्शनिक उपलब्धि है।

आर्यसमाज के प्रति उनका झुकाव स्वामी भवानीदयाल संन्यासी के सम्पर्क में आने से हुआ। सन् १९३२ में जब नमक आन्दोलन चलरहा था उसी समय स्वामी जी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए जन समुदाय को आह्वानित किया। श्री उमाशंकर जी के बाल मानस पर इसका काफी असर हुआ और उन्होंने तत्क्षण ही अपनी नई सिल्क की कमीज अग्नि को भेंट कर दिया जो उन्हें अपनी भाभी से मिली थी। जिसने देखा वह आश्चर्य चकित हो उठा कि यह कौन होनहार और भास्वर प्रतिभा का बालक हैं! उस समय वे केवल दस वर्षों के ही थे।

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ने अजितनारायण सिंह 'तोमर' को एक पत्र में श्री उमाशंकर जी के बारे में लिखा था कि 'संस्थाओं में आदमी पाए जाते हैं पर कुछ ही व्यक्ति को संस्थाएँ पाती है! उमाशंकर व्यक्ति नहीं संस्था हैं।'

वैसे तो श्री उमाशंकर जी के साहित्य की सम्पूर्ण चर्चा तो स्वतंत्र रूप से एक 'थीसिस' का विषय है फिर भी उनकी एक सबसे महत्व पूर्ण कृति है जो बिल्कुल अनोखी और अकेली है जो उन्हें कवि दिनकर की

कोटि का बना देती हैं। वह है उनका गद्य में लिखा प्रतिरक्षात्मक साहित्य 'चीन का खूनी पंजा'। श्री रञ्जनसूरिदेव ने विहार राष्ट्रभाषा परिषद् की पत्रिका के वर्ष ३ अंक—१ (अप्रेल १९६३) के पृष्ठ ६ पर स्पष्ट ही लिखा है कि अभी हमारे पास जो प्रतिरक्षात्मक मौलिक साहित्य गद्य और पद्य में उपलब्ध हैं, उनमें दो नाम विशेष उल्लेख्य हैं; पद्य-साहित्य में कविवर 'दिनकर' की 'परशुराम की प्रतीक्षा' तथा गद्य साहित्य में श्री उमाशंकर का 'चीन के खूनी पंजे में' इतना दम नहीं है कि वह हिमालय को आत्मसात् कर लें। लेखक का नाम दृढ़विश्वास है कि चीनी अपने खूनी पंजे से हिमालय की तलहटी में खुद अपने लिए कब्र खोद रहे हैं। इस पुस्तक की उपयोगिता एक दूसरे अर्थ में भी इसलिए है कि यह दीन के रोमाँचक इतिहास के इस अंश को प्रस्तुत करती है, जो अद्यावधि रहस्यावृत्त था।'

इतिहास के विषय में श्री उमाशंकर जी जो मौलिक उन्भावना है वह इस तरह है कि 'इतिहास को मानव-क्रियाओं से असंतुष्ट करके नहीं देखा जा सकता। इतिहास के पांव धरती के यथार्थ पर रहते हैं जहां से उसका विकास होता है। इतिहास निश्चय ही 'मानवीय प्रगति' की ओर बढ़ने वाला एक क्रांतिकारी कदम है। तथ्यों से अभिलेख का निर्माण होता है और इन्हीं अभिलेखों से इतिहास अनुप्राणित और उद्भावित होता है।

ईश्वर उन्हें दीर्घायु रखे कि वे सरस्वती के मंदिर में अपने और भी निर्माल्य चढ़ा सकें—'शतम् जीवेत्।

प्रतिभा पुत्र-श्री उमाशंकर

श्री गोवर्द्धन प्रसाद सदय एम० ए०
संम्पादक—पंचायती राज पटना।

साधना के पंखों पर चढ़कर ही प्रतिभा को खिलने का अवसर मिलता है। इसके अभाव में बड़ी से बड़ी प्रतिभा भी भस्माच्छादित अंगारे की तरह दबी पड़ी रह जाती है। यदि साधना की लगन अटूट रहे, तो प्रतिभा की थोड़ी पूंजी से भी बड़ा काम चल जाता है और यदि अटूट साधना के साथ भरपूर प्रतिभा का योग रहा तो फिर कहना ही क्या? इस प्रकार के लेखक विरले ही मिलते हैं। कहीं प्रतिभा की पूंजी है, तो साधना की कमी है, और कहीं साधना में तल्लीनता है तो प्रतिभा की कमी ही पाँव पीछे घसीट लेती है। जिनमे दोनों पक्ष अपने आप में पुष्ट और सुष्ठ हों—ऐसे कलाकारों, साहित्यकारों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। श्री उमाशंकर जी हिन्दी के ऐसे ही सौभाग्यशाली लेखक हैं जिनमें अनवरत साधना-रत रहने की लगन तो है ही, साथ ही जिन्हें माँ भारती ने प्रतिभा का आशीर्वाद देने में भी कंजूसी नहीं की है।

श्री उमाशंकर जी ने न जाने कितने साहित्यकारों को अतीत के अन्धकार से निकाल कर इतिहास के ज्योतिर्मय कक्ष में प्रतिष्ठित किया है। आप प्रवृत्ति से एक अनुसंधायक हैं। शोध की दिशा में ही आप की साहित्यिक रुचि का विशेषतः प्रस्फुटन हुआ है। आचार्य शिव पूजन सहाय ने जिस प्रकार हिन्दी साहित्य के इतिहास में बिहार को गौरवमय स्थान दिलाया है उसी प्रकार श्री उमाशंकर जी ने भी अनेकानेक बिहार के ऐसे समर्थ लेखकों को प्रकाश में लाया, जो न केवल बिहार के थे, वरन् जिनकी ओर आज समस्त हिन्दी संसार आकृष्ट होने लगा है। श्री अयोध्या प्रसाद खत्री अथवा श्री महेशनारायण को अब हिन्दी का

कौन पाठक भूल सकता है ? इनके सम्बन्ध में श्री उमाशंकर जी ने इतनी सामग्रियाँ इकट्ठी कर दी हैं कि उनके प्रकाश में कोई भी सामर्थ्यवान अध्येता प्रमाणिक शोध ग्रंथों का प्रणयन कर सकता है। खड़ी बोली के प्रथम महाकवि के विषय में साहित्य का इतिहास अभीतक प्रायः मौन था। किसी भी इतिहासकार ने महेशनारायण का उल्लेख नही किया था। सर्वप्रथम श्री उमाशंकर जी ने ही लोगों का उस ओर ध्यान आकृष्ट किया और प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध किया कि खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम महाकवि श्री महेशनारायण ही हैं। इनके तर्कों में इतना बल तथा तथ्यों में इतनी प्रामाणिकता है कि आज सम्पूर्ण हिन्दी संसार ने श्री महेशनारायण को खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकवि स्वीकार कर लिया है। इसी प्रकार हिन्दी के प्रथम शब्दकोष के प्रणेता कौन इस बात पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा बाबू श्यामसुन्दर दास जैसे इतिहासकार भी मौन थे। श्री उमाशंकर जी ने काफी खोजपूर्ण तथ्यों के आधार पर सिद्ध किया है कि प्रथम शब्दकोष के प्रणेता मुन्शी राधालाल माथुर ही थे। साहित्येतिहास में श्री अयोध्या प्रसाद खत्री को अक्षुण्य स्थान दिलाने का श्रेय श्री उमाशंकर जी कों ही हैं, जिन्हे हम प्रायः भूल गये थे। उन्हे उमाशंकर जी। जीवन-दान दिया है। वे अमर हो उठे हैं। साहित्य के इतिहास में उनका अमिट स्थान हो गया हैं और उनके साथ ही, अब यह भी सत्य है कि श्री उमाशंकरजी ने भी इतिहास में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है।

श्री उमाशंकर जी की विशेषताओं में एक प्रमुख विशेषता यह हे कि वे प्रायः सभी विषयों पर अधिकार पूर्वक लिखते रहे हैं। यह

निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि श्री उमाशंकर जी ने बहुत लिखा है, विभिन्न विषयों पर लिखा है और सब में उनकी गम्भीरता किसी से कम नहीं रही है। उनकी सभी रचनाओं में हमें उनके प्रतिभावान अध्येता और साधनालीन साहित्यकर के प्रांजल रूप का दर्शन होता है। साहित्य, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान कोई भी विषय ऐसा नही हैं। जिसपर उन्होंने कुछ लिखा न हो। इनकी अब तक ६० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पुस्तकों में उनकी ये पुस्तकें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं-प्रेमचन्द के चार उपन्यास (गोदान, सेवासदन, कर्मभूमि और रंगभूमि), प्रसाद के चार नाटक (ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु एवं स्कन्दगुप्त), कलम शिल्पी, अयोध्या प्रसाद खत्री: कृतित्व और व्यक्तित्व, बिहार के सन्त-साहित्यकार, कलम के धनी, बिहार में हिन्दुस्तानी, राष्ट्रभाषा का आन्दोलन, हमारे साहित्यिक नेता, प्रियप्रवास : एक अध्ययन, गुंजन : एक अध्ययन, अजातशत्रु : एक अध्ययन, निर्मला : एक अध्ययन, चित्रलेखा : एकअध्ययन, राज्यश्री : एकअध्ययन, आदि। चाणक्य, अशोक का न्याय, और शिल्पी उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। इन पुस्तकों से इनके अध्ययन की गहराई को पता चलता है। आज से लग भग २० वर्ष पूर्व जब वे २२-२३ वर्ष के एक विद्यार्थी थे, तभी उनके प्रेमचन्द के चार उपन्यास, प्रसाद के चार नाटक और बिहार में हिन्दुस्तानी नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुए थे। इन पुस्तकों के अध्ययन में उनके सुलझे हुए साहित्यिक दृष्टिकोण का हमे परिचय प्राप्त होता है।

इनकी राजनीतिक विषयों पर लिखी गई पुस्तकें भी कम नही हैं। ऐसी पुस्तकों में गान्धीवाद का एक्सरेज, ग्राम-स्वराज्य, भारत का संविधान

और उसका विश्लेषण, राजनीतिक विचार धारायें, नागरिक अधिकार नागरिक-कर्त्तव्य, बिहार में स्वतन्त्रता संग्राम एवं राजनीति से सम्बन्धित महापुरुषों की जीवनियों में राष्ट्रमूर्ति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, बिहारविभूति डाक्टर अनुग्रह नारायण सिंह, बिहारकेशरी डाक्टर श्री कृष्ण सिंह, बिहार के निर्माता, बिहार के राष्ट्रीय नेता आदि ग्रन्थ लोकप्रिय हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय श्री उमाशंकर जी की दो-तीन ऐसी पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं, जो तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन की दृष्टि से काफी महत्व पूर्ण थीं। ये पुस्तकें हैं—खूनी जापान, खूनी हिटलर और खूनी जर्मनी। इन पुस्तकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है यद्यपि उस समय भारत स्वतन्त्र नहीं था तथा राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति जुर्म मानी जाती थी तथापि इन पुस्तकों का प्रणयन राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर किया गया था। यह तब की बात हुई, जब भारत परतंत्र था। आज भी जब हमारे स्वतन्त्र भारत पर संकट आ पड़ा है, चीनने हमारी अखण्डता, एकता और स्वतन्त्रता पर आघात किया है, हमारी उत्तरी सीमा तानाशाही चीन की सेना से पदाक्रान्त हो उठी है, ऐसे अवसर पर श्री उमाशंकरजी द्वारा लिखित एक विशेष पुस्तक, चीन का खूनी पंजा का विशेष उल्लेख करना चाहता हूँ। यह पुस्तक अपने ढंग की अनूठी पुस्तक है। इसमें लेखक ने चीन के दुष्टतापूर्ण मनसूबे का वर्णन किया हैं। साथ ही साथ भारतीय जनता को दृढ़ और कर्त्तव्य परायण बने रहने को उद्बोधित किया है।

कितना गिनाया जाय। अर्थशास्त्र, राजनीति, बल-साहित्य, महिलोपयोगी साहित्य, इतिहास, मनोविज्ञान, भूगोल आदि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जिन पर उमाशंकर जी ने नहीं लिखा है। इस छोटे से परिचय में उनके

विशाल साहित्य का आभास भी देना सम्भव नहीं है । फिर भी उनकी एक विशेष पुस्तक की ओर हम ध्यान आकृष्ट कराना चाहेंगे । यह पुस्तक है-हिन्दी साहित्य का अलिखित इतिहास । यह पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है । इस पुस्तक में लेखक ने साहित्य के इतिहास को नये सिरे से लिखने की अपेक्षा पर प्रकाश डाला है । अब तक के हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने कितने संकुचित दृष्टिकोण का परिचय दिया है, इन लोगों ने कितने महत्वपूर्ण एवं तथ्यपूर्ण घटनाओं पर परदा डालने की कोशिश की है, इनका ज्ञान तो हमें इस पुस्तक से ही हो जायगा साथ ही यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास को नये सिरे से लिखने की नितान्त आवश्यकता है । इस दिशा में यह पुस्तक अनुसन्धान कर्त्ताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी ।

श्री उमाशंकरजी इतिहास के विद्यार्थी रहे हैं' स्वभाव से ही इनकी प्रवृत्ति अनुसंधान की ओर विशेष रही है । इसलिए छोटे-छोटे निबन्धों में भी ये खोज के साथ एक-एक घटनाओं का संकलन करते हैं। फलतः इनकी रचनाओं में कल्पना का आधार कम किन्तु प्रामाणिक तथ्यो का निरूपण भरपूर रहता है ।

श्री उमाशंकर जी ने हिन्दी की सेवा जिस रूप में की है, और कर रहे है, वह निस्सन्देह स्पर्धा का विषय है । वह अभिनन्दनीय भी है । ईश्वर इनकी कारयित्री प्रतिभा की लौ सदा प्रज्वलित रखे, हमारी यही मंगलकामना है ।

कलम-शिल्पी—श्री उमाशंकर

श्री अजित नारायण सिंह "तोमर'
सचिव, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना

साहित्यकार युग का द्रष्टा, सृष्टा और साधक होता है। समय की छेनी से कट-छँट कर वह अनुभव की भव्य मूर्ति बन पाता है। सच्चा साहित्यकार दम मारने वाल नहीं। वह तो कलम का मजूर होता है। दुनिया देखे या न देखे, कोई उसकी परवाह करे या न करेअपनी साधना के पथ पर वह आगे बढ़ता जाता है। साधना विशेष कर अन्तर्मुखी होती है। इसलिए उसकी परख साधक के जोवन काल में कम, उसके जीवन के बाद अच्छो तरह हो पातो है। साहित्य के ऐसे ही सचवे साधकों में कलम शिल्पी श्री उमाशंकर जी का नाम कनिष्ठिकाधिष्ठित रूप में बड़े आदर के साथ लिया जाता है

उमाशंकर जी के निकट सम्पर्क में आए हुए एक युग से अधिक बीत गए। ऐसी दशा मे मेरी कलम से उनके विषय में जो बाते निकलेंगी वे अनुभव सिद्ध ही होगी। आपका जन्म शाहाबाद जिले के शुक्लपुरा नामक स्थान में १५ सितम्बर, १९२०ई० को हुआ। बचपन से ही आपका झुकाव साहित्य कीं ओर देखा जाने लगा 'होनहार बीरवान के होंत चीकने पात' श्री उमाशंकरजीं ने साहित्य की विभिन्न विद्याओं पर सामान्य रूप से कलम चलायी है।

हिन्दी-वाङ्मय कोसर्वाङ्गपूर्ण बनाने के लिए आप सतत सचेष्ट हैं। बालोपयोगी साहित्य को यदि लें तो ज्ञान की झोली और 'आश्चर्यवार्त्ता' नामक आपकी पुस्तकें नितान्त उपयोगीं सिद्ध होगी। महिलोपयोगी साहित्य कों ले तो 'दीदी के पत्र' घर की रानी, 'माता' आदि आपकी पुस्तकें महिलाओं के बड़े काम की सिद्ध होंगी। प्रौढ़ साहित्य की दिशा में आपकी प्रगति का क्या कहना ? क्या आलोचना, क्या राजनीति, क्या जीवन चरित्र, सर्वत्र आपकी बहुमुखी प्रतिभा का ज्वलन्त उदाहरण सामने नजर आएगा ! प्रसाद के चार नाटक, प्रेमचंद की निर्मला, 'प्रसाद की राज्यश्री" आदि रचना

आलोचना-साहित्य को परिपुष्ट करने के लिए प्रर्याप्त है। 'ग्राम स्वराज्य, राजनीतिक विचार धारायें' 'नागरिक अधिकार, नागरिक कर्त्तव्य आदि ग्रन्थों द्वारा राजनीति के विद्यार्थियों की बड़ी उपयोगी सेवाएँ आपने की है। जीवन चरित्र के सफल लेखक के रूप में आप इस युग में भारत के दो चार महान साहित्यकारों में से एक हैं। हमारे साहित्यिक नेता, हमारे राष्ट्रीय नेता, कलम-शिल्पी, श्रद्धा के फूल; बाबूसाहेब; राजर्षि आदि आपकी पुस्तकें जीवनी साहित्य को परिपुष्ट करने के लिए काफी है। परिणाम और परख दोनों दृष्टियों से आपने साहित्य की जितनी सेवा की है, वह किसीं एक आदमी के बूते की बात नहीं कही जा सकती ।

साहित्य की अर्चना से अधिक महत्व आप साहित्यकार की अर्चना को देते हैं। यही कारण कि समाज ने जिन्हें विस्मृति के गर्भ में गुम कर दिया था। उनकी सुधि आपनेली। कुछ लोंगों को लगा कि उमाशंकर जी गड़े मुर्दे को कहाँ न कहाँ से उखाड़े चले जा रहे हैं। पर 'जिन खोजा तिन पाइयाँ' की लोकोक्ति को चरितार्थ करने वाले उमाशंकर जी इससे डिगे नही आपने ही इस युग में सर्वप्रथम स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री, स्व० मुंशी राधा लाल माथुर, स्व० श्री महेश नारायण, स्व० श्री कीर्तिनारायण और श्री रूद्र प्रसाद आदि पुराने साहित्यकारों की धूम मचा दी है। बिहार ही नही पूरे भारतवर्ष में खत्री जी, महेशनारायण जी, मुंशी राधा लाल माथुर की जयन्ती मनवाने का एक मात्र श्रेय आपका ही है। उन्नीसवी सदी के इन साहित्यकारों की रचनाओं से भारत का साहित्यिक इतिहास गौरवान्वित है। मुंशी राधालाल माथुर हिन्दी शब्दकोष के प्रथम निर्माता थे। कचहरी में हिन्दीं प्रवेश कराने और स्कूलों में हिन्दी को स्थान दिलाने के प्रयास को हिन्दी के साहित्यकार भूले जा रहे थे। भारत के पत्रों में आपने ही उनका डंका पीटा। अयोध्या प्रसाद खत्री ने खड़ी बोली अन्दोलन को लगभग वही दिया जो स्वराज प्राप्ति के आन्दोलन को लोकमान्य तिलक द्वारा प्राप्त हुआ था। स्व० महेशनारायण को तो प्रयोगवादी कविताओं का प्रथम रचना-कार होने का श्रेय प्राप्त है। इसी प्रकार श्री कीर्तिनारायण और श्री रुद्र

प्रसाद अपने जमाने के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी थे। इन सबके जीवन वृतान्त और कृतित्व कों निबन्ध के रूप में प्रचारित कर श्री उमाशंकरजी ने आधुनिक युग के शोधकर्त्ता विद्वानों का बड़ा हितसाधन किया है। इस प्रकार बाल महिला, प्रबुद्ध साहित्यकार, प्रौढ़ आलोचकों, शोधकर्त्ताओं आदि सभी वर्गों के लिए प्रचुर साहित्य की सृष्टि कर उमाशंकरजी ने साहित्य की श्री-वृद्धि का भागीरथ प्रयत्न किया है। नाटक, कहानी, आलोचना, जीवनी, निबन्ध-साहित्य की कोई विद्या आपसे अछूती नहीं रही है। आपका व्यक्तित्व ही स्वयं साहित्य का जाज्वल्यमान प्रतीक है।

विविध विषयों पर निपुणतापूर्वक कलम चलाना टेढ़ी खीर है, किन्तु आपके लिए यह सहज सम्भव है। स्वयं अनुसंधायक, स्वयं लेखक और कई साहित्यकारों के निर्माता उमाशंकरजी के व्यक्तित्व के तीनों पहलू निस्संदेह अचम्भा में डालने वाले हैं! कठिन से कठिन किसी विषय पर पलक मारते निबन्ध तैयार कर प्रकाशित करा देना आप के लिये बाएँ हाथ का खेल है। मंचोपयोगी अभिनीय नाटकों की सृष्टि और प्रसाद, प्रेमचंद आदि साहित्यक मनिषयों के साहित्य की दो टेक आलोचनाओं में कोई तुक बैठता नही दिखता पर उमाशंकर जी इस कार्य को धडल्ले से करने में प्रवीण हैं। फासिस्टवाद, गाँधीवाद, सर्वोदयवाद आदि जैसी राजनीतिक गुत्थियों और महिलाओं के शील-शिष्टाचार सम्बन्धी सत्सलाहयुक्त साहित्य सर्जन के कार्य विरोधाभास से भले प्रतीत हों, पर उमाशंकरजी के लिये ये भी उतने ही आसान हैं। आपके द्वारा निर्मित साहित्य की आलोचना तो इस छोटे निबन्ध में संभव भी नहीं है अत एब उनकी चर्चा ही अलम है।

यह तो हुई रचना-पक्ष और ठोस साहित्य-सर्जना की बात साहित्यिक संस्थाओं के संगठन और प्रचार की दिशा में उमाशंकरजी की सेवा सराहनीय है। शताधिक साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना और सहस्राधिक साहित्यिक गोष्ठियों का सफल अयोजन आप कर चुके हैं। इन पंक्तियो के लेखक के सहयोग से ही आप ने प्रेमचंद साहित्य परिषद जैसी राज्य व्यापी संस्था का संगठन किया, जिसकी शाखाएँ राज्य भर के नगर-नगर में स्थापित हुइ।

इसकी देखा देखी में राज्य में सैकड़ो संस्थाएँ कायम हुई। १९४९ई० में सर्व प्रथम प्रेमचंदजी की जयन्ती एक सप्ताह तक मनायी गयी। उक्त जयन्ती समारोह में साहित्यिक गोष्ठी, कहानी गोष्ठी, निबन्ध गोष्ठी, पत्रकार गोष्ठी, कविसम्मेलन आदि का आयोजन किया गया। ऐसी सफल गोष्ठियाँ बिहार में शायद ही पहले हुई थीं। कवि सम्मेलन का आयोजन भी बड़ा सफल हुआ था। बिहार साहित्यकार संघ जैसी राज्य व्यापी संस्थाकी स्थापना का श्रेय मूलत: उमाशंकरजी को ही है। आपकी ही स्थापित छोटी-मोटी संस्थाओं में उदय कला मन्दिर, पटना का स्थान प्रमुख है। स्व० बिहार विभूति राजर्षि अनुग्रह नारायण सिंह जी ने उमाशंकर जी के प्रयास के फल स्वरूप ही इस संस्था का उद्‌घाटन किया था। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कला केन्द्र के खोलने में आपका बहुत बड़ा हाथ था। आप बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंत्रिमंडल में भी रहचुके हैं। इस प्रकार साहित्यिक संस्थाओं के संचालन के आदर्शमय कार्यों की जो उपयोगिता है वह साहित्यिक इतिहास के महत्त्व की वस्तु है।

हिन्दी और हिन्दुस्तानी का झगड़ा जब अपने पूरे जोर पर था उस समय भी बिहार में हिन्दी का झंडा ऊंचा करने वालों की अगली कतार में उमाशंकर जी नजर आते थे। राजकीय कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने की योजना आपने ही सरकार के सामने पेश की। आपके सुझावों को मानकर ही सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए व्यापक रूप से हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था की एक प्रकार से राष्ट्रभाषा आन्दोलन का अगुआ आप को कहा जा सकता है।

इन सब बातों से बढ़कर श्री उमाशंकरजी की निजी विशेषता यह है कि आपमें बड़े छोटे का भेद-भाव नहीं है। छोटे बड़े सभी साहित्यकारों के प्रति आपका सद्व्यवहार रहता है। आप सब से समान भाव से मिलते-जुलते हैं। यही कारण है कि आपकी कीर्ति में दिन-दिन चार चाँद लग रहे हैं। माँ भारती के आप वरद पुत्र हैं और भविष्य आपके सत्कर्म की प्रतीक्षा कर रहा है।

कलम-शिल्पियों का इतिहासकार—श्री उमाशंकर

लेखक:—श्री मधुकर सिंह

प्रधान मंत्री, शाहाबाद जिला साहित्यकार संघ

हंगामे और शोरगुल, अगल-बगल से गुजरनेवाले लोगों की चीख-पुकारें और उसके भीतर - भीतर चीखती पटना की अनेक शामें, जिन शामों का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता , इसी तरह निराश्रित और संघर्षहीन गुजर जाती हैं । ऐसे ही समय में एक साहित्यकार के साथ आप किसी कैफे में, होटल या दूकान में चाय पीते मिलेंगे, कॉफी पीते मिलेंगे, और उससे यह भी कहते सुनेंगे जब तक मेरे साथ एक भी साहित्यिक बैठकर चाय नहीं पीता, खाना नहीं खाता, तब तक मुझे कोई स्वाद नहीं मिलता और मेरे भीतर का साहित्यकार जाने क्यों बेपनाह होकर छटपटाने लगता है । जब भारी बारिश होगी, तब वह आपके दरवाजे पर खड़ा मिलेगा और आपको और कहीं नहीं तो, किसी कैफे में जरूर जाना होगा । वर्ना कौन भरोसा ? उस साहित्यकार की सृजनभरी रातें यों ही व्यतीत हो जायँ और सृजन पीड़ा के दायित्व से विमुख होने पर उसके अन्दर का साहित्यकार चीखने - चिल्लाने लगे ।

हवा में हाथ हिला-हिलाकर उसे यह भी कहते सुनेंगे, हिन्दी साहित्य का निष्पक्ष और प्रामाणिक इतिहास अभी तक नहीं लिखा गया। कौन जाने ? परन्तु ऐसा कहने वाला यही व्यक्ति है, जिसने साहित्यिकों की प्रामाणिक और शोधपूर्ण जीवनी प्रस्तुत कर साहित्य के लिये बहुत बड़ी बात कर दी है। अखबार का कोई भी पृष्ठ उलटिये, कोई भी साप्ताहिक -पाक्षिक उठाइये, आप जरूर कह देंगे, कलम शिल्पियों का इतिहासकार वही उमाशंकर हैं।

क्या आपको इन्होंने अभीतक नहीं बतलाया ? बिहार के प्रत्येक जिले का साहित्यिक इतिहास वे लिख रहे हैं और वह भारतेन्दु से लेकर आधुनिक काल तक का हिन्दी-साहित्य का इतिहास लगभग एक हज़ार पृष्ठों का होगा।

तब १५ सितम्बर १९२० के वे क्षण सृजन-कर्म के लिए तभी होंगे और तभी उमाशंकर का भी आविर्भाव हुआ होगा, वर्ना इतना बड़ा कर्म कैसे पूरा होता ?

क्षण-पर-क्षण बीते, उमाशंकर के क्रियाशील कदम उठते गये। कहते हैं, जहाँ-जहाँ कदम पड़े, एक सृजनात्मक आन्दोलन फूटा। कहते और हम, आप, सभी ने एक स्वर से मिलकर कहा—अब तक किसी ने भी इधर इशारा नहीं किया था। नई पीढ़ी के अन्तर्मन में तड़पती जो सृजन की भूख है, दौड़ पड़ती है, बेतहाशा। बुद्धिवादी के ऐसे क्षणों, स्थितियों और प्रतिक्रियाओं की वह सृजनात्मक जिन्दगी जहाँ संस्कृति के असंख्य अध्याय लिखे जाते हैं—सृजन-कर्म का आयात कहलाती है। यही आयात जब महत् बनने के लिए पूरी संस्कृति को

समेटते हुए ऐतिहासिक क्रमबद्धता प्रदान करता हैं तो साहित्यकार का जन्म होता है। साहित्यकार जीवन और सामाजिक मूल्योंमें ही कहींन-कहीं अवश्य जीता है। अगर कहीं नहीं हो तो इन मूल्यों को गढ़े कौन ? बदलते हुए मानवीय-मूल्यों की ओर फिर इशारा कौन करेगा ?

मैं ऐसा मानता हूँ कि साहित्यकार के साथ उसका अपना व्यक्ति कहीं नहीं होता, बल्कि युग और व्यक्ति की अनेक समस्याओं से उसका निजी लगाव होता है। समस्याओं के साथ की यही नजीता उसे जीने के लिए मजबूर करती है। उमाशंकर के जी की यही मजबूरी उनका सृजन-कर्म है।

साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा को समान ढंग से अभिव्यक्ति देकर अपने सृजनात्मक व्यक्तित्व (क्रिएटिव पर्सनेलिटी) को अक्षुण्ण रखना साहित्यकार की विशेषता है और यही विशेषता उमाशंकर की भी है। दर्जनों पुस्तकों की रचना द्वारा इन्होंने साहित्य के अधिकांश पक्षों, विधाओं पर विचार किया है। मूलतः सृजन-साहित्य (क्रियेटिव लिटरेचर) और आलोचना साहित्य (लिटरेचर औफ क्रिटिसिज्म) के अतिरिक्त इन्होंने साहित्य और साहित्यकार संबंधी जो इतिहास प्रस्तुत किया है, उसे मौलिक शोध कार्य कहा जा सकता है, जिस सूची में हिन्दी साहित्य के इने-गिने नामों की ही गुंजाइश होती है। फर्क इतना है कि उमाशंकर ने हिन्दी साहित्य के अलग-अलग कालों (पीरियड) अलग-अलग व्यक्तियों और उनके कृतित्वों पर विचार किया है।

लगभग १९३४-३५ का वह काल जब प्रेमचन्द संपूर्ण युग पर हावी

होकर प्रत्येक लेखक को अपने कर्म के प्रति काफी जागरूक कर चुके थे, उसी प्रेरणा के फलस्वरूप उमाशंकर ने 'माधुरी', 'सरस्वती', 'विशाल भारत' आदि के माध्यम से अपनी प्रतिभा के पंख खोले थे। प्रेमचन्द के सामाजिक सत्य के बीच से उमाशंकर ने दर्जनों कहानियां लिखी हैं, जिनका कला-पक्ष मूलतः रवीन्द्र और शरत् से प्रभावित था। इस तरह प्रेमचन्द का जीवन -दर्शन और रविबाबू का भावना पक्ष दोनों के सामंजस्य से उमाशंकर की कहानियां बनती हैं। और अद्‌भुत बात यह कि उमाशंकर के जीवन की घटनाओं और स्थितियों का इन कहानियों से गहरे ताल्लुकात हैं बल्कि उनके वास्तविक जीवन के "पैथोज" उनके कथ्य हैं जिसके अपने-अपने दायरे से कथानक के सूत्र पाठकों के अपने भीतर कहीं न कहीं अवश्य होते हैं। आज उनके पैथोज की कथात्मकता रुकी पड़ी है, अनायास ही वह मन के किसी आयत में सुस्ता रही है और रुझान की एक खास लीक बन गई है। आज-कल उनके मस्तिष्क में हर वक्त हिन्दी साहित्य और सांस्कृतिक गति, इतिहास के बिखरे हुए अलग अलग से अध्याय उनसे क्रमबद्ध करने के लिए मांग रखते हैं।

अपनी सृजनात्मक प्रतिभा के क्षणों में उमाशंकर ने आलोचना-साहित्य के क्षेत्र में 'प्रसाद के चार नाटक, और प्रेमचन्द के चार उपन्यास' आदि नामों से मील-पत्थर छोड़े हैं। सच कहा जाय तो मात्र 'कलम-शिल्पी' 'स्व० अयोध्या प्रसाद खत्री, नामक पुस्तकें इनकी प्रतिभा, मौलिकता और गत्यात्मक सृजनशीलता के मूल्यांकन के लिये पर्याप्त है।

रंगमंचीय प्रतिभा से भी उमाशंकर अछूते नहीं, 'चाणक्य' और 'शिल्प' उनकी नाट्य-कला के अभिनव प्रयोग हैं। सच तो यह है कि 'अशोक का न्याय, तीन महीने तक पटना के रंगमंच पर लगातार अभिनीत होता रहा, बल्कि दिल्ली, कलकत्ता, राजस्थान, काठमांडू, वीरगंज के रंगमंचों पर भी यह नाटक अपना भारी प्रभाव छोड़ गया है।

'बिहार साहित्यकार संघ' और 'प्रेमचन्द साहित्य-परिषद' की बुनियादें उमाशंकर की साहित्यिकता के व्यावहारिक पहलू होते हैं। भारत के प्रमुख समाचार-पत्रों, साप्ताहिकों और साहित्यचिन्तकों के जिज्ञासु-पत्र इसके साक्षी हैं।

'स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री' और 'महेश नारायण' सम्बन्धी उमाशंकर की गवेषणात्मक सूझ प्रशंसनीय भी है और अद्वितीय भी। खड़ी बोली के सूत्रधार कौन—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र या श्री महेशनारायण किन्तु कौन जानता है, आगे चलकर उमाशंकर की बात ही समस्त हिन्दी संसार द्वारा स्वीकार ली जाय। अभी तो हम उस विवाद से तटस्थ ही रहें, तो अच्छा।

जिसका व्यक्तित्व स्वयं एक संस्था हो और प्रतिभा अपना कार्यक्षेत्र, उससे भारी उम्मीदें रखी जाती हैं। कौन जानता है, एक हजार पृष्ठों में लिखा जाने वाला वह इतिहास हिन्दी साहित्य में तहलका मचा दे।

—o—

श्री उमाशंकर ईर्ष्या के पात्र

श्री परमानन्द दोषी
सम्पादक पुस्तकालय पटना

विगत पच्चीस वर्षों से साहित्य की साधना में निरंतर रत रहने वाले श्री उमाशंकरजी वैसे व्यक्ति नही हैं, जिनसे साहित्य-जगत को परिचय कराना है। शौक के रूप में साहित्य को स्वीकार करने वाले श्री उमाशंकरजी परिमाण और गुण, दोनों दृष्टियों से इतना कुछ साहित्यिक कार्य कर चुके है जितना व्यवसायी लेखकों से भी सामान्यतः संभव नहीं हो पाता।

सीधे-सरल स्वभाव वाले उमाशंकरजी का सारासमय साहित्य के लिये सुरक्षित हैं। राजकीय कार्यों से बचे हुए समय का सदुपयोग वह साहित्यिक कार्यों में ही किया करते हैं। अनुसंधान करना और लिखना और उसके बाद साहित्यिक गोष्ठियां करना साहित्यिक कार्य-क्रम बनाकर उनकी क्रियान्वितकरना — उमाशंकरजी का दैनिक कार्य है।

साहित्य की प्रायः सभी विद्याओं पर इन्होंने सफलता पूर्वक कलम चलाई है-नाटक, कहानी, आलोचना, जीवनी, निबंध-कोई विषय इन की लेखनी से अछूता नहीं। सामयिक विषयों पर कम से कम समय में अच्छा से अच्छा लेख तैयार कर देना इनकी निजी विशेषता है।

विषयों का वैविध्य और उन पर लिख सकने का नैपुण्य-ऊपर से असंभव सा दीख पड़ता है पर अपनी साधना और अध्यवसाय के द्वारा इन्हों ने इसे भी संभव कर दिया है। कहीं मंचोपयोगी अभिनेय नाटकों की सृष्टि, कहीं प्रसाद प्रेमचंद, पंत जैसे प्रख्यात साहित्य मनीषियों की दुरूह सरल कृतियों की स्पष्ट समालोचना, कहीं फासिस्टवाद से लेकर गाँधीवाद सर्वोदय जैसे राजनीतिक मतवादों की सरल व्याख्या, कहीं महिलाओं के शील, शिष्टाचार संबंधी सलाह से युक्त महिलोपयोगी साहित्य की सृजना, कही बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक तथा उपदेशात्मक साहित्य का प्रणयन, मौलिक कहानियोंका लेखन और कहीं

इतिहास के पन्नों से भी विलुप्तप्राय महापुरुषों के प्रेरक जीवन प्रसंगों उल्लेखनीय ऐतिहासिक घटनाचक्रों का तर्कसंगत उद्घाटन-इन सारे विषयोंके ओर-छोर एक दूसरे से असंबद्ध और दूर-दूर दीख पड़ते हैं, पर उमाशंकरजी के साहित्यकार के सब हाथों में सभी इस प्रकार इकट्ठे है, जिस प्रकार समर्थ सारथी के हाथों में विभिन्न अश्वों वाले रथ की अनेकानेकरासें होती हैं उसकी एक रास पर भी गलत संकेत पड़ा कि अश्व बिपथगामी हुए। उमाशंकरजी का साहित्यिक सारथी अपने विषयरुपी अश्वों को बिपथगामी नहीं होने देता, यह कम श्रेय और गौरव की बात नहीं।

विश्ववंद्य बापू के अन्यतम सहयोगी, राष्ट्रमूर्ति डा० राजेन्द्र प्रसाद के एक सहधमी और अपने समय के प्राय: सभी उल्लेखनीय राष्ट्रीय सेनानियों के सहधर्मी स्व० अनुग्रहनारायण सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व आज इतने जाज्वल्यमान रूप में हमारे सामने नहीं होते, यदि उमाशंकरजी ने उनसे अपने नैकट्य पूर्ण संपर्क का सदुपयोग बाबू साहब नामक ग्रन्थ प्रणयन में न किया होता।

खड़ी बोली के आन्दोलनकर्त्ता स्व० अयोध्या प्रसाद खत्रीं की साधना साहित्येइतिहास कीनिर्मम आंखों से ओझल ही रहती, यदि उमाशंकरजी ने एतत्सम्बन्धी प्रभावशाली आन्दोलन नहीं छेड़े होते।

राष्ट्रभारती के प्रथम महाकवि स्व० महेश नारायण हिन्दी के सर्व प्रथम शब्द कोषकार स्वर्गीय मुन्शी राधा माथुर तथा उन्हीं के सरीखे अन्यान्य साहित्यिक महारथी जो दुर्भाग्य वश साहित्य इतिहासकारों की पक्षपूर्ण दृष्टि अथवा आलसी एवं प्रमादी प्रवृत्ति के कारण विस्मृति के गर्भ में जा पड़े थे, उन्हें प्रकाश में लाकर साहित्य जगत के सम्मुख एक चमत्कारपूर्ण प्रश्न चिह्न खड़ा कर देना श्री उमाशंकरजी का ही कार्य है।

शताधिक साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना और सहस्राधिक साहित्यक गोष्ठियों की आयोजना के माध्यम से श्री उमाशंकरजी अद्यावधि जोकार्य करते रहे हैं, वे निस्संदेह ऐतिहासिक महत्व के हैं।

आज भी स्वतंत्रता-संग्राम का इतिहास लिखने वाले तथा साहित्यिक अनुसंधान करने वाले लोगों की परामर्श एवं पथ-प्रदर्शन प्राप्ति के निमित्त श्री उमाशंकरजी के इर्द-गिर्द भारी भीड़ लगी रहती है।

इन सारे कार्यों के अतिरिक्त प्रतिवर्ष अनेक पुस्तकों एवं सैकड़ों रचनाओं का पत्र-पत्रिकाओं में प्रणयण प्रकाशन संबन्धी इनकी क्रियाशीलता ईर्ष्यामूलक आश्चर्य में डाल देती है।

ोटे-बड़े सभी साहित्यकारों के प्रति इनका सद्व्यवहार उनसे अकृत्रिम भाव से मिलना-जुलना वह साहित्यकारोचित गुण है जिसका इन दिनों अन्य साहित्यकारों में सर्वथा अभाव पाया जाता है।

समासतः उमाशंकरजी का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों प्रशंसनीय है। मनुष्य के रुप में यह उतना ही सफल हैं; जितना साहित्यकार के रूप में।

—०—

"आज भारत पुनर्जीवन की बेला में है, भारतीय संस्कृति के उद्धार का अवसर है। इस अवसर पर हम यह कहना चाहते हैं कि अबतक हमारी धरती हरी भरी रही होती, तब तक हमारा जीवन न शान्तिमय होता है और तद प्रकाशमय आधा पेट मानव चोरी करता है, पाप करता है। चोर और पापियों से हम राज्य-संचालन नहीं कर सकेंगे। धरती के लाल आज रोटी के लिए वेहाल है। इसलिए यदि भारत फिर दुनिया की पक्तियों में बैठना चाहता है तो उसे पहले अपने उजड़े हुए खेत को हरा भरा करना है, जो गाँव बर्बाद हो गये हैं, उन्हें बसाना है, जो किसान वेकार हो गये है, उन्हें जीविका देनी है।

श्री उमाशंकर

अपनी प्रतिज्ञाओं में बँधे अकेले साहित्यकार श्री उमाशंकर

श्री राम तिवारी

मेरे लिये एक असुविधा है कि मैं किसी ऐसे प्रभाव से अलग खड़ा हूँ, जिससे साहित्यिक व्यक्तित्व निर्मित होते हैं। मैं जो कुछ कहूँगा वह आवाज प्राकृतिक होगी, तह से निकली—

उमाशंकरजी जन्मना लेखक हैं, कहीं से देखने पर पहले लेखक। अपनी बातों और रचनाओं—दोनों की अटपटी सिमेट्री में इस तथ्य को चाहकर भी ये छिपा नहीं सकते। ये जीवनसिद्ध लेखक हैं।

लेखक वही हो सकता है, जिसके पास कहने के लिए कोई बात हो और उसी बात को वह अपनी सभी रचनाओं में किसी न किसी रूप में कहता हो। जो कई तरह की बातें कई तरह से कहता है, वह असफल व्यक्ति है, लेखक का मनहूस रूप। सच्चा लेखक एक ही बात जीवन भर कई तरह से कहता है। उमाशंकर ऐसे ही हैं अविज्ञापित और मतविहीन—यह मेरे साथ सबकी पसन्दगी बहुत बड़ी चीज है। कितनों का भाग्य है, जो यह पसन्दगी पाते हैं। जो यह पसन्दगी पाते हैं उसे ओढ़कर नहीं चलते, उमाशंकर जी अपना लेखन ओढ़कर नहीं चलते। ओढ़कर चलते ही सारी भीड़ उनके पीछे होती।

उमाशंकरजी को इन विन्दुओं में देखना आसान नहीं है । एक-शोध के अछूते स्थलों को जोड़ने वाली सूत्र-दृष्टि में दो—एक निश्चित प्रभाव से बनी इतिहास–चेतना में, तीन—व्यावहारिक समीक्षा की प्रदोष मान्यताओं में और चार—सही, वास्तविक जन साहित्य के निर्माण में इन बिन्दुओं से जो छोटी और धुरीवत एक प्यारी रेखा बनती है, वही उमाशंकरजी का साहित्यिक अवदान है, वही साहित्यकार उमाशंकर है अपनी प्रतिज्ञाओं में बंधे अकेले साहित्यकार, जो मरण तक बंधे रहेंगे । तब जाकर हम इस रेखा को पहचान सकेंगे, इसके स्थापित मूल्यों का निबटारा आंक सकेंगे । अभी हम इस छोटी रेखा के समानान्तर खींची बड़ी रेखाओं की चमक से बेहाल हैं । चमक, हम सभी जानते हैं ।

मैं बिहार में किसी दधीचि को नहीं जानता, धुरीहीनों को जांचा हूँ । मैं उमाशंकरजी को जानता हूँ और एक ऐसे व्यक्ति को घुन को जानता हूँ, जिसकी अपनी धुरी है लेखन को अधिक से अधिकउपयोगी सार्थकताओं के करीब लाना, जिससे इतिहास और कल की कड़ियाँ जुड़ती हैं और तीखे सत्यों का खुरदुरापन समझ में आता हैं । उमाशंकरजी इसी से बने हैं, और यही करते हैं । मानता हूँ इसके लिये उनके पास कोई पैनी दृष्टि नहीं है, पर वह इसी से बने हैं और यही करते हैं यही एक बड़ी, ऊंची बात हैं । इस बात को जाने–अनजाने उन्होंने देख लिया है, हम कतरा, गये हैं । हम देखते भी तो उसे अहेतुक समझ मुंह बना लेते, उमाशंकरजी उसी से उजागर हैं ।

समर्थलेखक की कोई सीमा बाहर से नहीं होती—यह उसके आन्तरिक अनुशासन में होती है, जिससे वह अपनी नियति और कृतित्व को

पहली दफा तय करता है और दूसरी दफा में सामने दे देता है। उमा-शंकरजी की यह नियति है उनकी अप्रतिम लिक्खाड़ क्षमता, जिसको ये निजी तोष के स्तर पर बिना कामना के जीवित रखते हैं। यह क्षमता ही इनके कृतित्वों का निर्णय करती है, बारीक रेशों से उसे बुन देती है बुनने का कौशल उमाशंकरजी का अपना है, जिसे हिन्दुस्तान की सभी छोटी-बड़ी पत्र पत्रिकायें जानती हैं।

अब उमाशंकरजी की इतिहास चेतना शुरु करता हूँ। हिन्दी के इतिहास में अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध यानी हिन्दी खड़ी बोली के वास्तविक आरंभकाल का विकास क्रम करीब होते हुए भी सत्य से दूर है। खड़ी बोली के प्रस्तौताओं और प्रारभिक हिमायतियों में अयोध्या प्रसाद खत्री के अवदान को भुला दिया जाता है। अन्धकारपूर्ण रेकर्ड रूम और परिवारों के ऐतिहासिक संग्रहों की छानबीन द्वारा अयोध्या प्रसाद खत्री के अतिरिक्त महेश नारायण, कीर्ति नारायण, अवध बिहारी सिंह 'बेदिल' जैसे अनेक अश्रुत और अज्ञात हस्ताक्षरों को सामने लाकर उक्त काल के इतिहास को कड़ियों को जोड़ने का श्रेय उमाशंकरजी को है। आधुनिक काव्य रूपों के प्रारंभिक बीज को महेशनारायण आदि कवियों में उद्‌घाटित कर उमाशंकरजी ने समस्त 'नयेपन' के आन्दोलन के उत्स को खोजने की नई दृष्टि दी है। सबसे करीब के ऐसे व्यक्तियों को इतिहास की परंपरा में जोड़कर नहीं देख पाने की अनुसंधानात्मक प्रवृति को उमाशंकरजी की इतिहास चेतना एक प्रेरणा और इशारा है।

अज्ञात, अश्रुत साहित्यकारों की खोज का क्रम यहीं नहीं रुकता । सुदूर भक्तियुग में से मनिराम, हलधरदास जैसे संत कवियों का पहली बार उद्धार उमाशंकरजी ने किया है। उमाशंकरजी के इस कार्य से यह सिद्ध होता है कि अभी हिन्दी का इतिहास समग्रता की दृष्टि से अधूरा है। इसी धारणा को चुनौती देत हुए उन्होंने 'हिन्दी साहित्य के अधूरे इतिहास की सर्वथा चौंकानेवाली अवधारणा की स्थापना की है, जिसको उमाशंकर जी के शोध के बाद सच मानना पड़ता है। इसके उत्तर में 'हिन्दी साहित्य का वह इतिहास जो लिखा नहीं गया उमाशंकरजी तैयार कर चुके हैं, जिसको सभी प्रतीक्षा कर कर रहे हैं। हिन्दी में अनुसंधान प्रवृत्ति और इतिहास निर्माण की प्रकृत्यात्मक धाराओं को निश्चित रूप से उमाशंकरजी से प्रेरणा और दायित्वबोध की चेतना मिलती है। सामान्य पाठक वर्ग के लिए साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन का स्तर क्या हो और कैसी समीक्षा से ऐसे पाठक वर्ग की प्रशंसात्मक क्षमता का उन्नयन हो —इसके उत्तर में उमाशंकर जी प्रेमचन्द के उपन्यासों, प्रसाद आदि के नाटकों की सरल उपयोगी और विस्तृत समीक्षा कर हिन्दी समीक्षा के मान को जन-साहित्य की समीक्षापद्धति के बहुत पास आकर निश्चित किया है। ऐसी समीक्षा का प्रारंभ इन्होंने तब किया जब स्कूल और कालेजों में हिन्दी-साहित्य की कृतियों को पढ़ाने का और उसे मूल्यांकित करने का सिलसिला अपनी जड़ जमा रहा था। व्यावहारिक समीक्षा की इस स्थापना का श्रेय १९३५-३६ के जमाने में उमाशंकर जी को है। जिसको हम साहित्यिक चेतना कहते हैं, उसकी शुरुआत उमाशंकरजी में, बिहार में बहुत पहले

हो गयी थी। उसी काल से व्यापक साहित्यिक और समन्वयात्मक संपर्कों के आधार पर इन्होंने अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर लिया था —कालक्रम से यह बात बिसरनी नहीं चाहिए।

वहुल साहित्यिक-सांस्कृतिक ज्ञान और साहित्यिक अवसरों पर अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति की चेतना उमाशंकरजी की अपनी विशेषता है। इसी विशेषता का दूसरा पहलू है कि इनका सर्वोपरि ध्यान जन साहित्य, खासकर के बच्चों और वयस्कों के साहित्य निर्माण की ओर है। नागरिक अधिकारों राष्ट्रीय नेताओं आदि जैसे जीवन चरित्रों और सामाजिक जीवन के विषयों पर लिखकर उमाशंकर जी ने अपनी अदभुत लेखन और संयोजन शक्ति का विपुल साहित्य दिया है जो कई भागों में 'जनचेतना'—जिसको व्यापक अर्थों में हम राष्ट्र भावना और 'जाति गौरव' जैसे मूल्यों का टीका देते हैं—विदित होती है और संप्रेषित होती है। उमाशंकरजी में लेखक के सामाजिक दायित्व की सही पहचान होने जैसे बड़े दायित्व की प्रेरणा से दूसरी अन्य बात किसी भी समकक्ष लेखक वर्ग के लिये अधिक उपयोगी क्या हो सकती है? ऐसे ही लेखकों का सही मानी में सामाजिक और नागरिक सम्मान होना चाहिये, जिन्होंने जन-चेतना के अवसरों को आकार और अभिव्यक्ति दी है और उसे प्रबुद्ध बनाया है।

पेशे से ट्रेजरी औफिसर, अतिव्यस्त और उलझे—चेतना से विशुद्ध, साहित्यिक, कर्मी और उद्‌बुद्ध, निर्भीक (अभिव्यक्ति के कायल) श्री उमाशंकरजी बिहार की वर्तमान साहित्यिक पीढ़ी के गौरव हैं। इनकी कृतियों का व्यापक प्रसार और प्रचार होना चाहिये, यह हमारा आपका

सबका दायित्व है—अगर हम एक लेखक के लिए इतना भी नहीं कर सकते तो हमें अपने सांस्कृतिक स्वत्व में विश्वास पर संदेह होने लगता है। मैं इसी कामना के साथ उमाशंकरजी को प्रणाम करता हूँ और नई पीढ़ी का ध्यान एक ऐसे कर्मठ और वर्चस्वी साहित्यिकार की ओर आकृष्ट करता हूँ, जिसने अपनी हड्डियों की कर्बला पर साहित्य देवता को खड़ा किया हैं।

—o—

"गान्धीजी के आदर्शों पर हम पंचायत राज्य स्थापित कर सके तो विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि कुछ दिनों के अन्दर हमारे गाँव स्वर्ग के समान हो जायेंगे, जहाँ स्वर्ग से आकर देवता रहने लगेंगे वहाँ न कोई शोषक होगा, न कोई शोषित होगा न कोई शासित होगा, न कोई रात होगा, न कोई दिन होगा, न कोई दुखी न कोई ऊंचा होगा और न कोई नीच होगा। हिन्दू मुसलमान पारसी, सिख सब एक हुकूमत के लोग होंगे।"

श्री उमाशंकर

श्री उमाशंकर : व्यक्तित्व-मूल्यांकन

प्रो० सत्यधन्न मिश्र, *प्रधानमन्त्री*
अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा-प्रचारिणी सभा—

कलम के जादूगर एवं शब्द-शिल्पी श्री रामबृक्ष बेनीपुरी ने सन् १९४१ ई० में कहा था कि "उमाशंकर जी बिहार के उन नवयुवकों में हैं, जो खाते हैं आग और उगलते हैं जहर।" दो दशक के पश्चात् सन् १९६० ई० में बेनीपुरी ने जब उमाशंकर जी को बहुत करीब से देखा-सुना और ठीक-ठीक पहचाना तो उन्होंने अपनी धारणा बदलते हुए घोषणा की थी "उमाशंकर जी उन साहित्यकारों में हैं जो खाते हैं विष और उगलते हैं अमृत।"

वस्तुतः समसामयिक एवं निकटतम व्यक्ति का समुचित मूल्यांकन कभी न हुआ है और न कभी होने की ही संभावना है। क्योंकि ऐसा करते समय अनेक प्रकार की व्यक्तिगत कुण्ठाएँ बाधक हो जाती हैं। समाज अक्सर किसी कला-साधक को मृत्यु के पश्चात् ही विशेषणों के कफन से ढँकता है। कभी-कभी देशी या विदेशी मान्ताओं को देखकर भी हम किसी कलाकार या साहित्यकार की अर्चना करते हैं। अस्तु, समकालीन साहित्यकारों को पहचान पाना— दूरदर्शिता का काम है। आज स्थिति और निकट है। किसी खोखले और छिछले साहित्यकार को कोई ऊपर उठा रहा है और कहीं सिद्ध साहित्यकारों को कुचलने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में उमाशंकर जी के संबन्ध में कोई व्यक्ति कुछ गलत धारणा रखता है तो यह सर्वथा स्वाभाविक है। उनके संबन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहना तभी संभव और औचित्यपूर्ण कहा

जायगा, जब कोई उनके व्यक्तित्व को समग्रता के साथ पहचाने और निष्पक्षता के साथ भावाभिव्यक्ति करे।

अस्तु, उमाशंकर जी का नाम लम्बे अर्से से सुनता आ रहा था। पत्र-पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाएँ बराबर देखता था। दर्शन की जिज्ञासा बनी रही। सन् १९६० से ६२ तक पटने रहा। पर संयोग-वश या प्रमादवश इनके दर्शन न हुए। सन् ६३ में सन्ताल परगना कॉलेज, दुमका में मेरी नियुक्ति हुई और संयोग से ये भी उसी वर्ष मुझसे पहले स्थानान्तरित होकर दुमका आये थे। फिर क्या था। सारे जिले में उमाशंकर जी चर्चा के विषय बने रहे।

दुमका आकर इन्होंने कुछ ऐसे प्रयोग किये, जो इस जिले के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण हिन्दी-संसार के लिए अभिनव प्रयोग थे। सर्वथा विस्मृत साहित्यकार महेशनारायण चर्चा के विषय बन गए। हिन्दी जगत् में राष्ट्रभारती के प्रथम महाकवि एवं बिहार-निर्माता बाबू महेश नारायण को विद्वानों एवं इतिहासकारों ने स्वीकृति प्रदान की। राष्ट्रभाषा हिन्दी के उस उपेक्षित सपूत की पुण्यस्मृति में 'महेशनारायण-साहित्य-शोध-संस्थान' की स्थापना हुई। स्थापना के अनन्तर संस्थान ने जो कार्य किया है, वह हिन्दी-जगत् के लिए गौरव की वस्तु है

सन् १९६३ ई० में हिन्दी महाविद्यालय (दुमका) की स्थापना हुई और मुझे अवैतनिक प्राचार्य के रूप में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तब से हिन्दी महाविद्यालय इस नगर के लिए एक महत्वपूर्ण संस्था है। शास्त्री बालोद्यान, नेहरूपार्क आदि की स्थापना आपकी संगठन-शक्ति का परिचय देती है। सारा सन्ताल परगना, विशेषकर दुमका नगर आज

तक उपेक्षित था। साहित्यकारों की दृष्टि में भी यह नगर निष्प्राण था। परन्तु उमाशंकर जी ने यातायात व्यवस्था, आवास आदि की कठिनाइयों बावजूद भी बिहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का एकतीसवाँ अधिवेशन सन् ६६ में पहलीबार दुमका में कराया। यहाँ मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस सद्प्रयास में उपायुक्त श्री यशवन्त सिंहा जी, अन्यान्न राजकीय पदाधिकारियों, व्यापारियों, साहित्यकारों एवं स्थानीय जनता का आशातीत सहयोग एवं सौहार्द इन्हें प्राप्त हुआ। संगठनात्मक कार्य करने वाले साहित्य सेवियों की जीवन-प्रणाली देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मौलिक साहित्य का सृजन नहीं कर पाते। पर उमाशंकर जी की यही विचित्रता लोगों को हैरानी में डाल देती है कि ये सरकारी नौकरी और वह भी ट्रेजरी के चक्रव्यूह में रहकर संगठनात्मक कार्यों के साथ-साथ साहित्य-सृजन बहुत बड़े पैमाने पर कैसे कर पाते हैं। मैंने कुछ लोगों को, इनके साहित्य-सृजन की बहुलता पर शंकित भी पाया है। यद्यपि मैं जानता हूँ कि अध्यनसायी एवं धुनी व्यक्ति के लिए कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है। ब्रह्ममुहूर्त में सोने वाले कैसे जाने कि उमाशंकर जी कब और कैसे इतना लिखते हैं ?

बिहार सरकार ऐसे साहित्यकारों एवं विद्वानों का यदि सदुपयोग कर पाती तो देश का विशेष हित होता। ट्रेजरी में इनकी सेवा अपना महत्त्व रखती है, किन्तु यदि ऐसे व्यक्ति को बिहार राष्ट्र-भाषा-परिषद् के निदेशक या संग्रहालयों अथवा साहित्यिक संस्थानों के निदेशक के पद पर स्थानान्तरित कर दिया जाता तो देश का बहुत बड़ा उपकार होता। एक विशाल व्यक्तित्व को संकीर्ण परिधि में बन्द करके रखना बहुत बड़ी राष्ट्रीय क्षति है।

साहित्य और व्यक्ति-श्री उमाशंकर

—श्री सुशीलकुमार झा

श्री उमाशंकर, हिन्दी साहित्य के पाठकों के लिये कोई नये व्यक्तित्व नहीं हैं। स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री, बाबू महेश नारायण, कलम शिल्पी, बाबू साहब, ग्राम स्वराज्य, राजनीतिक विचारधाराएं, दीदी के पत्र आदि दर्जनों प्रकाशित पुस्तकों तथा सम्पूर्ण भारत के प्रमुख पत्रों में प्रकाशित निबन्धों के माध्यम से श्री उमाशंकर का नाम हिन्दी पाठकों तक पहुँच चुका है। आप की असाध्य साधना और भगीरथ प्रयत्न का परिचय जिस हद तक निकट सम्पर्क से जाना जा सकता है, आपके साहित्य सम्पर्क से कुछ कम नहीं है। आपने हिन्दी संसार में साहित्य सृजन की जिस स्रोतस्विनी गंगा को प्रवाहित किया है उसकी पावन धारा में एक बार जिसने गोता नहीं लगाया, मैं कहूँगा कि उसने जीवन के महत्वपूर्ण कार्य को छोड़ रखा है। दूसरे शब्दों में ऐसा भी कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के भण्डार में 'उमाशंकर-साहित्य' को विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

'उमाशंकर-साहित्य' की भाँति ही 'उमाशंकर-व्यक्ति' भी अथाह अनुपम और अद्भुत है। एक उच्च पदस्थ पदाधिकारी होने के बावजूद आपका रहन सहन एक साधारण साहित्यकार की तरह है। देखने से तो यही मालूम पड़ता है कि आप नानाविध समस्याओं से घिरे हैं, पर आप मानिये या नहीं, श्री उमाशंकर के द्वारा कितने लोगों की समस्याएं सुलझती हैं, यह गिनाना थोड़ा कठिन है।

आप बिल्कुल सीधे-सादे और उदार प्रकृति के व्यक्ति हैं। आप

अधिक मिलनसार, नम्र और मधुरभाषी हैं, तथा आपका व्यक्तित्व कितना विशाल है, कहा नहीं जा सकता। जहाँ तक व्यक्तिगत मेरा प्रश्न है, मैं तो उमाशंकर साहित्य से उतना प्रभावित नहीं हूँ जितना उक्त साहित्यकार से प्रभावित हूँ। मेरा आपका साक्षात्कार तो अभी हाल ही में हुआ है पर आप की लेखनी की ताकत का परिचय मुझे वर्षों पूर्व मिल चुका है। 'पलामू –समाचार' (साप्ताहिक) के सम्पादन क्रम में जब आपकी रचनाएं मेरे सामने आयीं तो मैं दंग रह गया था। व्यस्त मय जीवन के बावजूद खोजपूर्ण निबन्ध तैयार करने की आप की क्षमता, लगन और उत्साह देखकर।

सरकारी सेवा कार्य, साहित्य सृजन और मित्र प्रमोद के अतरिक्त श्री उमाशंकर की दिनचर्या में और भी एक आवश्यक बात है, साहित्यिक संस्थाओं का निर्माण और उनका सुसंचालन,। श्री उमाशंकर संस्थाओं के प्राण भी कहे जाते हैं। यों आपने जीवन में अनेक संस्थाओं को जन्म दिया तथा आपसे उन्हें आवश्यक पोषण भी प्राप्त हुए, लेकिन बिहार साहित्यकार संघ आपकी सर्वाधिक लोकप्रिय महत्वपूर्ण संस्था है जिसके आप जन्म दाता तो हैं ही, मंत्री का पद संभाल कर उसे अधिकाधिक कार्यशील कर रहे हैं।

व्यस्त जीवन के बावजूद आप अभी भी नियमित रूपेण लेखन कार्य कर रहे हैं। प्रतिदिन चार-पांच लेख तैयार कर लेना आप के लिए हँसी खेल की बात है। आपकी कई कृतियां प्रकाशनार्थ प्रस्तुत हैं। बिहार के संत साहित्यकार, खेती–निर्माण की ओर और शिक्षा-निर्माण की ओर प्रभृति पुस्तकें अति शीघ्र हमारे सामने आने वाली हैं। सचमुच आप की असीम साधना, अध्यवसाय और परिश्रम के सामने मेरी वाणी मूक और नयन अपलक हैं।

श्री उमाशंकर- व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लेखक:—श्री रघुनाथ

स्थितप्रज्ञ, विदित, विनम्र, सरल, तरल, मधुर, गंभीर- त्यागी, सहिष्णु, प्रभविष्णु, विदुर, कलापारखी, परोत्कर्षैषी, कुशलान्वेषी, लोकैषणा अलिप्त, वीतराग, उन्नत ललाट, दीपित मुखमंडल, अधरों पर रजत चन्द्रिका का धवल हास, पलकों में चपलता का नर्तन, उम्र प्रौढ़, अंतराल शिशु, पुरानी, नई और आनेवाली—एक साथ तीन पीढ़ियों का समन्वय।

पीढ़ियों के संघर्ष से वितुष्ट, केवल निज का अस्तित्व रखने वाले जग की एषणा से वितृष्ण और व्यवहार से विधुनित, किन्तु बदलती हुई परि-स्थिति, नई पीढ़ी के दृष्टि-विस्तार और निर्लिप्तता से संतुष्ट, आने वाले कल के प्रति सतृष्ण और इसके लिए हो रहे प्रयासों से आनन्दित।

दृष्टि अविराम, सतह के ऊपरी आवेष्टन को छेद कर तह तक पहुंचने की दिशा में अहर्निश प्रयत्नशील, विगत के मोह से प्रभावित और अनागत के संकेत के प्रति चिर उत्सुक। मस्तिष्क उर्वर और हृदय रससिक्त, एक की कल्पना के साथ दूसरे के भाव का ग्रन्थि-बन्धन, एक की दिशा के साथ दूसरी की धारा का बहाव, एक की ऊर्ध्वोतिमा के साथ

दूसरे के मधुगुंजन का सौहार्द , एक के चिंतन के साथ दूसरी की अनुभूति का उन्मीलन, एक के आवेग के साथ दूसरे का उफान ।

अक्षर जननी इनकी अंगुलियों में बंधकर अकुलाती नहीं, सुख पाती है, कागज इनसे टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं का दान पाकर सजीव हो उठता है—प्राणवंत । अंगुलियों के कंपन के साथ लेखनी खेलती है—इसी में उसे सुख मिलता है, इसी से उसमें ओर भरता है, वाणी निःसृत होती है। इनकी लेखनी इनकी अंगुलियों की सहचरी है । एक दूसरे का वियोग दोनों को खलता है—बहुत । दोनों का उल्लास-पर्व कागज के पन्नों पर संगम का निर्माण करता है, जहाँ गत, आगतओर अनागत की त्रिवेणी लहराती है ।

साहित्य युग की अंगुली पकड़कर उसे सही मार्ग पर चलना सिखाता है । इस माने में साहित्य युग का जनक होत है और साहित्यकार उसके प्राण, युग की बहुत बड़ी निधि । केवल एक युग की ही नहीं, युग-युग की । प्राण तो चिरस्थायी है, न मिटने वाला । इसकी अरथी कभी नहीं सजती । हर वक्त इसकी डोली ही सजती है । युग के जनक का प्राण—महाप्राण होता है, कोई ऐसा-वैसा नहीं । जिस शरीर में वह वास करता है, वह विराट होता है, तृष्ण-एषणा से परे ।

ऐसी ही विराट कल्पना का प्रतीक है यह नाम—श्री उमाशंकर उमा—यानी कि साधना, और शंकर—यानी कि सिद्ध । साधना और सिद्धि का मिलन बड़ा दुर्लभ होता है । विरले ही किसी में पाया जाता है । विरले ही कोई विष पीता है । जो युग के संपूर्ण विष-वायु को पी लेता है और एकाग्रचित्त होकर साधना करता है, वही

सिद्धि प्राप्त कर सकता है, वही शंकर बन सकता है। युग के जनक के प्राण भी वही हो सकता हैं।

श्री उमाशंकर जी ने ऐसा ही किया है। विष से भी अधिक विषाक्त गरल उनके गले में है। इस गरल की लपट बड़ी तेज है—सभी आफतों को जलाकर भस्म कर देने वाली। युग को नई रोशनी देने वाली। हाँ, जो विष पचा लेता है, उसके लिए वह सुधा है। उसकी लपटें जीवन में प्रकाश बिखेरती हैं—यह विचित्रता हर महान व्यक्तित्व के साथ पाई जाती है। इसी से वह साधारण मनुष्य से भिन्न होता है, इसी से वह लाखों में पहचाना जाता है।

श्री उमाशंकर जी को परमेश' जी ने राक्षस कहा। राक्षस का काम होता है अति करना। एक काम और होता है—अनर्थ करना। 'अति' और 'अनर्थ' का एक साथ होना खतरनाक है। उमाशंकर जी अति करते हैं अवश्य, किन्तु अनर्थ नहीं करते। लिखने में वे अति करते चले जा रहे हैं और यह हिन्दी संसार के लिए गौरव का विषय है। शायद यही बात ध्यान में रखकर 'परमेश' जी कहते हैं, "ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान वेदव्यास और द्रुतलिपिक गणेश दोनों की संयुक्त आत्मा का प्रतिबिम्ब उमाशंकर जी की प्राणशक्ति में उतर आया है।"

इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि साहित्य-निर्माण के साथ-साथ ये साहित्यकार गढ़ते हैं। कुशल कुम्भकार अत्यधिक कार्य-व्यस्तता के बीच भी कुछ गुनगुना लेता है, इससे उसकी रसात्मकता, सहृदय और भोला स्वभाव लोगों के समक्ष स्पष्ट हो जाता है। छोटी-बड़ी नदियों

को समेटती जो चलती है उसका नाम है—गंगा। गंगा—यानी कि पवित्र, महान्। उमाशंकर जी भी अकेले नहीं चलते। ये हैं बहुतों को साथ लेकर।

साहित्य और साहित्यकार— दोनों का अस्तित्व भिन्न-भिन्न नहीं है। किन्तु ऐसे विरले ही होते हैं जो दोनों का निर्माण करते हैं। साहित्य का निर्माण, मैं जैसा समझता हूँ थोड़ा सरल होता है, साहित्य-कार का निर्माण कठिन। जो केवल साहित्य का निर्माण करते हैं, वे अपना धर्म निभाते हैं, जाति की सेवा या उद्धार नहीं करते। जाति से यहाँ मेरा तात्पर्य विशिष्ट है। साहित्यकार की भी एक जाति होती है और साहित्य है इस जाति की सभ्यता-संकृति। साहित्यकार यदि अपनी जाति का निर्माण और उसकी सभ्यता संस्कृति का विकास नहीं चाहता तो वह हेय प्रवृति है। उसे कभी भी सराहा नहीं जा सकता।

मैं तो श्रद्धेय श्री उमाशंकर जी की महानता इसी में मानता हूँ। साहित्य की श्रीवृद्धि नाम का अस्तित्व कायम रखने में समर्थ होती है और साहित्यकार की सृष्टि नाम का गौरव रखने में। यह अस्तित्व और गौरव दो बहुत बड़ी चीजें हैं जो उमाशंकर जी के पक्ष में चिरस्थायी है।

श्री उमाशंकर जी की साहित्यिक उपलब्धियों की ओर दृष्टिपात करता हूँ तो आँखें चौंधिया जाती हैं। किस क्षेत्र में इनकी लखनी ने सत्ता स्थापित नहीं की? क्या भाषा, क्या साहित्य, क्या संस्कृति, क्या समाज, क्या राजनीति, क्या इतिहास सभी क्षेत्रों में आकर इन्होंने

'पूर्ण-प्रतियोगिता' का बाजार कायम किया और अंततः एकाधिकारी के समान अपना अस्तित्व रोपते गये ।

साहित्य-क्षेत्र में कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी आदि विधाओं से लेखनी विशेष रूप से अनुबद्ध रही है। हिन्दी-गद्य-प्रसार के द्वितीय उत्थान के बीच इन्होंने साहित्य क्षेत्र में कदम रखे। काव्य के क्षेत्र में वह काल द्विवेदी युग का अंतिम और छायावाद-युग का प्रारंभ-काल था। कहानी के क्षेत्र में उस समय नये युग का उदय हो रहा था। प्रेमचन्द, प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, जी० पी० श्री वास्तव, राधिकारमण प्रसाद सिंह, वृन्दावनलाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री रायकृष्ण दास, बेचन शर्मा उग्र, वाचस्पति पाठक, विनोद शंकर व्यास इस युग के प्रमुख कहानी कला का सुन्दर विकास इस युग में स्पष्ट देखा जा सकता है। प्रेमचन्द का आदर्शोमुख यथार्थवाद इसी युग में उभरता है जिसके अंतर्गत सुहाग की साड़ी, धर्म संकट, आत्मा राम, आदि कहानियों की सृष्टि होती है। अत्यधिक कल्पनाशील और भावुक कवि प्रसाद ने भौतिकता और मनोविज्ञान का किंचित सहारा लेकर अपनी कहानियों को सृष्टि की। फलतः इनकी कहानियाँ स्वयं में काव्य का औदार्य समेटी हुई है। श्री उमाशंकर जी के उपजीव्य कथाकार प्रेमचन्द रहे जो तत्कालीन प्रतिनिधि के रूप में आज स्वीकृति है। बंगला के महान कथाकार रवीन्द्र के कथा-साहित्य एवं श्री उमाशंकर के कथा-साहित्य में अनुभुति साम्य के दर्शन हम कर सके हैं। इस प्रकार श्री ऊमाशंकर जी इस क्षेत्र में शरत के समकक्ष कहे जा सकते हैं। इनकी कहानियों में इनके स्वयं के जीवन की घटनाओं

का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। अतः कथासाहित्य में इनका जीवन-दर्शन स्वानुभूति का प्रतिफल है।

'अशोक का न्याय' 'चाणक्य' 'शिल्पी'— ये तीन ग्रंथ इनके महत्वपूर्ण—नाट्य स्तम्भ है। नाट्य-क्षेत्र में श्री उमाशंकर जी का यह अनुपम प्रयोग था। सभी नाटकों में अभिनेता के गुण पर्याप्त मात्रा म विद्यमान है। इनकी अभिनेयता का प्रमाण इसी में मिल सकता है कि बहुत से स्थानों में इन नाटकों को बड़ी सफलता पूर्वक खेला गया है। 'अशोक का न्याय' तीन महीने तक लगातार पटना के रंगमंच पर अभिनीत होता रहा। इसके अलावे दिल्ली, कलकत्ता, काठमाण्डू, वीरगंज आदि नगरों के मुख्य रंगमंचों पर भी ये नाटक कुशलता पूर्वक खेले गये।

इनके निबंध विषय के अनुगामी नहीं होते, वरन् विषय ही इनके निबंधों के अनुगामी बन जाते हैं। इनको विषय खोजने का कष्ट उठाना नहीं पड़ता है। ये जब लिखते हैं तो विषय आप-से-आप सामने आते हैं। अपने निबंधों के लिए इन्हें किसी महत्वपूर्ण विषय की भी अवश्यकता नहीं होती। महत्वहीन विषय भी इनकी लेखनी के माध्यम से उतरकर अत्यंत आकर्षक और प्रभावोत्पादक बनजाते हैं। वर्णनात्मक और विचारात्मक निबंधों की तो इन्होंने ढेर लगा दी है। अब ये समस्या की ओर उन्मुख होग ये हैं-सबसे अधिक राष्ट्र भाषा और हिन्दी की समस्या की ओर इन के सामने प्राचीन समस्याओं का भी उतना ही महत्व है जितना कि आजकी समस्याओं का। दो के बाद ही तीन की कल्पना व्यावहारिक मानी जासकती है। प्राचीनता की अवहेलना और नवीनता की उपासना—ये दोनों आज चरम सीमा पर पहुँच चुकी है और यह बात साहित्य के हित में

ठीक नहीं है। दोनों की उपासना आवश्यक है। इससे ही किसी निष्कर्ष की प्राप्ति हो सकती है; इससे ही तीसरी वस्तु हमें मिल सकती है। जिसे हम नवीन भी कह सकते हैं।

शैली की दृष्टि से इनके निबंध 'व्यास प्रधान' हैं। भावानुकूल शब्द-चयन, छोटे-छोटे और सरल शब्दों का सटीक प्रयोग, छोटे-छोटे वाक्य और अंश, गतिमयता आदि इनकी भाषा की अपनी विशेषताएँ हैं।

आलोचना ग्रन्थों की लेखन-शैली कुछ भिन्न हैं। तथ्यपूर्ण, गंभीर और परिष्कृत-ऐसे ही इनके आलोचनात्मक निबंध होते हैं। छोटे-छोटे अंश में बड़े-बड़े भावों की अभिव्यंजना गंभीरता का लक्षण है। इसमें बातें छोटे-से-छोटे घेरे में ठूँस दी जाती हैं। इस प्रकार का प्रयोग हिन्दी में आचार्य शुक्ल ने खूब किया था।

शैली में व्यक्तित्व का समारोप हो जाता है। आंग्रेजी में कहा भी गया है- 'स्टाइल इज दि मेन'। जिसका व्यक्तित्व जितना ही महान होगा उसकी शैली उतनी ही गंभीर और विचारात्मक होगी। इसमें संदेह नहीं कि उमाशंकर जी की शैली में उनका व्यक्तित्व बोलता है—जो महान है, व्यापक है।

आलोचना-साहित्य में 'प्रसाद के चार नाटक, 'प्रेमचंद की निर्मला, 'प्रसाद की राज्यश्री' महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। ये पुस्तकें उस युग में लिखी गई थीं जब आधुनिक भारतीय साहित्यकारों पर पुस्तक-लेखन का कार्य आज की तरह अंधाधुंध नहीं चल रहा था।

"संस्मरण लिखने की जो स्वस्थ परम्परा स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय ने चलाई उस परम्परा के उचित उत्तराधिकारी श्री उमाशंकर हैं,

(पंडित नन्दकिशोर तिवारी)। वस्तुतः संस्मरण और जीवनी–साहित्य में श्री उमाशंकर जी का नाम अत्यन्त श्रद्धापूर्वक लिया जायगा। "जब कोई दूसरा व्यक्ति किसी की जीवन–गाथा को उसके सत्य रूप में प्रस्तुत करता है तो वह कृति जीवन का रूप धारण करती है। ....लेखक किसी स्थान, किसी घटना, किसी महापुरुष के साथ कुछ दिन, किसी यात्रा आदि की मधुर स्मृतियों का वर्णन करता है तो संस्मरण साहित्य का निर्माण होता है" (श्री रामगोपाल सिंह 'चौहान')।

हिन्दी में प्रथम जीवनी-साहित्य संभवतः स्वामी दयानन्द जी लिखित 'जीवन चरित' है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखते हैं—'साहित्यिक मूल्य रखने वाले चार जीवन चरित महत्व के निकले—पंडित माधवप्रसाद मिश्र की 'विशुद्ध चरितावली' (स्वामीविशुद्धानन्द का जीवन चरित्र) तथा बाबू शिवनन्दन सहाय लिखित 'बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र, गोस्वामी जी का जीवन चरित, और चैतन्य महाप्रभु का जीवन चरित्र'।

किन्तु अब तक की लिखी जीवनियाँ शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से उतनी महत्वपूर्ण नहीं कही जा सकती हैं। जीवनी-लेखन को एक नई दिशा दी आचार्य शिवपूजन सहाय ने। इन्होंने जीवनी में साहित्य का औदार्य भर दिया और अब से जीवनियाँ जीवन्त हो उठीं, साहित्यिकता से सराबोर।

स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय के बाद जीवनी साहित्य को दूसरा महत्वपूर्ण व्यक्तित्व मिला श्री उमाशंकर जी का। यहाँ जीवनी साहित्य का रूखड़ापन जाता रहा और उसका मार्ग प्रशस्त होने लगा। अभी,

बीसवीं शताब्दी के छठे दशक में एक ये ही प्रभाव शाली व्यक्तित्व दिखाई पड़ रहे हैं। 'हमारे साहित्यिक नेता. 'हमारे राष्ट्रिय नेता, 'कलम शिल्पी, श्रद्धा के फूल, "बाबू साहेब" 'राजर्षि' 'बिहार के निर्माता' आदि जीवनी-साहित्य में इनके अनेक गौरव ग्रन्थ हैं।

अंत में, मैं एक बिशेष बात की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। वह हैं इनकी अद्‌भुत शोध-क्षमता। इनकी प्रवृत्ति ही अनुसंधायक है। इस संबंध में आचार्य डाक्टर भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव, की उक्ति ध्यातव्य है, "श्री उमाशंकर जी ने कई भूले-बिसरे विशिष्ट साहित्यकारों, कलाकारों का उद्धार किया है। उद्धार किया है-मैं इसलिए कह रहा हूँ कि लोग उन्हें सर्वथा भूल गए थे और वे विस्मृति के गर्भ में प्रायः खो गये थे। इस दिशा में श्री उमाशंकर जी की सेवाएँ सदा आदर के साथ याद क जाती रहेंगी। इन्हीं के शोध का परिणाम है कि स्वर्गीय श्री महेशनारायणी से हमारा नया और मधुरतम परिचय हुआ है।

आज कल डाक्ट्रेट' की डिग्री बड़ी सस्ती हो गई है। कहने को तो लोग 'रिसर्च, करते हैं किन्तु करने में केवल उलट-फेर ही करते हैं। दस-पचास पुस्तकों को इकट्ठे कर 'प्रसाद के नारी पात्र' वा प्रेमचन्द के कथा-साहित्य में यथार्थवाद आदि विषयों पर एक भारी-भरकम पुस्तक तैयार कर लेना—यही आज का रिसर्च है। कभी भूले-बिसरे की खोज न करेंगे। मौलिक उद्‌भावना की नितांत कमी रहेगी इनमें, किन्तु फिर भी 'डाक्टर' बन ही बैठेंगे।

श्री उमाशंकर जी की प्रवृत्ति नितांत अनुकरणीय है। सर्वथा उपेक्षित किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की खोज करना इनका स्वभाव सा बन

गया है । गहरे अंधकार के बीच कठोर परिश्रम का दीप जलाकर भूले-बिसरे को प्रकाशमान बना देना, यही इनकी विशेषता है । आचार्य शिव-पूजन सहाय के अनुसार' श्री उमाशंकर जी ने महेशनारायण पर काफी खोज की है, जिनको आज के हिन्दी प्रेमी भूल–से गए हैं ।- श्री उमाशंकर जी की गवेषणा-वृत्ति सर्वथा श्लाध्य है । मैं उनकी ऐसी प्रवृत्ति को हिन्दी के लिए बड़ा लाभप्रद समझता हूँ ।"

कला संस्कृतिके विकास का माप दण्ड है । वह उसकी कसौटी है । उसे देखकर हम अन्दाज लगा लेते हैं - किसी देश की मान–वता की कारण जीवन को लक्ष्य तक वहीं पहुंचा सकती हैं । धर्म से उसका सिधा सम्बन्ध है । कला के विकास में धर्म का बहुत बड़ा हाथ है । मानवी सौन्दर्य बोध का ज्ञान धर्म के द्वारा होता है विष म परिस्थितियों में जब धर्म की उपेक्षा होती हैं, तव कलायें धर्म की रक्षा करती हैं । समय जो वीत जाता है । वह वापस नहीं जाता, पर कलायें उन्हें अपने आंचल में समेट कर रखनी हैं। कला का सहारा पाकर इतिहास आज जीवित है ।

श्री उमाशंकर

श्री उमाशंकर-एक मशीन

भुजेन्द्र आरत

ग्रीष्म की एक उदास शाम

मैं अपने बाहर वाले कमरे में बैठा हूँ, गुम सुम। कहीं बाहर निकलने की इच्छा नहीं होती है। सोचता हूँ, जाऊं भी तो कहाँ किधर रोज एक ही चीज क्या देखूंगा ? बहुत होगा तो जवाहर पार्क की ओर निकलूंगा फिर गांधी मैदान होते हुए बाजार आऊंगा, एक दो खिल्ली पान खाऊंगा और घर की ओर रवाना हो जाऊगा। रोज एक ही रस, एक ही चीज। कहीं कोई नयापन नहीं :—

सिनेमा-हॉल की रेकर्डिंग शुरु हो गई है। लोगो का आवागमन इस राह से बढ़ने लगा है। घर के बच्चे सिनेमा हॉल में बजने वाले रेकर्ड के गानों को दुहराने की कोशिश करते हैं। मैं सोचने लगता हूँ, दुनियाँ कितना आगे बढ़ गई है। कपड़े के पर्दे पर चलते फिरते बोलते चित्र देखने के लिए लोग कितनी संख्या में प्रति दिन सिनेमा जाते हैं। बाहरे युग मशीन का। फिर सोचता हूँ मशीन का युग कैसे ? मशीन स्वयं तो जन्म नहीं। मशीन के जनक तो मनुष्य हैं। दाद मशीन को क्यों ? दाद तो मनुष्य को मिलनी चाहिए अधिक मात्रा में उत्पादनही, अधिक देर तक काम हो अतः लोगों ने मशीन बनाई फिर भी वह अधूरी ही रह गई। हमेशा उसके संचालन

के लिए आदमी की उपस्थिति अनिवार्य होती है । तो क्या मनुष्य मशीन नहीं है । मनुष्य और मशीन - दोनों की समता नहीं हो सकती । मनुष्य मनुष्य, है और मशीन मशीन । भले ही, लोग अनवरत काम करने वाले को मशीन की संज्ञा दे दे । लेकिन मनुष्य एक बड़ा मशीन है । मशीन से भी अधिक क्रियाशील......यह ......अब मैं समझता हूँ.........—हैलो ऽऽ आरत....... ।''—मेरे सोचने का तांता टुट जाता है । देखता हूँ मेरा एक कालेज सहपाठी बेगूसराय का अरविन्द, मेरे सामने खड़ा है ।

मैं बैठने को कहता हूँ । नौकर आकर उसका बैग और अटेची भीतर ले जाता है । फिर इधर उधर की लगभग दोतीन घंटों तक वार्ता चलती हैं । वार्ता के क्रम में ही अरविंद कहता हूँ— "तुम बराबर कहा करते थे न. आओ दुमका आओ दुमका, और लो आज बिना सूचना दिये ही पहुंच गया तुम्हारा दुमका । घुमाओ और दिखाओ क्या क्या है तुम्हारे दुमका में ——

मैं मुस्कराते हुए कहता हूँ—शहर में देखने लायक होता ही क्या है । मकान, कालेज, लाइब्रेरी' पाक मील, मोटर रिक्सा को छोड़ कर.........लेकिन हाँ मैं दिखाऊंगा नम्बर एक की चीज । देखोगे तो कहोगे......... ?

"सो भला कौन सी चीज है ॥

मशीन ।

मशीन ?

हाँ, लेकिन भाई मेरे, उस मशीन को देखने के लिए प्रातः

प्रातः मित्र को जगाता हूँ। अँह-उँह करने के बाद वह उठता है तो पूछता हूँ—"बजा कितना?"

—"सवा चार।"

—"सवा चार ?"

—'हाँ।'

—"तो चलो आज बाहर ही कहीं प्रातः क्रिया से निवृत्त हो लेंगे।"

अरबिंद ने अपने कपड़े बदले और हम दोनों भी चल पड़ते हैं दुमका की राहों पर।

पूरब दिशा अब कुछ साफ होने लगी है। चे-चे चूँ-चूँ पक्षियों की मधुर आवाज प्रातः कालीन वातावरण में व्यप्त है और हम दोनों राह पर चले जा रहे हैं

मैं एक दो मंजिला मकान के सानने रुक जाता हूँ। मकान के बीच वाले कमरे से बिजली की रौशनो पर्दे से छन कर बाहर आ रही है। अरबिंद से कहता हूँ--अन्दर कमरे में कोई नजर आ रहा है।"

—"अँऽ, हाँ कोई आदमी टेबुल पर झुका है।"

—"टेबुल पर कागज रखा है ?"

—'हाँ।'

—"उस पर कलम दौड़ रही है ?"

—'हाँ।'

मैं धीरे से कहता हूँ- "मशीन स्टार्ट हो गई। घंटा अंदर काल की परतों के नीचे दबा और अब तक के साहित्यकारों की नजरों से उपेक्षित कोई न कोई पुण्यात्मा बाहर निकलेगा—इस मशीन से। मेरे मित्र ने मेरी बातें सुनी शायद नहीं।

सुबह-सुबह रिमझिम की झड़ी लग गई। अरबिंद कहता है -चलो कहीं चाय वाय का मजा लें। दुकान तो जरूर खुल गई होगी ?

चाय समाप्त हुई और उधर रिमझिम भी गई। हम दोनों फारागत से निवृत्त हो आये।

--''नास्ता करोगे ?'' मित्र से पूछता हूँ

—'अभी नहीं।''

--'चलो, तब।'

--'कहाँ ?'

--''लो अभी से ही कहाँ-कहाँ करने लगे। समुचे दिन के लिए बुक हो गये हो घर से भैया--यह समझ लो।''

अरबिंद मुस्काकर चलने लगता है।

''यह जिला स्कूल रोड है। बाईं ओर उस छोटे से मकान को देख रहे हो ?' मैं पूछता हूँ।

--हाँ ! क्या है वहाँ।''

--''थोड़ा और निकट चलो कोई चौंकी पर बैठा दीख रहा है ?

''हाँ।''

--जानते हो इन्हें ?

—''वही तो हैं जो उस बड़े मकान में बैठ कर लिख रहे थे।''

--भूषण वगैरह की परीक्षा निकट है न। उसी परीक्षा की तैयारी ये करा रहे हैं।

—शिक्षक हैं क्या ?

—शिक्षक ?- मैं मुस्कुरा कर कहता हूँ--''ये पीर बबर्ची भिस्ती,खर सब

-कुछ है इस शहर के ।

—"लौट चलो...इधर तो खाली खाली सा लगता है"-अरबिंद रूक जाता है ।

—घर ?

—"नहीं दूसरी जगह ।"

---हाँ उधर चलो खादीग्राम होकर निकल जायेंगे ।

हम भागलपुर रोड से हट कर एक कच्ची सड़क पकड़ कर चलने लगते हैं

--यह कौन महल्ला है ?" पूछता है अरबिंद ।

—कुम्हार पाड़ा । "

—यहाँ ?

---चलो भी तो... हाँ उस मकान को देखते हो । अच्छा लो न हम उसी के निकट भी पहुँच गये ।

—कौन रेल गाड़ी की तरह सुबह सुबह साहित्य पर धड़ाधड़ बोल रहा है

—मैं मौन हो जाता हूँ और आगे बढने लगता हूँ तो वह ही कहता है—

---अरे ! इनको फिर यहाँ देखता हूँ ?"

—"किनको ? -लग भग मैं बनते बनते पूछता हूँ ।

—वही जो जिलास्कूल रोड पर किसी को पढ़ा रहे थे "

—मैं विना बोले ही आगे बढ़ जाता हूँ तो वह भी चलने लगता है । थोड़ी देर तक हम मौन रहते हैं ।

अरबिंद मौन को भंग करताहै-सामने तो कोई स्कूल है, इधर कहाँ जाओगे

—भेंट करनी है एक शिक्षक से । एक घंटा वहाँ रहेंगे फिर आगें चलेंगे ।

एक घंटा के बाद ।

अरबिंद कहता है–अब चलोगे नहीं ?

--"कितने बज गये ?"

---आठ पाँच ।

---आठ पांच ? तो चलो जरा रसिकपुर घूम ही आवें

---जैसी इच्छा ।

पाँच –सात मिनटों के अन्दर हम रसिकपुर मुहल्ले में पहुंच गये हैं। मैं संकेत कर कहता हूँ -वो सामने खपरैल वाला मकान है न । उसमें 'ग'जी रहते है उनसे भेट मरनी है। इस वर्ष वे अलंकार की परीक्षा में सम्मिलित होंगे। पुछ तो लें—कैसी तैयारी चल रही हैं ।

'ग' जी के वराबदे के निकट पहुँचते ही अरबिंद के मुख से निकल जाता हैं, अरे यहां भी वे कैसे ?

मै सीढ़ी के पास जाते जाते रुक कर पूछता हूँ–कौन ?"

---वे महाशय ही जो कुम्हारपाड़ा में किसी महिला को पढ़ा रहे थे ।

मै सीढ़ी से उत्तर पड़ता हूँ और कहता हूँ–'ग'जो को पढ़ाने आये हैं चलो किसी और समय में उनसे मिल लेंगे ।

मेरे मित्र के मुख से आश्चर्य मिश्रित एक थकान सी आवाज निकल जाती है–उफ्...!

मै समझ जाताहूँ–यह 'उफ्' अरबिंद की थकावट की आवाज नहीं ।

९ वज गये हैं । चलते चलते मै कहता हूँ –"अब चलो दूसरी जगह ।

---"कहाँ ले चलोगे अब ?"

---लो अभी से ऊवने लगे ?

अरबिंद चुप- बिल्कुल मौन ।

होटल में भर पेट नास्ता किया और फिर मटरगस्ती में हम निकल पड़े हैं।"

—"आगे भीड़ वहाँ क्यों लगी है?"—अरबिंद पूछता है।

—"वह यहाँ की कचहरी है और सरकारी कार्यालय इसी के अन्दर है।"

—"हम कोर्ट की ओर ही जारहे हैं? कोई काम है तुम्हें क्या?"

—"काम? काम तो नहीं। कोर्ट कचहरी का नजारा कभी--कभी लेना बुरा नही है।"

—"सामने वाला कोर्ट किसका है?"

—"एस० डी० ओ० सदर का।"

—"और वह टीन वाला?"

—"ग्राम पंचायत, कोषागार कार्यालय।"

—"तुम उधर ही बढ़ रहे हो?"

—"चलो न उधर से ही गुजर कर मेन रोड पकड़ेंगे।"

कुछ आगे बढ़कर अरबिंद आश्चर्य से बोल उठता है—"अरे वही आदमी?' मैं पीछे मुड़कर पूछता हूँ "—कौन आदमी?"

—"वही जो रसिकपुर जिलास्कूल रोड पर कुम्हारपाड़ा में पढ़ा रहे थे।

—"ओऽ ......मेरे मुख से हँसी फूट पड़ती है—तब शिक्षक थे, अब वे व्यस्त ऑफिसर हैं।"

—"ऑफिसर और शिक्षक......फिर घर—घर जाकर......कैसी बातें करते हो तुम...।"

—"यही तो सब कहते हैं। यह शख्स ऑफिसर के समय ऑफिसरी करता" है और शिक्षक के समय शिक्षकगिरी। फुल टाइम अपने को ऑफिसरी

यह आदमी समझता जो नहीं, यही तो बिचित्रता है ।"

—"गजब आदमी है भाई।"

—'शायद तुम को भूख लग गई है—क्यों ?"—मै बात बदल देता हूँ ।

—'भूख का समय ही है"--वह झेंपते हुए कहता है ।

चार घंटे के बाद

—"कितना सुस्ताओगे ?"—अरबिंद से कहता हूँ ।

—"बड़ा थक गया हूँ । कहाँ चलोगे ?'

—"मशीन देखने'--मैं मुस्कुराकर कहता हूँ ।

—"दिखाओगे कब ? दिन भर से तो घुमा रहे हो ।"

—थोड़ा परिश्रम अभी हुआ है । मशीन को देखने के लिए और अधिक परिश्रम जो करना पड़ेगा ।

—'चलो' -समझौते के स्वर मे वह कहता है और मेरे पीछे—पीछे चलने लगता है ।

—"चलो थोड़ी देर पुस्तकालय में बैठें । सामने वाला मकान राजकीय पुस्तकालय है" —मैं कहता हूँ।

दस मिनटों के अन्दर ही हम पुस्तकालय के अध्ययन कक्ष में पहुँच गये हैं ।

लगभग १५--२० मिनटों के पश्यात् अरबिंद पूछता है--यह "उमाशंकर" कहाँ का राइटर है ?"

मै थोड़ा चौंकता हूँ और फिर पूछता हूँ —क्यों ! क्या बात है !

—"बात कुछ नहीं । आश्चर्य होता है —कितना सब राइटर बैठे—बैठे लिख लेता है······।'

मैं मुस्कुराने लगता हूँ तो वह थोड़ा चिढ़-सा जाता है और पत्र पत्रिकाओं को इकट्ठा करता हुआ कहता है--ये देखो--धर्मयुग, 'हिन्दुस्तान, 'युवक' योगी, 'ज्योत्स्ना, 'नवराष्ट्र, ,प्राच्य-भारती, दक्षिणा बिहार, लोक-संग्रह, उत्तर बिहार, सबों में पहला या दूसरा निबंध उसी का है।

मैं लगभग लापरवाही से जबाब में कहता हूँ -''हाँ, लिखने वाले लिखही लेते हैं.........।''

—' क्या कहा लिख ही लेते है ? मगर मैंने तो अभी तक इतनी सारी रचनाएँ इतनी पत्र पत्रिकाओं में एक साथ छपी न देखी थी। मालूम नहीं ...लेखक है या मशीन......''

मैं विशेष कुछ नहीं कहता हूँ और हँसकर कहता हूँ-ठीक कहते हो तुम...चलो थोड़ी बाजार की भी सैर कर लें...... ।

हम मौन चल रहे हैं। डंगालपाड़ा मुहल्ले से लोग बाजार की ओर छूट पड़े हैं। रिक्शा—टमटम का आवागमन वढ़ गया है।

अरबिंद मेरा ध्यान भंगकरता है''लाउड स्पीकर पर भाषण किसका हो रहा है ? कोई बाहर से मंत्री वगैरह आये हैं क्या ?

जवाब में मै जिला पर्षद भवन की ओर बढ़जाता हूँ। भवन की छत पर एक बड़ा सा हॉल है। मुख्य सभाएँ प्राय: यहाँ हुआ करती हैं ।

अन्दर दाखिल होता हू तो मित्र फिर आश्चर्य से फुसफुसा उठता है -''यहाँ भी वे वहीं..........''

किवाड़ी के पास खड़े लोग अरबिंद की बात शायद सुन नहीं सके हैं लेकिन मै सुन गया हूँ और समझ भी गया हूँ -'वे ही किसके लिए व्यवहार किया गया है ।

भाषण 'आज के साहित्य और साहित्यकार पर हो रहा है। लग-भग आधे घंटा के बाद मैं मित्र से कहता हूं—चलो।

लेकिन वह विल्कुल खड़ा है। जैसी मेरी बात उसके कानों ...तक शायद नहीं पहुँची है।

वह मेरे कान के पास मुँह सटाकर फूसफुसाता है—"ये तो गजब ढा रहे हैं कभी शिक्षक, कभी ऑफिसर कभी वक्ता......ये आखिर है क्या ?

मेरी इच्छा होती है कह दूँ—राष्ट्रभाषा हिन्दी का देवदूत,। लेकिन मैं कुछ कहता नहीं हूँ सिर्फ एक शब्द मेरे मुख से निकल जाता है-"—एक संस्था... ।"

अरबिंद मेरी आँखों में झांककर कुछ समझने की कोशिश करता है तभी सभा की कार्यवही समाप्त हो जाती है।

हम पैदल घर की ओर रवाना हो जाते हैं।

एक और बंधु साथ होजाते हैं। फलतः एक घंटा और हमरा वहीं चौक पर समाप्त हो जाता है।

रात के १० बज गये हैं। सन्नाटा छाता आरहा है। —चलते चलते फिर हम वहीं रुक जाते हैं जहाँ सवाचार बजे पाँच मिनट के लिए रुके थे

अरबिंद आश्चर्य से फिर बोल पड़ता है—"अरे। वक्ता महोदयतो यहाँ फिर शिक्षक बन गये हैं। भाई नाम तुमने इनका नहीं बताया ?"

"नाम"? मै एक पल रुक जाता हूँ और उच्छवासित हृदय से अरबिंद को कहता हूँ—इन्हें प्रणाम करो—ये ही हैं श्री उमाशंकर--मशीन—६० पुस्तकों के प्रणेता-इधर के साहित्यकारों के प्रेरणा श्रोत...।...देखते हो-दिन भर कार्यरत रहने पर भी चेहरे पर जरा सी सिकुड़न है ?

—— o ——

कारयित्री प्रतिभा के धनी–श्री उमाशंकर

श्री उमाशंकर हिन्दी के एक सुपरिचित लेखक हैं। विभिन्न बिषयों पर लेखादि लिखने के अतिरिक्त उन्हों ने साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी आलोचनात्मक कृतियों द्वारा सुनाम अर्जित किया है। किन्तु अपनी शोधप्रवृति द्वारा विस्मृति के गर्भ में लुप्त प्राय: ऐतिहासिक घटनाओं एवं पात्रों का उद्धार करके जिस रूप में वे उन्हें प्रकाश मे लारहे हैं, इससे अवश्य ही उनकी सेवायें अविस्मरणीय बनी रहेंगी। एक अनुसन्धायक की गम्भीर दृष्टि लेकर वे भूले-बिसरे इतिहास के पृष्ठों की छान बीन करते हैं और उनकी परतों के नीचे से तथ्यों को निकाल कर इस रूप में हमारे सामने रखते हैं जिसमें हम सचमुच चकित विस्मृत हो जाते हैं। गवेषणावृति विरले साहित्यिकों में ही देखी जाती है। उनका कर्म क्षेत्र चाहे जो भी हो, सर्वत्र उनकी ऐतिहासिक वृत्ति सक्रिय बनी रहती है, सन्ताल परगना जिले के मुख्यालय दुमका में एक उच्चे सरकारी पद पर रहते हुए भी इन्हों ने गवेषणा के क्षेत्र में अपने अध्यवसाय को अक्षुण्ण रखा है, बड़ी निष्ठा और लगन के साथ वे शोध कार्य में संलग्न रहते हैं और अपने अनुसन्धान द्वारा उपलब्ध तथ्यों को पाठकों के समक्ष उपस्थित करके उनके ज्ञान राज्य की परिधि को विस्तृत करते है। उनकी साहित्य साधना का यह क्षेत्र सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा ऐसा मेरा बिश्वास है।

—आचार्य पंडित जगन्नाथ मिश्र

२

श्री उमाशंकरजी बिहार के उन कतिपय विशिष्ट मूक साहित्य साधकों में हैं, जिन पर बिहार को नाज है। सरकोरी सेवा में, वह भी ट्रेजरी

ऑफिसरके रुप में अतिशय व्यस्त रहते हुए भी वे अपनी साहित्य-साधना के लिए समय निकाल लेते हैं और इधर कुछ ही समय में लगभग दो दर्जन सामाजिक पुस्तकों का प्रणयन किया है—यह उनकी साहित्यसेवा में अविरल निष्ठा का जाज्वल्यमान प्रमाण है। विशेषता यह है कि वे जिस किसी भी विषय पर लिखेंगे, उस संबंध की सारी ज्ञातव्य बातों का सम्यक् अनुशीलन कर लेंगे, जहाँ कहीं से जो कुछ भी तत्संबंधी तथ्य एवं आँकड़ें मिलेंगे उनका सार संकलन कर लेंगे और तब सर्वथा निश्चित और आश्वस्त होकर अपने विषय को प्रस्तुत करेंगे। इसीलिए इनके लेखों में यहाँ से वहाँ तक प्रमाणिकता का प्रकाश जगमगाता रहता है।

परन्तु मुझे इनमें जो सबसे बड़ी आकर्षकवस्तु लगती है—वह है इनका अतीत के प्रति उत्कट प्रेम और इस उत्कट प्रेम के कारण ही इन्होंने कई भूले बिसरे विशिष्ट साहित्यकारों, कलाकारों का उद्धार किया है। 'उद्धार किया है" मै इसलिए कह रहा हूँ कि लोग उन्हें सर्वथा भूल गये थे और वे विस्मृति के गर्भ में प्रायः खो गये थे। इस दिशा में श्री उमाशंकरजी की सेवा सदा आदर के साथ याद की जाती रहेगी। इन्हीं के शोध का परिणाम है कि स्व० अयोध्या प्रसाद खत्री, स्व० मुंशी राधालाल माथुर, स्व० श्री महेशनारायण, स्व० श्री कीर्त्तिनारायण आदि पुराने साहित्यकारों से हमरा नया और अत्यन्त मधुर परिचय हुआ।

साहित्य की विविध विद्याओं के माध्यम से आप पूरे अधिकार के साथ खूब जम कर अपने बिचारों का प्रकाश देते हैं और आपकी शैली भी इतनी स्वच्छ सरल और साधु है कि कहीं भी अटकना नहीं पड़ता। तथ्य और आँकड़ो के अधार पर आपने सदा सत्य का ही सहारा लिया है और

निर्भतापूर्वक उसी का प्रतिपादन किया है । आपका सरल स्वभाव उसमें अमृत घोलता है—।

—डा० भुवनेश्वर मिश्र 'माधव'

३

संवतः--जन्म ऐसे संक्रान्तियुग में जब भारत पराधीनता की श्रृंखला में आवद्ध, स्वतंत्रता के लिए कसमसा रहा था-भारतीय राष्ट्रीयता को खण्डित करने के प्रयत्न शासक वर्ग की ओर से तेजी से चल रहे थे,लेखक ने युग की सच्ची मांग के अनुरूप राष्ट्रीयता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए संस्था और साहित्य के माध्यम से विविध प्रयन्त किया-अनेक संस्थाओं को जन्म दिया, कई पुरानी संस्थाओं में क्रियशीलता और नवजीवन का संचार किया। राष्ट्रीय चेतना की प्राण प्रतिष्ठा के निमित्त हिन्दुस्तानी के बिरूद्ध साशक्त अन्दोलन उठाकर हिन्दी का समर्थन किया ।

व्यक्तित्व; श्री उमाशंकर जी साहित्यिक और सामाजिक हैं और संस्कृति दृष्टिकोण से व्यक्ति नहीं संस्था हैं, हिन्दी में दूसरे ग्रियर्सन हैं, जिन्होंने प्रचीन गौरवों का जीर्णोद्धार किया, काल और परिस्थिति को धुली में छिपे रत्नों का नवीव मूल्यांकन कर उनका सार्थक महत्व प्रतिष्ठापित किया ।

मुजफ्फरपुर ; यहाँ के साहित्यिक और सामाजिक जीवन में क्रियाशीलता एवं कर्मठता के संचार के श्रेय के कारण मुजफ्फरपुर इन्हे कभी भी नहीं भूल सकता, अयोध्या प्रसाद खत्री तथा मुजफ्फपुर जिला की समग्र दिशाओं के ऐतिहासिक पृष्ट भूमि पर आधारित, कई शोधात्मक ग्रन्थ इनके ठोस रचनात्मक कार्यों के सफल प्रतीक हैं ।

डा० सियाराम शरण प्रसाद
संस्थापक कला भारती, मुजफ्फरपुर (बिहार)

४

साहित्यिक सेवाएँ—जीवन के प्रारम्भिक काल से ही साहित्यिक

आन्दोलनों में अभिरूचि तथा सक्रिय सहयोग-बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहि-सम्मेलन के मंत्रीमंडल का वर्षों तक सदस्य-अखिल भारतीय सम्मेलन प्रयाग का सदस्य, बिहार साहित्यिक संघ और प्रेमचंद साहित्य परिषद्' के जन्मदा-ता, राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी को आसीन करने-हिन्दुस्तानी का विरोध-रेडियौ की कृत्रिम भाषा का विरोध, कचहरी में हिन्दी का प्रचार, अहिन्दी भाषा-भाषी भूभाग में हिन्दी प्रचार, आदि आन्दोलनों का सशक्त एवं जीवंत प्रचारक, पाँच दर्जन से अधिक विभिन्न विषयों पर पुस्तकों के प्रेणेता-

मुजफ्फपुर में—मगध–संस्कृति एवं बैशाली संस्कृति में समन्वय स्थापित करनेवाला सांस्कृतिक दूत–खत्री अर्चना तथा अयोध्या आराधना के यज्ञ में "खत्री जी--एक परिचय" के रूप में श्रद्धांजलि का प्रथम पुष्प समर्पित करनेवाला प्रथम पुजारी।

—बद्रीनारायण लाल 'पयोद'

५

लम्बा कद, उन्नत ललाट, भरा-पूरा शरीर, पहलुओं में साहित्त–संस्थाओं के लिए दर्द और स-तेज आँखों में धुन के स्फुलिंग।

अफसरी ठाठ में नहीं—अपनी मस्ती में उमाशंकरजी का क्रांतिवाहक कलाकार, सरलता की सुफेद चादर में अपने को आवेष्टित किये. कभी रिक्शा पर, तो कभी पैदल, पटना की सडकों पर बेतहाश बढ़ता नजर आयेगा। क्यों? जरा बढ़कर पूछिये, मालूम होगा आज प्रेमचंद की जयंती है, तो कल प्रसादजी की, आज इस महापुरुष का जन्म दिबस हैं तौ कल किसी साहित्यिक का, स्वागत-समारोह, बस, उसमें तल्लीन — व्यस्त। साहित्यिकता उमाशंकरजी की पैशा नहीं, फर्ज के निभाने में उमाशंकरजी ने आज तक

अपने को खपाया है– गँवाया हैं।

आचार्य शिवपूजन सहाय अपने आप में हिन्दी साहित्य के इतिहास थे ऐसा लोग मानते है, जानते हैं तो उमाशंकरजी भी बिहार के साहित्यिक जागरण की प्रेरणा हैं इसे स्वीकार करने में कहीं भी प्रश्न बोधक चिन्ह खड़ा नहीं होता।

उमाशंकरजी की कर्त्तव्य निष्ठा और लगन-शीलता का यह ठोस प्रमाण है कि अभी तक साहित्य के विभिन्न अवश्यक अंगों की पूर्ति इन्हों ने लगभग ६० पुस्तकों के प्रेणेता के रूप में की है।

–दिनेश प्रसाद सिंह

सम्पादक नवराष्ट्र पटना

६

जिस प्रकार मामूली वस्तु भी किसी बड़े और कुशल कलाकर के हाथ में पड़कर विशेष महत्वपूर्ण हो जाता है, उसी प्रकार श्री उमाशंकरजी ने इस ४७ वर्ष की अल्प अवधि को अपनी साहित्यिक तत्परता, कर्मठता, जागरूकता से अत्तन्त ही महत्यपूर्ण बना दिया है। ४७ वर्ष की अल्प अवधि में उन्होंने लगभग साठ महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया है। तथ्य इस बात का द्योतक है कि उन्होंने अपने जीवन के एक क्षण को भी निरर्थक नहीं जाने दिया हे। आज की दुनियां में नारे बाजी और पर्टी बन्दो की धूम है। उसी की तूती बोलतो है, जो चीख—चीख कर अपना राग अलापना जानता है। किन्तु इसके ठीक विपरीत श्री उमाशंकरजी का व्यक्तित्व है। वे सदा नारेबाजी से दूर रहे हैं—पार्टी बंदी के बिरुध्द रहे है। उन्हों ने अपने विषय में कभी भी कहीं भी कुछ नहीं किया है।

भीड़--भम्भड़ से सदा दूर रहकर निष्कलुष जीवन ही उनका आदर्श रहा है । उनके हृदय की स्वच्छता यथा स्वाभाविक सरलता ऐसी है, जो सबको बरबस उनकी ओर आकृष्ट करती है । श्री उमाशंकरजी केवल लेखनी के बलपर आज ख्याति के उच्च शिखर पर पहुँच सके हैं । इनकी पैनी आलोचक दृष्टि ने साहित्य के अनेका नेक ऐसे महापुरुषों का उद्धार किया है, जो अतीत के गर्भ से प्रायः विलीन होते जा रहे थे । श्री उमा-शंकर जी जहां भी, जब भी रहे हैं -एक साहित्यिक संस्था के रूप में आलोकित प्रकाशित होते रहे हैं । आज देश में कोई भी ऐसा साहित्यिक नहीं है , जो श्री उमाशंकर जी की लेखनी से परिचित न हो । संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि श्री उमाशंकर जी अपने आप में साहित्यि के एक ऐसे जीवन्त पुस्तकालय के रूप में हैं, जो अपने साथ अतीत की साहित्यिक परम्पराओं की समृद्धि को लौ लिये ही चलते हें, साथ ही भविष्य की ओर भी बराबर संकेत करते रहते हैं ।

{ शिवेन्द्र नारायण
{ सम्पादक, ज्योत्सना, पटना १६

॥ ७ ॥

Mr. Umashankar has been known to the literary world for more than two decades and a half as prolific writer on diversc topics—literary. biographical, economic and political and this prodigious writer is gifted with a rare flexibility of style. He has accomplished the herculian

task of riviving our interest in the old stalwarts of literature who have been completely obliterated out of the mind of the public and literary commentators. It has been our misfortune that a great poet of the genius of Sri Mahesh Narayan has been completely forgotten. No impartial writer of literary history will fail to appreciate Sri Mahesh Narayan as the inaugurator of the great tradition of 'KHA-RIBOLI,' but somehow or other, Mr. Narayan has been allowed to rest in the annals of time and no historian has cared to examine his priceless writings. Mr. Umashankar has dug out the forgotten annals and has done the poineering task of the revaluation of a forgotten prodigy. Mr. Uma Shankar has not only cared to collect biographical data and facts about the authors concerned but he has also gathered valuable ancedotes. interesting opisodes and the like to make his essays interesting. Mr. Uma Shankr's style is very much akin to that of Lytton Strachey, who does not merely narrate facts about the Eminent Victorians' but also passes mature judgment about their works.

PROF. DASRATH TIWARI.

Sanskrit College, Patna.

॥ ८ ॥

साहित्यकार श्री उमाशंकर जी से मात्र बिहार ही नहीं, संपूर्ण हिन्दी-जगत परिचित और प्रभावित है। राजकीय प्रशासन संबंधी सेवा में रहकर तथा विभागीय व्यस्तताओं के बावजूद आपने मात्र ४६ वर्षों की अवस्था में जो अबतक ५ दर्जन पुस्तकों का प्रणयन किया है और सैकड़ों दुर्लभ शोधपरक निबंध लिखे हैं वह अपने आप में एक चमत्कार है। जहाँ तक लेखनी संचालन का प्रश्न हैं—कहना पड़ता है कि वरदा शारदा ने श्री उमाशंकर जी को जादू की कलम तथा विनायक की प्रतिभा देकर अवतरित किया है। आप में वस्तुत: वह अपूर्व चमत्कार है कि किसी भी सरस्वती के साधक को सहसा चमत्कृत कर देता है। आप की लेखनी ने जिसे छूदिया वह कुन्दन की भांति चमक उठा। आप जहाँ गये वहाँ की भूली-बिसरी तस्वीरों को रूपायित कर जीवन्त बना दिया तथा अनेक-अनेक घिसती—मिटती रेखाओं को इतिहास में चमत्कृत करके ही छोड़ा।

रामरीझन रसूलपुरी,
सम्पादक उतर बिहार, पटना

॥ ९ ॥

हिन्दी संसार के ख्याति प्राप्त एवं साहित्यकार प्रियवर श्री उमाशंकर जी इतनी कम उम्र ने ही जो स्तुत्य साहितम सृष्टि की है, उसके लिए हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका नाम अमिट अक्षरों में अंकित रहेगा। सरकार सेवा में रहते हुए भी साहित्य के इतनी अधिक सेवा के। के उदाहरण अधिक नहीं मिलते।

श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी का नाम इस प्रकार के साहित्यिकों में गौरव के साथ लिया जा रहा है। प्रियवर उमाशंकर जी उसी वर्ग के साहित्यकार हैं और हमें उन पर गौरव है।

आचार्य मनोरंजन

उप-कुलपति, देवघर विद्यापीठ

१०

श्री उमाशंकर जी की कुछ पुस्तकों को मुझे पढ़ने का अवसर मिला है और मैं उनकी विलक्षण प्रतिभा एवं गहरी अन्तर्दृष्टि से बहुत प्रभावित हूँ। जहाँ तक मेरी जानकारी है, उनकी 'सन्ताल संस्कार की रूप रेखा' शीर्षक पुस्तक के टक्कर का प्रबन्ध ग्रन्थ हिन्दी की बात तो अलग रहे अंग्रेजी भाषामें भी उपलब्ध नहीं है।

श्री गणेश चौबे

क्षेत्रीये सम्पादक फौकलोर, कलकता,

११

सत्य जितना ही सूक्ष्म है, उतना ही व्यापक भी। उसका विस्तार अगम एवं अगोचर है। धर्मतत्व के समान ही वह गुहाओं मे निहित रहता है। गुहाओं में प्रवेश करने बाले और समुद्र के अतल में गोते लगाने वाले विरले ही होते हैं। क्योंकि यह कार्य बड़े ही अध्यवसाय का होता है। ऐसे अध्यवसाय के लिए साहस एवं धैर्य, परिश्रम एवं लगन के साथ-आज बड़ी सूझबूझ की भी आवश्यकता होती है।

श्री उमाशंकर जी जो कार्य करते जा रहे हैं, उससे ज्ञात होता है कि इनमें ये सभी गुण हैं। प्रबुद्ध शोधात्यिक प्रवृत्ति के ही नहीं, वल्कि शोधात्मक प्रतिभा के भी वे अधिकारी हैं। और शोध की दिशा में हिन्दी साहित्य की तथा विशेष रूप से विहार की अमूल्य सेवा कर रहे हैं। इन्हें सरकार के पुराने प्रतिवेदनों का देखने, परखने की सुविधा भी प्राप्त है। इसमें सन्देह नहीं कि वे हिन्दी साहित्य के एक बड़ अभाव की पूर्ति कर रहे हैं।

+ + +

श्री उमाशंकर जी धुनि व्यक्ति हैं, निर्माण तथा विकास के प्रेमी है। इनको प्रतिभा विश्व कोषात्यक है और इनका अध्यवसाय धैर्य पूर्ण है।

कविवर रामदयाल पाण्डेय

१२

श्री उमाशंकर विहार के उन वर्चस्वी वाणी-पुत्रों में है, जिनकी लगन, परिश्रमशीलता, अध्यवसाय और ईमानदारी अपना उपमान नहीं रखती, वे एक धुनी साहित्यकार है, जिसके तन में तारुणय मन में मनीषा और आत्मा में आलोक की आभा अनवरत अंगड़ाइयाँ लेती हैं।

मुझे विश्वास है कि उमाशंकर जी की सन्ताल संस्कार की रूपरेखा कृतित्व केवल राष्ट्रभाषा का ही नहीं प्रत्युत विश्व साहित्य को एक ऐसी देन सिद्ध

होगी जो ज्ञान, बिज्ञान,एवं मनोविज्ञान के विद्यार्थी वर्ग को ही नहीं बल्कि विद्वान मण्डली को भी एक अपूर्व अभा प्रदान करेगी ।

+ + +

भाई उमाशंकर हिन्दी हिमालय पर विराजमान उमा और शंकर दोनों की मंगल मूर्ति हैं । नन्दी के गुण भी धारण कर उन्होंने गणेश और कार्तिकेय दोनों का प्रणाम प्राप्त कर लिया है ।

कविवर ब्रजकिशोर नारायण

१३

मैं श्रद्धेय श्री उमाशंकर जी को साधुवाद देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थी हूँ कि उनकी आयु, आत्म-शक्ति और साहित्य-सृजन की कारयित्री प्रतिभा दिनानुदिन प्रखरतर होती चली जाय ताकि हिन्दी साहित्य के इतिहास में मूर्द्धण्य संस्मरणकार के रूप में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाय ।

मुझे तो लगता है कि स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय, पं० बनारसी दास चतुर्वेदी एवं श्रीमती महादेवी वर्मा के वाद सम्प्रति श्री उमाशंकर जी ही ऐसे एक मात्र अयशस्वी संस्मरणकार है जिनकी तुलना में हिन्दी के दूसरे संस्मरणकार कम-से कम कृति प्राचुर्य की दृष्टि से तो नहीं ही आते हैं ।

कन्हैया लाल पाण्डेय, 'राकेश'
रांची विश्व विद्यालय

१४

तो लोग उसे पत्थर कहते थे—एक साधारण पत्थर। क्योंकि वह पत्थरों के बीच रहता था। वह निःस्वार्थ और निर्विकार भाव से प्रकाश लुटा रहा था। अप्रत्यक्ष रूप से लोगों पर उसका प्रकाश पड़ता था। उस प्रकाश में अपने जीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर लोग चलते थे, लेकिन लोगों ने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि यह प्रकाश कहां से आता है। इसका उद्गमस्थल कहां है। समय की धूल की परतें उसपर गहरी होती जाती, लेकिन प्रकाश को ढक न पाती। प्रकाश उन परतों के आवरण को चीर कर बाहर आ ही जाता है। समय की धूल पड़ती गयी, पर वह पत्थर पराजित न हुआ। लेकिन लोगों की नजर में वह पत्थर ही रहा।

एक दिन कोई अजनवी उन पत्थरों के देश में आया। शकल सूरत से वह बड़ा अलवेला लगता था—हमेशा खोया-सा। न जाने क्या सोचता—क्या ढूड़ता। उसकी आदत थी कुछ नई बातें सुनने की, कुछ नयी बातें जानने की एवं कहने की। ऐसी बातों को सुनकर लोग अनसुनी कर देते और जानकर भी अनजान वन जाते और उन्हें अहेतु समभकर उपेक्षा करते। पर वह अजनवी ऐसी बातों में खोया रहता—भूला रहता।

एक दिन उसे पत्थरों की ढेर में से कुछ अजीब प्रकाश निकलते मालूम हुआ। वह प्रकाश उसकी आँखों में जा बसा और की उसकी तेज आँखों ने उस प्रकाश को पहचान लिया। वह अजनवी पत्थरों को हटाने लगा। लोग उसके इस काम को देख कर हँस रहे थे। आखिर उसने उ त

पत्थर को निकाला जिसके लिये वह पत्थरों को हटा रहा था। उस दिन वह बहुत खुश था।

कुछ दिन के बाद चारो ओर यह खबर आग-सी फैल गई कि वह पत्थर, जिसे उस अजनवी ने निकाला, पत्थर नहीं, हीरा था, और वह अलवेला अजनवी, कोई मामूली आदमी नहीं, वह मानव जौहरी है। वही मानव जौहरी, श्री उमाशंकर हैं।

कविवर 'तिलक'
भूतपूर्व अध्यक्ष, बिहार साहित्यकार संघ
ब्रांच—दुमका।

१५

श्री उमाशंकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं हिन्दी साहित्य जगत के यशस्वी साहित्यकार हैं। विगत तीन-चार दशकों से इनकी साधना का दीप निरंतर जल रहा है। इनकी लेखनी ने भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं राजनीति के बहुविध छोरों का स्पर्श किया है जिससे इनकी कृतियों का क्षेत्र बहुत ही व्यापक हो उठा है। विभिन्न विषयों पर लिखते हुए इन्होंने जिस शैली को जन्म दिया है, वह बिलकुल इनकी अपनी हैं। सतत् अन्वेषण एवं नवीन मान्यताओं की स्थापना इनकी प्रतिभा की विशिष्टता है। स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद खत्री एवं स्वर्गीय महेश नारायण को प्रकाश में लाकर और उन्हें चर्चा का विषय बनाकर इन्होंने बिहार और हिन्दी दोनों को गौरवान्वित

किया है। यह कहा जा सकता है कि उमाशंकरजी बिहार के साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जागरण-इतिहास के चलते-फिरते विश्वकोष हैं।

महेश नारायण 'भारतीभक्त'

भूतपूर्व सम्पादक 'नवशक्ति' साप्ताहिक

१६

धुन का धनी—लग गए जिस काम में उसेतो पूरा करके ही छोड़ेंगे—ऐसा है जिसका व्यक्तित्व-वह व्यक्ति है उमाशंकर। एक ओर सरकारी खजानेका कोपागार पदाधिकारी का व्यस्त जीवन और दूसरी ओर कलम-शिल्पी -साहित्यिक। एक और सनक है उसके पास-गड़े मुर्दों को कब्र से उखाड़ कर उनके भूतों को सबों के सामने ला खड़ा करना। कलम का धनी और कलम-शिल्पी जो कहें, सब है वह। व्यस्त एवं कर्ममय जीवन में भी समस्या निकालकर कुछ कर लेना-साहित्य सृजना और एक न एक नए विषयों का ईजाद करना - सबों के समक्ष लाकर खड़ा कर देना-कोई आसान बात नहीं। हरेक वस्तुको नई नजर से देखना और नूतन विचार—धारा में परिप्लावित कर देना तो उनके लिये बायें हाथ का खेल हो गया है। नई सूझ और बूझ आज की दुनिया की एक खास विशेषता है। उस विशेषता को बरकरार रखना भी एक विशेषता है। आप जहाँ भी उनसे मिलेंगे वहाँ उनसे साहित्य की चर्चा ही उनके मुख से आपको सुनने को मिलेगी। रास्ते में हों या वीथि में हो,किसी के घर पर हो या देहलोज-में, दफ्तर में हों या कोर्ट

में, जहाँ भी उनसे मिलिए,बस एक ही धुन है—साहित्य-चर्चा, साहित्य रचना और शोध संस्थानों के निर्माण और कार्यक्रम एवं योजनाओं की बातें। ये सारी प्रक्रियायें उनकी कर्म तत्परता एवं कर्मठता के द्योतक हैं। उम्र में छोटा हो या बड़ा—साहित्यिक होना चाहिए-वह उनका दोस्त बन जाता है। वे दोस्त बनाना भी जानते हैं और बनाना जानते हैं शागिर्द।

उमाशंकरजी से मेरा स्नेह बहुत दिनों से चला आ रहा है। साहित्यिक नगरी और ऐतिहासिक जिला शाहाबाद के शुक्लपुरा गाँव में इन्होंने जन्म लिया १५ सितम्बर, १९२० ई० को। भला फिर उस जिले की नस्ल असाहित्यिक कैसे हो सकती है। बचपन से ही साहित्य की ओर रूझान-और बड़े होने पर तो उस रूझान ने अपना वेड़ा और तीव्र कर दिया और साहित्य के विभिन्न अंगों पर जब से कलम चलती जा रही है— साहित्य निर्माण होता जा रहा है, जिसका मूल्यांकण आगे चल कर लोग करेंगे। अभी तो वे साहित्य भंडार की पूर्ति कर रहे हैं।

आलोचनात्मक साहित्य, राजनीतिक ग्रंथ, बालोपयोगी साहित्य और महिलोपयोगी कृतियाँ ——उमाशंकर के तगडे स्वरूप को प्रकट करती हैं। दूसरे शब्दों में यों कहें कि बच्चे -विद्यार्थियों से लेकर प्रोढ़ों तक के लिए इन्होंने साहित्य-सर्जना की है और करते जा रहे हैं। जब चीन ने भारत पर अपना खूनी पंजा बढ़ाया तो वे सबों के सामने "चीन का खूनी पंजा" लेकर उपस्थित हो गए। आप देखेंगे कि उमा शंकर जी समय को बड़ी ही गतिशील ढंग से पहचान कर ले चलने में

कोई कसर नहीं करते–कलम को प्रगति की ओर ले जाने में नहीं हिच कते। मानो उपनिषद के महामंत्र –" चरैवेति—चरैवेति—चरैवेति–" को चरितार्थ कर रहे हैं।

नाटक, कहानी, गद्य—पद्य-आलोचना क्या नहीं कहा जाए—सभी ओर इन्होंने अपना प्रयोग चला रखा है। प्रयोग में असफल होना नहीं जानते है। प्रयोग असफल होगा ही क्यों-उसे सफल बनाना ही होगा। —जिसकी यह तमन्ना हो भला, वह क्यों नहीं सफलता हासिल करेगा।

संथाल परगना में अपने पद से स्थानांतरित लेकर जब उमाशंकर आए तो आते ही सबसे पहला काम किया—नए बिहार के निर्माता स्व० बाबू महेश नारायण की जन्मभूमि संथालपरगने की दुमका नगरी में उनकी स्मृति में–एक शोध-संस्थान की स्थापना की। बाबू साहेब के ऊपर इन्होंने अपनी सशक्त लेखनी से–उनकी साहित्यिक एवं राजनीतिक विचार धाराओं पर कलम चलायी–उनके ऊपर एक महानग्रंथ की रचना भी आपने की। जिसे बिहार ने भुला दिया था, उसे फिर से बिहार वासियों के हृदय में ला-बिठाया। इतना ही नहीं, बाबू महेश नारायण हिन्दी के आधुनिक साहित्य-जगत में सर्व प्रथम महाकवि के रूप में आ गए हैं। जिस प्रयोगवादी कविता की आज काफी चर्चा है वैसे बहुत वर्षों पहले उनकेद्वारा प्रकट हुई थी। बाबू महेश नारायण को विहार के राजनीतिज्ञ तथा अपने संबंधी के रूप में तो जानता था, और जब मै इस (संथाल परगना) जिले में आज तो उनकी जन्मभूमि आदि का भी पता लगाया पर बाबू साहेब हिन्दी साहित्य के भी मनीषी थे, उनका यह रूप जो अन्तल गर्त में पड़ा था उसे उखाड़ कर सवों के सामने

ला रखने का श्रेय है–उमाशंकरजी को। आज वह उपेक्षित किन्तु जाज्वल्य मान नक्षत्र सबों के सामने पुनः प्रकाशमान और उदीयमान तेजस्वी नक्षत्र के रूप में प्रकट हुए हैं। इसका सारा श्रेय उमाशंकर जी को ही है। इतना ही नहीं स्व० अयोध्या प्रसाद खत्री तथा स्व० श्री मुंशी राधालाल माथुर आदि पुराने साहित्यकारों को नए रूप में हमारे सामने ला खड़ा किया। उमाशंकर ने इन भूले-बिसरे लोगों को सामने ला दिया है-- शोध कर्त्ता साहित्यिक अब उनपर अध्ययन करें, खोज करें और उन्हें आगे बढ़ायें और स्वयं डॉक्टर ऑफ लिटरेचर आदि की डिग्री प्राप्त कर सकते हैं।

चूँकि उमाशंकर जी स्वयं भारतीय--स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रह चुके हैं–जेल की यातनायें सह चुके हैं अतः स्वतः मानस राजनीतिज्ञ बन गया है और फिर अध्ययन ने उस पर गांभीर्य की सृष्टि कर दी है। इसीलिए तो विरोधाभाषी विषयों जैसे गांधीवाद सर्वोदयवाद, समाजवाद एवं फास्टिवाद आदि पर इनकी कलम सहज ही सफलता प्राप्त कर लेती है।

जहाँ भी उमाशंकर जाते हैं; जहाँ पर चन्द दिन रहते हैं वहाँ ही एक-न-एक सजीव संस्था की नीव डाल देते हैं और उसकी सफलता के लिए स्थानीय लोगों पर उसका भार दे देते हैं। यानी वे स्वयं उससे निर्लिप्त हो जाते हैं पर, अप्रत्यक्ष रूप से वे उनका स्वयं संचालन भी करते हैं। अयोध्या प्रसाद खत्री शोध संस्थान, श्री महेशनारायण शोध संस्थान, साहित्यिक गोष्ठियों की आयोजनायें एवं संस्थान, की स्थापनायें —न जाने कितनी संख्याओं में इन्होंने की है। वे

संस्थायें ही बताती हैं कि उमाशंकर क्या हैं और क्या कर सकते हैं।

महापंडित राहुल सांकृत्यान, वियोगी जी, संम्पादक प्रवर पं० बनारसीदास चतुर्वेदी जी आदि ख्यातिलब्ध साहित्यकारों ने जीवनी एवं संस्मरण लेखन की दिशा में हिन्दी जगत के पथ को प्रशस्त किया उस पथ को इन्होंने अपना कर, नया रूप देकर जीवनियाँ लिखी और संस्मरण लिखे और हमारे सामने एक स्वस्थ एवं सबल उदाहरण प्रस्तुत किया।

साहित्य-साधक उमाशंकर ऐसा प्रतीत होता है कि साहित्यिक ऋषि प्राण आचार्य शिवपूजन सहाय जी के पथ का अनुसार कर रहे हैं। हिन्दी- जगत के लिए यह अहोभाग्य है जिसने उमाशंकर जैसे व्यक्तित्व को सामने ला खड़ा किया है। सर्वतोमुखी प्रतिभावाले इस व्यक्ति के दीर्घायु की मैं कामना करता हूँ।

श्री **गोपाल लाल वर्म्मा,**
अध्यक्ष, संताल परगना जिला
साहित्य परिषद
दुमका

१९

वैसे हिन्दी में कपोल कल्पित कहानियाँ, गल्प और उपन्यास लिखने वाले बहुत सारे लोग हैं। विभिन्न विषयों पर तथाकथित मौलिक निबंध

लिखने वालों और कवियों का भी अभाव नहीं है। क्या यह कहने की आवश्यकता है कि साहित्य की शव परीक्षा करने वाले बाईमान और और बेईमान आलोचक भी हिन्दी संसार में कम नहीं है ?

किन्तु उमाशंकर जी ने जिस प्रकार, विस्मृति के गर्भ में छिपे चरित्रों और घटनाओं पर से धूल झाड़ पोछ कर पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित अपने लेखों और पुस्तकों के माध्यम से उन्हें पठनीय बनाकर प्रस्तुत कर दिया है, वह अद्‌भुत और विलक्षण हैं। सच कहता पत्रकार होते हुए भी जो में नहीं कर पा रहा हुँ वह करने वाले, इस व्यक्ति से मैं ईर्ष्या करता हूँ।

धुन के पक्के श्री उमाशंकर जी ने जिस प्रकार सर्व श्री अयोध्या प्रसाद खत्री, राधालाल मथुरा ओर श्री महेशनारायण जैसे साहित्यिक नेताओं को तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं और सरकारी रेकार्डों से बरामद कर हिन्दी संसार के हवाले कर दिया है, उसके ऐतिहासिक महत्व से कोई इन्कार नहीं कर सकता। शायद इतना ही करने के लिए हिन्दी साहित्य उनका चिरकाल तक ऋणी रहेगा।

मगर इस संबंध अब तक प्रकाशित लेखों एवं पुस्तकों के अतिरिक्त श्री उमाशंकर जी के पास जो मसाला एकत्र है, उनके बारे में, थोड़ी बहुत जानकारी मुझे भी हैं। मेरा विश्वास है कि जिस दिन उनके इस अथक परिश्रम और गवेषण परिणाम प्रकाशित होगा, देखने वाले दाँतो उँगली दबाएगें। मेरी इच्छा है कि वह दिन जल्द-से-जल्द आए।

सरकारी अफिसर होते हुए जो समय निकाल कर, श्री उमाशंकर जी ने हिन्दी साहित्य को जितनी मौलिक कृतियाँ दो हैं, उनकी संख्या,

विधिता और विशिष्ठता देख कर मैं आश्चर्य चकित रह जाता हूँ। एक साथ ही नाटक,आर्थिक साहित्य, जीवनी महिलोपयोगी और आलोचनात्मक तथा सामयिक अन्तर राष्ट्रीय राजनीति पर समान अधिकार के साथ लिखने वाले हिन्दी में नहीं,अन्यान्य भाषाओं में भी शायद गिने चुने ही होगे। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि श्री उमाशंकर जी अगर सरकार के नौकर नहीं होते और स्वतंत्र रूप से, अपना संपूर्ण समय पेशाकर लेखकों की तरह साहित्य सृजन में ही लगा सकते तो शायद हिन्दी साहित्य का बहुत कल्याण हो सकता।

विजय किशोर

पत्रकार

'आज का मानव अपने समाज में रह नहीं पाता है। वह दम तोड़ रहा है। कारण, वहाँ स्नेह नहीं, सद्‌भावना नहीं, सद्‌व्यवहार नहीं वहाँ तो घृणा है, संघर्य है, मानव मानव में अविश्वास की भावना रही है हिंसा अविश्वास की देन है। जब मानव में हिंसा की भावना आती है तव विवेक रहित मानव पशु बन जाता है, आज के मानव में पशु प्रबृत्ति आगई है। उसकी सभी समस्या रोगों का एक मात्र कारण है — उनकी पशु प्रवृत्ति मानवी इतिहास में प्रथम वार मनुष्य में आज पशु प्रवृत्ति चरम सिमा पर पहुंची है। मानवो सभ्यता के लिए यह स्थिनि बहुत ही खतरनाक है।

—उमाशंकर

भावयित्री प्रतिभा के धनी--
श्री उमाशंकर

१

उमाशंकर जैसा ऊबड़-खाबड़ टाइप का व्यक्ति अल्पायु में ही अविराम इतना कुछ कर जाय यह वैचित्र्य ही अपने आप में अभिनन्दन है, इसके लिए औपचारिकता अपेक्षित नहीं।

मोती पर क्या आब चढ़ाना ? हीरे को चमकना ?
कुन्दन पर कलई कैसे ? कोयल को कुहुक सिखाना ?
गंगा को पावन क्या करना ? सागर को क्या भरना ?
गंधराज को कृत्रिमता से अहो. सुगंधित करना !
सगुण- सुलभ-- साकार-सुधाकार को भूषण पहनाना ?
मलयागिरी पर्वत में कैसा चन्दन लेप लगाना ?
दीपक से रवि का परिचय ? रंग इन्द्र धनुष पर लगना ?
विद्युत को क्या प्रगति ? अग्नि को कैसा ताप दिखाना ?
जो अभिनन्दनीय है उसका फिर कैसा अभिनन्दन ?
वन्दनीय का बन्दन कर विनयी करता निज वन्दन ?

श्री ललित कुमार सिंह 'नटवर'

२

मेरे सामने
तारीख का अलबम है,
उसका यही क्रम है
कि "कल" को धकेलकर
"आज" सदा आता हैं ।
और इस जमाने को मैंने देखा है
जो भूत को भूलकर
केवल वर्तमान के गीत गाता है ।
लेकिन उमाशंकर
तुमने केवल उन्हीं के गीत गाए हैं
जो सदा-सदा से
भूले हैं—बिसरे हें ॥
इसलिए,
तुम भी याद किये जाओगे
आज जो तुम हो
कल के पृष्ठों पर आओगे ।
तुम्हारी इस जयन्ती पर—
मैं बधाई तुम्हें देता हूँ ।
जीओ तुम शरदःशतम् ॥

श्री प्रफुल्ल चन्द्र पट्टनायक

३

मैने आज
एक नया सपना देखा है--
कि, एक नीव का पत्थर
कगार पर चमका है ।
और यह पत्थर
और कोई नहीं
हमारे ही बीच का है उमाशंकर
नीव में जानेवाले
डरोमत
तुम अब अंधकार में रहोगे नहीं
तुम भी कभी चमकोगे कगार पर।

श्री कात्यायन

४

तुम धरा के गीत
लय विस्तृत गगन के,
जिन्दगी की धुपहली
चा र लपेटे शान्त मन से
द्वन्द्व छाती में छिपाये
समय की ललकार
तुम माड़ते सिपाही कलम के

राह के पत्थर तराशे
बन गई प्रतिमा !
एक खोयी जिन्दगी में,
प्राण की गरिमा !
उमाशंकर ! पादपों के फूल तुम,
उमाशंकर ! नील-नभ के कूल तुम !

श्री राम प्रसन्न सिंह

॥ ५ ॥

जगा दिया जीवन में तुमने, जीवन का मधु-प्यार,
जिस पर फूला नहीं समाता, सुधिमय यह संसार।
यद्यपि- पहनाया है तुमने, अपनेपन का हार.
फिर भी यह कामना नहीं है, पाने को अनुपम उपहार
अन्तर्ज्वाला में जलकर ही, बने सदा निर्धूम निखार।
जीवन-ज्योति जलाकर तुमने, पाया मृदुल दुलार ।
साधक बन कर मन मन्दिर में, मंडित किए सहित के भाव,
जन-जन का तुम कंठहार हो, जीवन के तुम सरल स्वभाव,
तुम निर्भीक वन्य निर्झर हो, नित्य चिरंतना औ निर्बन्ध;
स्वाभिमान के तुम सेनानी, शब्द-गिरा के तुम अनुबंध.
प्राण-प्राण के तुम संबल हो, दृढ़ता के तुम रत्नाकर

एक गीत के छंद–ताल हो, एक साथ तुम सरि-सागर।

श्री सतीश चन्द्र झा

६

धन्य उमाशंकर सुजन, परहित करते काज।
नींद गँवाकर आपनो, रखते सबकी लाज।
रखते सबकी लाज, उमर हो लम्बी उनकी।
यश फैले संसार, प्रतिष्ठा होवे उनकी।
कह राही कविराय, सभी उनका यश गावे।
ऐसे नर पर प्राण, सेंकड़ों बलि-बलि जावे।

श्री रघुनन्दन झा राही

७

सुना:

लेखनी का धनी
अंतर का गुणी
प्रगति का अंकक
साहित्यिक शहीदों के–

चरणों का पूजक
साहित्य का सर्जक
जीवन का दर्शक;
चालती है लेखनी जिसकी निरंतर,
कहते सब उसको ही भाई 'उमाशंकर'!

देखा:

लम्बा कद,
उलझे बाल,
हैं कपड़े अस्त व्यस्त,
चलता जब भावमग्न—
लगता है झूमता हो गज
जैसे होकर मदमस्त
दूसरों के लिए चिंचित
अपने-आप से बेखबर,
दिन भर 'कोषागार' का चक्कर
रात में साहित्य-सृजन,
बाहर से रूक्ष-व्यस्त
अंतर्मन सरल-तरल
जल रहा प्रदीप प्रेरणा का—
उमाशंकर!

जाना:

सतत जाग्रत

अग्नि धर्मा ज्वालामुखी,

जो टकराऐ उससे जल जाय

जो अपनापन का हाथ बढ़ाए,

तरल तप्त लावा से रत्न पा जाय

वाह्य जितना शांत-

अंतर में उतना ही ऊष्मा-ज्वार,

सतत सृजनशील और प्रखर-

यह है हमारा 'उमाशंकर' !

श्री हरिवंश 'तरुण'

सम्पादक, हिन्दी साहित्य

८

उन्नत भाल, सादगी से परिपूर्ण आप का जीवन,

मानवता के सहज रूप में निखर रहा निर्मल मन ।

शंकित-भ्रमित, पंथ में होना नहीं आपने जाना,

कर्मठता, साहित्यिक सेवा को ही अपना माना ।

रसमय अन्तर, अन्वेषक की दृष्टि आपने पायी,
जहाँ रहे साहित्य–काव्य की वहीं सुज्योति जलायी।
यती व्रती साहित्य–शिरोमणि लो युग का अभिनन्दन।
होवे सफल सिद्धयाँ सारी, लक्ष्य सदा हो पावन।

—श्री नरेश चन्द्र वर्मा 'नरेश'

९

उस पार न जाने क्या होगा, इस पार मिलन की आशा है!
मालूम नहीं क्या यह जीवन जगती पर एक तमाशा है!!
शंकित उरके निज भावों को आकर कोई तो सहला दो।
कर्तव्य कमल के कुञ्जों में आकुल प्राणों को बहला दो।
रजनी के दीप लिए फिरते नयनों में अमिट पिपासा है!!
जीवन के इन सूने पथ में अभिनव प्राणों की भाषा है!!

—श्री बलभद्र नारायण सिंह 'बालेन्दु'

१०

धन्य हुई यह धारा उमाशंकर को पाकर।
सीपी–सम्पुट धन्य हुआ स्वाती को पाकर॥
सीपी से दो मोती निकले, उमा और यह शंकर।

पुण्य अलौकिक यही घड़ी थी,
अनुपम ऊषा वहाँ खड़ी थी,
अरुणिम आभा किरणों की लँ,
उतरी वह डाली लेकर।

सदा शारदा साथ रही है,
महा सम्पदा साथ रही है,
कला सुधाकर मोती को,
है गुम्फित करता,चुन-चुन कर।

वरद पुत्र भारती दुलारा,
कला रथी सारथी दुलारा,
अंबुधि से मोती के दाने
उठा रहा है चुन-चुन कर।

शैशव-काल महा साधक का,
वैभव-भाल रहा साधक का,
कला-सुमन संग मोती झरता
था अवनी पर खन-खन कर।

युग-द्रष्टा, युग-श्रष्टा योगी,
कलम धनी मानबनर-भोगी
तेरी ही सेवा का फल हैं,
हिन्दी जो छायी जन-जन पर।

सैंतालिस के इस बसंत में,
साठ सुमन की भेंट चढ़ाकर,
हिन्दी भाषा की आशा को,
पूर्ण किया तुमने पावनतर ।

युग-युग जीओ स्वस्थ रहो तुम,
तव सेवा हैं अपरंपार ।
गुणगाहक हे मातृ-उपासक,
तुम हो शत–शत गुणागार ।

श्री महेश्वर झा 'व्यथित'

११

आज उमाशंकर का आया
नूतन जन्म–दिवस है ।
मंगल-गान करो गुरूजनका
आया जम्म -दिवस है ।

युग–युग योगी जियो जगत में
शूल डगर के फूल बनें,
चूमे प्रतिवल चरण सफलता ।
सदा नियति अनुकूल बनें

जीवित रहो शरद शत तुम हे
आया पुण्य दिवस है ।
आज उमाशंकर का आया
नूतन जन्म-दिवस है ।

बढ़ो डगर पर, निडर बढ़ो तुम
हिन्दी के हे अमर-उपासक
राष्ट्र-भारती के सपूत हे
रहो सदा रत, व्रत के साधक

ईश अभय बरदान दे,
जिसका जन्म-दिवस है ।
आज उमाशंकर का आया ।
नूतन जन्म-दिवस है ।

अडिग हिमालय-सा जो रहता
हिला सका भूचाल नहीं,
पी लेता जो रोज हलाहल
मिटा सका पर काल नहीं ।

आया फिर से नीलकंठ का
देखो जन्म-दिवस है ।
आज उमाशंकर का आया
नूतन जन्म-दिवस है ।

स्वयं जला तिल–तिल तन अपना
ज्योति जगत को लुटा रहा,
सदा रहे यह दीप प्रज्वलित
जो सब दिन अभिसिक्त रहा

सम्बल सदा रहा जो सबका,
उसका जन्म–दिबस है
आज उमाशंकर का आया
नूतन जन्म—दिवस है

—श्री श्यामसुन्दर प्रसाद 'मस्ताना'

१२

उदार उत्कृष्ट बोध-सम व्यवहार
मान—अपमान सम विमल विचार ॥
साम—दाम भेद–नीति पूर्ण अभिज्ञाता ।
अंके खेला करे जेन प्रिय भन्नि–भ्राता ॥
काव्य कला प्रोत्साइन दायक चतुर ।
राष्ट्री प्रेमो श्रमशील रचना मधुर ॥
जन—मन भ्रान्तिहर कवि सुलेखक ।
याचक जगत-हित सुमार्ग दायक ॥
नव—नव अभिव्यक्ति नवीन कल्पना ।

तिमिर तड़ित प्रति शब्देर झनझना ॥
ईश्वरेर फुलबगानेर सौरभमय फूल ।
प्राप्त की दीर्घायु मिटाओ जनेर शूल ॥

प्रकाश राम दास

हरि सभा, दुमका ।

१३

जीवन सुखमय पग-पग पर हो,
करो सृजन सत्य-शिव-सुन्दर,
ज्योतित हो जग का यह आंगन,
बनें तुम्हारे चरण शुभंकर !

तुम से ज्योति मिला तृण-तृण को,
तुम से सरसित हुए नवांकुर
नव्य जागरण के रथवाहक
तुमने दिये हमें यह नव सुर

यही कामना, सुयश लेखनी
ले अविराम अमंद तड़ित गति,
चलते रहो युगोंतक तुम हे !
वितरित करो धरा को सन्मति ।

'उमा' तुम्हारी सिद्धि बनी है
और साधना हैं ये 'शंकर'
जीवन सुखमय पग-पग पर हो,
करो सृजन सत्य—शिव-सुन्दर।

—नीलाम्बर का 'निर्झर'

१४

हे शंकर, हे नीलकंठ तुमने तम-विषका पान किया;
त्यागे प्राणों के मोह और जन—हित पर तुमने अमिय दिया।
रूक्ष रूप ऊपर से लगता, अन्तर में निर्झर बहता;
सिंचित करता जन-प्राणों को, वृंत-वृंत पुष्पित करता
प्रति पग पर कलगीत मनोहर ऐसे तुम ने गान दिये
जिसका स्वर मधुरिम प्राणों को प्रतिक्षण प्रतिपल रहता भाता है
सुख—दुख के तीरों से बहते विटप तृणों को प्राण दिये;
प्रेरित करता विषम क्षणों को वंशी हमें सुनाता है।
मंगलमय हो जीवन तव हे सिद्धि साधना के शंकर,
मंगलमय हो ध्रुव पथ तेरा, बने रहो तुम अभ्यं र।

— लक्ष्मी प्रसाद

१५

हरि सभा में खुशी मिलकर मनाई जा रही है
क्यों कि जै-जै उमाशंकर की मनाई जा रही है
मैं रवाना है उमाशंकर और कवि रिंद हैं
आज इन रिन्दों को सरावे उमाशंकर पिलाई जा रही है
जो कवियों के दिल अंधेरे हैं कविता लिखने में
उन दिलों को शमा उमाशंकर मनाई जा रही है
दुमका के विराँनो में आज बसी हैं बस्तियाँ
हर कवि के दिल में जै–जै उमाशंकर मंनाई जा रही है
साथ हैं हम भी हर खुशी के नासी मिल कर
जब के खुशी पर खुशी उमाशंकर मनाई जा रही है।

युसूफखान नासी

दुमका (एस० पी०)

१६

समय की परत पर परत
उधरती जा रही है,
... और तुम नित

नवीन बनते जा रहे हो,
जीवन के पृष्ठों पर एक
नया पृष्ठ जोड़ रहे हो,
ओ उमाशंकर,
तुम सिद्धि और साधना के प्रतीक हो
कोई साहित्यिक संस्था
अपने घोषणा पत्र पर
किसी प्रतीक का जब उपयोग करे
तो तुम्हारे नाम की मुहर ही
उस प्रतीक के लिए काफी है।
और उस मुहर पर ही
घोषणा पत्र की डाक
मंजिल पर पहुँच जायेगी
ऐसा मेरा विश्वास है।
इस तरह हर वर्ष हम तुम्हें
अपना हार तुमको दे सकें
और इस छियालीसवें वर्ष पर
तूर्य-रक्त-मंदारका यह हार लो।

—जयेन्द्र

१७

बन्धु विवेक उमाशंकर का
करता है अभिनन्दन !

तुम तो कालकूट पी-पी कर
हँसते ही रहते हो
रंग पुरातन को नवीन दे
कर नवीन करते हो,

बाधाएँ सुकुमार भाव से
आती पास तुम्हारे
किन्तु तुम्हारी कर्मठता से,
रहती वह दूर किनारे ॥

सिद्ध हो चुका विविध भाव के
तुम हो गायक—नायक
सरस्वती के मन्दिर के भी
तुम हो सिद्ध उपासक ॥

कीर्ति तुम्हारी फैले नभ तक
यही कामना मन की
सृजन शील भी रहे अन्त तक
क्षमता इस जीवन की !!

जुटा सका मैं नहीं कहीं से
कुंकुम— केसर— चन्दन
अस्तु तुम्हें शब्दों की माला
भावों का मृदु स्पन्दन !!
बन्धु विवेक उमाशंकर का
करता है अभिनन्दन !!

विवेकानन्द 'विवेक'

१८

तोरण सजे हैं
बन्दनवार भी लगे हैं
बज रही शहनाई
है चहल पहल छाई

मनायी जा रही आज जयन्ती
एक नेता की—

जो बैठे मखमली तख्त पर !
बधाई के तार
शुभ कामनाओं के
तांते पर तांते लगे हैं ।

आज जयन्ती है
एक कलाकार-साहित्यकार की
जो मिट्टी के पुत्रों के ही
सोये सपनों को जगाता है—
मिट्टी की आकांक्षाओं
पीड़ाओं को
वाणी प्रदान करता है,
नये स्वर भरता है ।

आज इस अवसर पर
न तोरण बने हैं !
न बन्दनवार ही सजे हैं !
पुनीत सांध्य वेला में

'पत्र-पुष्प' के नाम पर
डालियां चढ़ायी जा रहीं।
होड़ मची है आज कुबेर के पुत्रों में

वे बड़े भविष्य द्रष्टा हैं
पारखी हैं, अवसर के
देश-भक्ति राज-भक्ति
उसी पर तो आंकी जायगी !!
वे जानते हैं
परमिट पर हस्ताक्षर कैसे होता है

सघन आम्र—कुंज है
झिंगुर की झंकार हो रही !

वीणा पाणि के वरद पुत्र
मिट्टी के पन्नों के गुण ग्राहक
कर रहे अर्पित
निर्मल निश्छल हृदय से
सुन्दरता काव्य-सुमन !

झिंगुर की झंकार के साथ-सा
अगणित स्वर-वीणा के तार-तार
कर रहे एक नवीन मंत्र का
आधार

तुम तो बन्धु हो हमारे
मिट्टी के पुत्रों के अग्रज हो।
गाओ तुम एक बार,
गाओ इस मिट्टी के गीत
साक्षात् वाणी दो युग चेतना को।
तुम्हारी इस जयन्ती की घड़ी में

हमारी कामना, शुभ कामना है—
"जिओ जन-जन के लिए
मंगलमय शत वसन्त !!

कृष्ण नन्दन शास्त्री
—मंत्री 'नई चेतना'
दुमका : विहार

१६

है वही उमाशंकर
जो युग का कालकूट पीकर भी जीवित रह सकता है।
प्रबल विरोधों के रोड़े क्या ?
टूट पड़े चट्टान अजाने,
कहीं विवर से निकल सर्प
फुफकार रहा हो सीना ताने,
टूट पड़े, आँधियाँ एक संग दशो दिशाओं से,
लेकिन जो, कर छाती मजबूत साध दम आघातों को सह सकता है,
वही उमाशंकर—
युग का जो कालकूट पीकर भी जीवित रह सकता है।
जो चले गये उन्हें हम भूलें
जिसने सारा जीवन त्यागा
मातृभूमि-भाषा की रक्षा में
कसा रहा नहीं जो भागा,

जिसका है इतिहास मिट गया, दफन गया है .जो
लेकिन जो, कब्र खोद, दे प्राण उसे उसकी बोली में कह सकता है,
वही उमाशंकर
युग का जो कालकूट पीकर भी जीवित रह सकता है।
वही अमर हो सकता जिसने
दान अमरता दी सदियों
युग स्त्रष्टा वह शब्दों का
सारथी बनायी है दिशिओं को
तिल-तिल कर दर्दों के भीषण दाहक लपटों में,-
लेकिन जो, देकर जग को मधुर-मधुर मुस्कान; स्वयं ही दह सकता है,
वही उमाशंकर
युग का जो कालकूट पीकर भी जीवित रह सकता है।

— शम्भुनाथ

२०

ओ सत्य के तीर्थ यात्री
तुमने मेरे सराय में
पड़ाव डाला,
तुम्हारे सत्संग को, दर्शन को
साधु बृत्तियों ने भीड़ लगादी।
तुम्हारे तप के शिवा परिणामों ने

मुझे भी झकझोर दिया।
पर हाय !
मेरी कुंठा
मेरा साधारणपन
चाह कर भी
तुम्हारे चरणों में
उपस्थित न हो सका।
और अब
जब कि चुह चुहाते पसीनों को पोछते
तुम्हारे पड़ाव पर पहुँचा
तो तुम
रश्मि – शिखर की ओर प्रस्थान कर रहे हो।
सुना है—तुम्हारा अगला पडाव
राज्य की महानगरी हैं।
हे महानाम; हे उमाशंकर,
जरा सावधान रहना
वहाँ सहज श्रद्धालुओं का समूह नहीं
तर्क वादियों का घेरा है।
जाओ रोकूंगा नहीं
लेकिन एक वचन हमें भी देते जाओ
—"विश्राम के क्षणों में
जब कभी

कुवाँरे वन-फलों की स्मृति घेर ले
तो दुत्कारोगे नहीं।"
ओ अनुभूतियों के आलेख
जाओ-जाओ

रश्मि-कलश, बोधि सत्त्व की छाया में
तुम्हें पुकार रहा है

विनोद कुमार गौतम

२१

उपचारक है उपकारक है
अवकाश में मतवार है
उल्लेखनीय उप वर्णन में
उमाशंकर उदार है
अनुभव अनुपम आपके
अन्तर्गत अरमान है
उदय किया है अस्त को
इतिहास अनुर परिमाण है
रचना रची जो आपने

अलंकार प्रधान है
गौरव है यह हिन्द का
साहित्य में सम्मान है
साहित्यिक के संसर्ग में
उमंग दिये अपार है
स्नेह मय संपर्क में
नंद दिये आभार है

नन्द

श्रद्धेय उमाशंकर, छी
साहित्य केर शुभंकर अहाँ।
श्रद्धा सँअवनत अधिआनन
स्वीकारब, आशा अछि
स्नेहहिलय-श्रद्धा केर पुष्प अहाँ।
हिन्दी क प्रगति पुनः
संग चलैछ मैथिली-उद्बोध।
सत्य कहैछी कतेक रखैत छयि
अहँ सन भाषाक हित बोध॥
टूटल अछि भाषा
फूटल अछि भाव

मुदा तैयो भरल अछि श्रद्धाक आलोकक
बौद्धिक सभ तत्व ।
आशा अछि महाँक प्रतिभाक उपयोग
कड सकत मैथिली सब ठारा ।
अहींक आलोक में चमकैत ठामा ।
संतालीक साहित्यिक दिन-याम ॥
लीअडा आशा अछि, स्वीकारब
श्रद्धा केर फूल ।
स्नेह-अहँक भरने अछि सराबोर
हृदयक दुकूल ।

प्रो० 'विद्दित' एम० ए०

अध्यक्ष, 'समन्वय' दुमका

२२

पंचभूतीं की दीपिका
आज है जल रही
भावों के अन्त पर,
प्राणों के बोल पर,
वायु को गंध दे
आज है डोल रही ।

बिहार को सुरभित कर
साहित्य के सौरभ से
युग की अमा को
(आलोक की पट्टी से;)
चेतना के प्रकाश से;
उद्भासित किया है इसने
जीवित संस्था की संज्ञा है
अकेला इस धरा पर।

अत:
हिन्दी के चरणों पर,
"उमा" के व्रतों पर
निष्ठा की दीपिका आज है बल रही।

प्रो० रघुनन्दन "प्यासा"
हिन्दी विभागध्यक्ष
गिरिडीह कॉलेज
गिरिडीह

२४

कुहासे हटा लोल लहरों से लड़ता,
कला का महापोत लहरा रहा है

"उमा" ज्ञान की रश्मि-रहा दिखाता
सुधा का छलकता कलश ला रहा है ।
धवल चांदनी में उतर गगन से
तिमिर यामिनी को जो नहला रहा है ॥

तिमिर गर्भ से रत्न जिसने निकाले
जमी का नया राग जिसने सुनाया,
धरा की व्यथा जिसके प्राणों में छाई
जागता अलख वह मेरे द्वार आया ।
अमर साधनारत सृजन का पुजारी
जो मन प्राण अंकित किए जारहा है॥

कि जब जब कलुष ने कंपायाधरा को
कि जड़ता ने जीवन को झकझोर डाला,
प्रबल रूढ़ियों की हवा तेज भारी
सृजन से जिन्होंने हमें मोड़ डाला ।
कि झंझा को रोके, "उमा" ज्योति रथ पर
तिमिर को तिरोहित किये जा रहा है ।

इन्द्र मोहन ठाकुर
जिला जन-सम्पर्क अधिकारी
दुमका (स० प०)

२५

हे उमाशंकर

तुमे परा साहित्य—शंकर

विष-पान करिअछ केते

कहि पारिबकि मते

हे सुधा आकर

हे उमा-शंकर ।

तुमे परा सिद्धि ओ साधना

सिद्धि नमे पाइल किपरि

कहि पारिबकि मते

हे हिम आकर ।

(उड़िया कविता)

श्रीमती सरस्वती पट्टनायक

तुम मनुष्य नहीं हो ।
मनुष्य का कोई गुण
तुममें कहाँ है ?
मनुष्य वह है—
जो ईंट का जबाब
देता है पत्थर से ।
मैंने जब भी देखा है तुम्हें,
तुमने———
हर पत्थर का जबाब
फूल से दिया है
ओ उमाशंकर !
कौन तपस्या पर
किस वाटिका के फूल पर
तुमने प्रभु को रिझाया है
जिससे विभोर हो करुणामय ने तुम्हें
इतना विशाल हृदय दिया ।

×

तुम्हारे चरणों में
लगता है कोई मशीनी ताकत है,
एक यंत्र है,
जो तुम्हें चैन से बैठने नहीं देता,

तुम्हें खींचकर
ले जाता है वहां–
जहां कोई स्रष्टा या
नव अंकुर
घबराया हुआ देखता है राह
जो उसकी कला को
स्वीकृति दे।
दुलराये॥

मधुसुदन 'मधु'

आज उमाशंकर स्मृति-रम्य शुभ जन्म तिथि है प्रीतिस्निग्ध आनन्द निलीन
शुल्क-कृष्ण वृद्धि-क्षय अक्ष–चक्र में सदा हो आवर्तित महाशून्य में शशि
कभी दीप्त, कभी म्लान; पर राह भादो की स्निग्ध-शुचि शुल्क एकादशी
बिहार के चित्ताकाश में कोमल उज्जदल चिर-शान्त; क्षय-क्षतिहीन।
जगत और जीवन की आन्तरिक सत्य जो शाश्वत नित्य अनिवार,
दृश्य, स्पर्श, शब्द-गंध में आभासित चारों ओर धुप–छांह का न यारूय
विचित्र अंतरावेग से हिल्लोलिति, उच्छासित रस से अपुर्व अनुप,
अशंकित अनुसंधान-दृष्टि तुम्हारी सृष्टि में ही रूपायित है-हे साहित्यकार
जीवन-कृति में है चन्द्र-रश्मि-सी लीला, पर कवि न हो होचन्द्रमा विलासि
है केनावत पंकिल जो. है उपेक्षित, अनजान, अतींत के गर्भ में शायित–
तीखीशान मृत्यु-वान फेकते हो उनके शरपर अचूक, अन्यर्थ, ध्वान्तजिल

तुम्हारी प्रदीप प्रतिभा है अंतद्रित, शंकाहीन, चिरन्तन-सूर्य -घगिलावीं,
उमाशंकर-साहित्य में चित मेरा परिदृप्तिपा प्राणोच्छल रस-पुरस्कार
उसके विनिमय में लो, साहित्यवार ! आंतरिक आनंद-मुग्ध नमस्कार

बलभद्र मिश्र 'आदिवासी'

ढय गई थी रात दीप बुझ न सका
रजनी में रश्मि से नहाती जो
षोड़सी शृंगार में लजाती थी
दीप को आलिंगन में बद्ध किए
कानन की कामिनी शर्माती थी
सरिता दुम–बल्लरी मदहोशी में,
ज्योति में विभोर हुई जाती थी,
जल जल कर गल गल कर दीप आज
गा गा कर गीत कभी एक न सका,
जन की पुलकावली दिगंत में
व्योम के विहँगम के गीत में,
कलित कुञ्ज चंचरीक गुंजन में
मुखरित हैं गीत दीप प्रीत-धार में
निर्झर के कलकल जल धार में
वन वनान्त पूत दीप गीत में